नालंदा
युनिवर्सिटी

वार्षिक रिपोर्ट

2015-2016

विषय सूची

नालंदा के बारे में 1

आमुख 3

प्रारम्भिक टिप्पणी 3

विश्वविद्यालय शासन–विधि 7

शासकीय मंडल के सदस्य 8

कार्यकारिणी समिति 15

शासकीय समिति 15

अध्ययन विद्यालय एवं संकाय 16

मुख्य अधिकारी तथा प्रशासनिक स्टाफ 17

शैक्षिक गतिविधियाँ 21

विशिष्ट व्याख्यान शृंखला 22

नालंदा विशेष व्याख्यान शृंखला 31

नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान शृंखला 32

आंत्रे नुस व्याख्यान शृंखला 33

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय 37

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण संकाय (SEES) 38

ऐतिहासिक अध्ययन संकाय (SHS) 48

घटनाक्रम रिपोर्ट 61

श्री जार्ज यो का कुलाधिपति के रूप में पदभार ग्रहण 62

शासकीय मंडल द्वारा बौद्ध अध्ययन, दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म अध्ययन विद्यालय तथा एक कार्यकारिणी समिति के गठन को मंजूरी 62

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि देने के लिए परिसर के भीतर एक शोक सभा का आयोजन 64

कुलाधिपति, श्री जार्ज यो ने थाई की राजकुमारी एचआरएच महाचक्री सिरींधॉर्न से मुलाकात की तथा उन्हें विश्वविद्यालय की प्रगति से अवगत कराया 65

नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के निर्माण हेतु सिंगापुर आर्किटेक्ट के साथ त्रिपक्षीय समझौता हस्ताक्षर 65

नालंदा विश्वविद्यालय के साथ मजबूत संबंध के निर्माण हेतु इंडोनेशिया के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री के साथ बैठक 66

कुलाधिपति जॉर्ज यो के दो दिवसीय राजगीर भ्रमण पर उनकी नालंदा विश्वविद्यालय कम्युनिटी से मुलाकात 67

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री जॉर्ज यो ने यूएन महासचिव बानकी–मून से मुलाकात की 68

नालंदा विश्वविद्यालय ने डॉ. राजेन्द्र तथा श्रीमती उर्सूला जोशी से एक मिलियन अमरीकी डालर का वृत्तिदान प्राप्त किया 68

पुर्तगाल और भारत के बीच नालंदा विश्वविद्यालय के लिए समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर 69

नालंदा विश्वविद्यालय का पेकिंग विश्वविद्यालय के साथ मजबूत संबंध बनाने हेतु समझौता 70

नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) ने राजगीर में हैरिटेज वॉक के आयोजन हेतु बिहार विरासत विकास समिति से सहयोग लिया 70

रॉयल सोसायटी ऑफ थाइलैंड से 27 सदस्यीय प्रतिनिधि ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर का भ्रमण किया 71

यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय तथा राजेन्द्र एग्रीक्ल्चर यूनवर्सिटी (आरएयू) के छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया 72

कुलाधिपति जार्ज यो के साथ सिंगापुर से नालंदा विश्वविद्यालय के समर्थक तथा शुभचिंतकों ने राजगीर की तीन दिवसीय यात्रा की 72

विश्वविद्यालय द्वारा शीघ्र ही भाषा और साहित्य विद्यालय तथा जन स्वास्थ्य विद्यालय को शुरू किया जायेगा 74

नालंदा विश्वविद्यालय ने दिल्ली संवाद VIII में प्रतिभागिता की 74

नालंदा विश्वविद्यालय का इंडिया टूडे कॉन्क्लेव में प्रतिनिधित्व 75

कम्युनिटी समाचार 79

वर्ष 2017 की कक्षा में प्रवेश पाने वाले छात्रों के लिए नालंदा विश्वविद्यालय में छात्र उन्मुखीकरण (ओरियेन्टेशन) कार्यक्रम का आयोजन 80

विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन 81

नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा पहले फ्रेशर नाइट आराब्धी 15 का आयोजन 82

नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दो–दिवसीय स्थापना दिवस समारोह का आयोजन 82

विश्वविद्यालय कम्युनिटी द्वारा पारम्परिक उत्सव मनाए गए 84

छात्र के क्लब तथा सोसाइटी की स्थापना 85

खेलकूद सप्ताह तथा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन 86

भारतीय गणतंत्र दिवस का आयोजन : छात्र द्वय क्ले तथा अमन द्वारा ध्वजारोहण 86

एन.यू कैरियर रिसोर्स सेल से वार्तालाप 87

नालंदा के छात्र को दलाईलामा छात्रवृत्ति 2016–17 के लिए चुना गया 88

परिसर तथा निर्माण कार्य 91

विश्वविद्यालय के आंतरिक परिसर में पुर्नर्निमाण तथा अतिरिक्त स्थान का सृजन 92

स्थायी परिसर के विकास की अद्यतन सूचना 92

वित्त एवं निधिकरण 98

नालंदा
युनिवर्सिटी

वार्षिक रिपोर्ट
2015-2016

नालंदा के बारे में

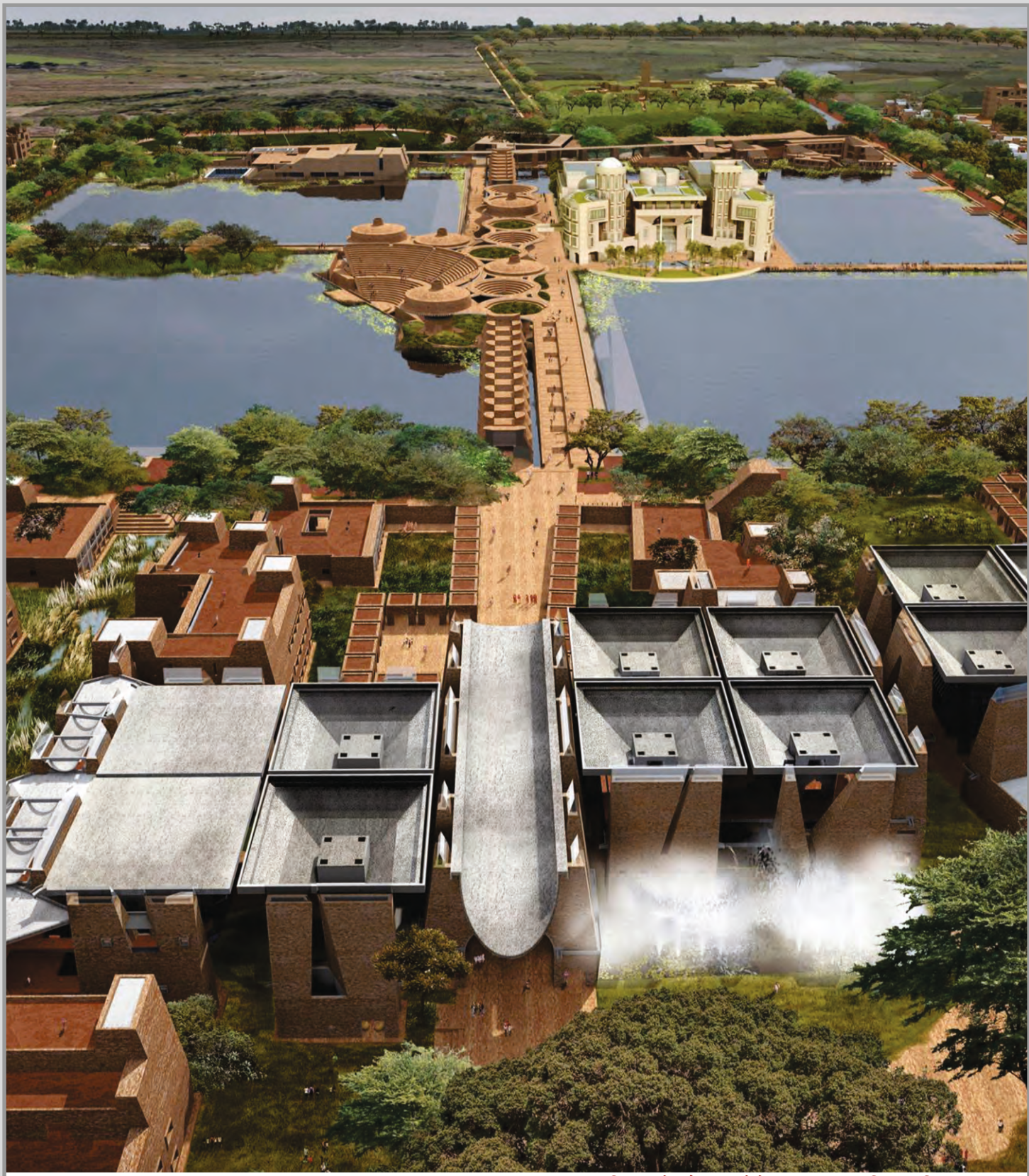

भविष्य में तैयार होने वाला प्रस्तावित परिसर

नालंदा विश्वविद्यालय भारत के बिहार राज्य के राजगीर शहर में स्थित एक स्नातकोत्तर, अनुसंधानोन्मुख पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में प्रतिभागी राष्ट्रों द्वारा समर्थित एक अतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना 25 नवम्बर 2010 को भारतीय संसद के एक विशेष अधिनियम द्वारा की गयी थी तथा इसे 'राष्ट्रीय महत्व का एक संस्थान' के रूप में निर्दिष्ट किया गया।

वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय तथा पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय तथा बौद्ध अध्ययन विद्यालय में शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसने अपने पहले बैच के छात्रों को वर्ष 2014 में प्रवेश प्रदान किया।

नालंदा विश्वविद्यालय सभी मामलों में संवैधानिक अधिनियमों एवं अधीनस्थ विधानों, जो संविधियों, अध्यादेशों और विनियमों के रूप में हैं, से शासित होगा। इसमें संवैधानिक अधिकारियों के उत्तरदायित्व एवं शक्तियों, कामकाज तथा अन्य मामलों की व्यवस्था की गई है।

नालंदा विश्वविद्यालय विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नियंत्रित होगा।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति विश्वविद्यालय के विजिटर हैं।

कुलाधिपति विश्वविद्यालय के प्रमुख हैं तथा विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष भी हैं। कुलाधिपति द्वारा विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल की बैंठकों एवं सभाओं की अध्यक्षता की जाती है।

विश्वविद्यालय का प्रबंधन मंडल विश्वविद्यालय की सभी नीति, निर्देश तथा अपने प्रबंधन के प्रति उत्तरदायी होगा।

विजिटर : भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी

विश्वविद्यालय के इस वार्षिक रिपोर्ट में, 2015–16 (01 अप्रैल 2015 से 31 मार्च 2016) के दौरान की महत्वपूर्ण घटनाएं एवं घोषणाएं तथा इस वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय से संबंधित सभी सूचनाएं उपलब्ध हैं।

आमुख

मैं सर्वप्रथम नालंदा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को ''नालंदा शैली'' को बनाये रखने तथा उसके प्रति सत्त प्रयासरत रहने के लिए बधाई देती हूँ। वर्ष 2015–16 हम सभी के लिए एक कड़वा मीठा वर्ष रहा है। यद्यपि इस वर्ष विश्वविद्यालय विकास की नई ऊँचाइयों को छूने में सफल रहा, तथापि इस वर्ष एक अत्यंत दुःखद समाचार ने हम सभी को उदासीनता से ग्रस्त कर दिया। हमारे प्रिय पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के देहान्त की सूचना हमारे दुःखों को शब्दों में प्रकट करने में असफल थी। यह उनका ही स्वप्न था कि इस प्राचीन ज्ञान के स्थल का पुनरुद्धार किया जाए तथा इसे पुनः ज्ञान के भंडार के रूप में परिवर्तित किया जाए। उनके न होने से बने रिक्त स्थान को कभी भरा नहीं जा सकता है तथा हमें उनके उत्साहपूर्ण समर्थन एवं दिशा निर्देश की कमी हमेशा खलेगी। जाहिर है अब हमारी नालंदा के लक्ष्य को जीवन्त बनाये रखने तथा इसकी सफलता के प्रति कार्य करने की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है।

वर्ष 2015–16 में विश्वविद्यालय ने पूरे भारत तथा दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों जैसे–लाओस म्यांमार, तथा अन्य दूसरे देशों से 50 नये छात्रों को प्रवेश प्रदान किया है। कुछ नये प्राध्यापक तथा प्रशासनिक स्टाफ भी नालंदा परिवार से जुड़े हैं।

इस वर्ष में विभिन्न घोषणाएं की गईं जिनमें सबसे महत्वपूर्ण घोषणा यह है कि श्री जार्ज यो ने संस्थापक कुलाधिपति प्रो. अमर्त्य सेन से कुलाधिपति का कार्यभार ग्रहण किया। मैं यह आशा करती हूँ कि हम सभी श्री जार्ज यो के प्रबंधन कौशल के व्यापक अनुभव से अत्यन्त लाभान्वित होंगे। कुलाधिपति का पदभार संभालने के पश्चात् श्री जार्ज ने विश्वविद्यालय का दो बार भ्रमण किया तथा विश्वविद्यालय परिवार के साथ मुलाकात की तथा उन्हें संबोधित किया।

मैं अत्यंत हर्ष के साथ यह भी घोषणा करना चाहती हूँ कि आगामी वर्ष से विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन, दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म संकाय भी संचालित किया जायेगा।

गौतमबुद्ध ने कहा था कि एक दीपक से हजारों दीपक जलाए जा सकते हैं और खुशियां बांटने से कभी कम नहीं होती। इस दर्शन को ध्यान में रखते हुए एक उदार हृदय वाले युगल डॉ. राजेन्द्र कुमार जोशी एवं श्रीमती उर्सूला जोशी ने ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय में एक प्रोफेसोरियल चेयर पद के संपोषन हेतु $1 मिलियन की राशि का दान दिया। मैं नालंदा परिवार की ओर से इस युगल का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

पुस्तकालय ज्ञान, बौद्धिकता तथा सूचना का भंडार होती है, एक ऐसा ही पुस्तकालय प्राचीन नालंदा का पुस्तकालय था। यही समय है जब हम लुप्त खजाने को पुनः लायेंगे तथा एक पुननिर्मित पुस्तकालय– ज्ञान के निधि का सृजन करेंगे। सिंगापुर से दानकर्ताओं के एक समूह ने पुस्तकालय के संरचना व निर्माण के लिए $10 मिलियन राशि प्रदान करने का वादा किया। मैं यह आशा करती हूँ कि नालंदा के लोग नजदीक भविष्य में एक अनुकरणीय पुस्तकालय का अनुभव ग्रहण करेंगें।

इस वर्ष अनेक निर्णयात्मक मीटिंग के दौरान कुछ महान विभूतियों के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उत्साहवर्धक पारस्परिक वार्तालाप हुई, जिनके हमारे ही समान वैश्विक लक्ष्य थे।

जैसा कि चीनी दार्शनिक लाओ–सू ने कहा था कि हजारों मील की यात्रा की शुरुआत भी एक कदम से ही शुरू होती है। हमने भी ज्ञान–प्रसार के लिए एक यात्रा वैश्विक दृष्टि पर आधृत ज्ञान की एक नई प्रणाली की शुरुआत की है, इस यात्रा को पूरा करने के लिए हमें अभी मिलों तक चलना है।

डॉ. गोपा सभरवाल
कुलपति

प्रारम्भिक टिप्पणी

विश्वविद्यालय के लिए वर्ष 2015–16 कई मायनों में महत्वपूर्ण था। विश्वविद्यालय कम्युनिटी की संख्या में वृद्धि हुई, इसमें छात्रों की संख्या बढ़कर 50 हो गई और कुछ नए प्राध्यापक तथा प्रशासनिक स्टाफ भी इस वर्ष नालंदा समूह से जुड़े।

विश्वविद्यालय के दो विद्यालयों में स्नातकोत्तर कोर्स में पूरे भारत से चौवालीस छात्र तथा लाओस म्यांमार और भूटान से छह छात्रों ने दाखिला लिया।

इस वार्षिक रिपोर्ट में विश्वविद्यालय के विकास संबंधित सभी महत्वपूर्ण एवं प्रमुख अवयवो को समाहित किया है।

इस रिपोर्ट को सूचनापरक बनाने तथा इसका विस्तृत चित्र प्रस्तुत करने के लिए इसे निम्नांकित भागों में बांटा गया हैः– विश्वविद्यालय प्रशासन, शैक्षणिक गतिविधियाँ, घटनाक्रम रिपोर्ट, कम्युनिटी समाचार, परिसर तथा निर्माण कार्य तथा वित्त एवं निधिकरण।

विश्वविद्यालय शासन खण्ड के अन्तर्गत सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को सूचीकृत किया गया है, जिन्होंने नालंदा के उद्देश्यों को मूर्त रूप प्रदान करने में एक उत्प्रेरक बल का कार्य किया है, इसके अतंर्गत शासकीय मंडल के सदस्यों तथा विभिन्न समिति के सदस्यों को शामिल किया।

घटना खण्ड के अन्तर्गत विश्वविद्यालय से संबंधित सभी घटनाओं तथा महत्वपूर्ण घोषणाओं पर प्रकाश डाला गया है। कुछ महत्वपूर्ण विदुंओं जिसके अन्तर्गत श्री जार्ज यो, सिंगापुर के पूर्व विदेश मंत्री की कुलाधिपति के रूप में नियुक्ति और तत्पश्चात् सितम्बर और पुनः जनवरी में उनका राजगीर भ्रमण जहां उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्र, संकाय सदस्य और स्टाफ से मुलाकात पर फोकस किया। श्री यो ने जनवरी में दान देने वाले एक समूह, समर्थक तथा सिंगापुर और हांगकांग से विश्वविद्यालय के शुभचिंतकों के साथ भी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इस समूह के अन्तर्गत दान देने वाले व्यक्ति शामिल थे जिन्होंने सिंगापुर डालर 10 मिलियन के उपहार संकल्प के रूप में अपना योगदान दिया, जिससे नालंदा के मुख्य परिसर साइट पर पुस्तकालय के डिजाइन, निर्माण और उसकी सुपुर्दगी का कार्य किया जायेगा।

अन्य मुख्य विदुंओं के अन्तर्गत शैक्षिक वर्ष 2016–17 में बौद्ध अध्ययन केन्द्र तथा तुलनात्मक धर्म को शुरू किए जाने के निर्णय को रेखांकित किया गया है। विश्वविद्यालय ने डॉ. राजेन्द्र कुमार जोशी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्सूला जोशी से पहली व्यक्तिगत दान धनराशि के रूप $1 मिलियन अमरीकी डालर की निधि प्राप्त की।

'kf{kd xfrfof/k खंड के अन्तर्गत दो वर्तमान विद्यालय–ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय तथा पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यानों एवं सम्मेलनों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें सभी क्षेत्रीय भ्रमण पर भी प्रकाश डाला गया है जो विश्वविद्यालय के दोनों पाठ्यपुस्तकों की सूची पर आधारित प्रायोगिक ज्ञान का एक महत्वपूर्ण अवयव है। यहां हमारे संकाय सदस्यों के शैक्षिक प्रयासों को विस्तार से दर्शाया गया है तथा इसमें नालंदा पुस्तकालय पर अद्यतन सूचना भी प्रदान की गयी है।

dE;fuVh lekpkj खण्ड के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के सभी सामाजिक कार्यक्रमों यथा–त्योहारों और क्लब की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। चूंकि नालंदा पूर्णरूपेण आवासीय विश्वविद्यालय है अतः कम्युनिटी गतिविधि तथा सामाजिक संवाद विश्वविद्यालय की गतिविधि का महत्वपूर्ण अंग है।

ifjlj ,o fofuek.k [k.M के अन्तर्गत भवन तथा भूमि से सम्बद्ध विवरण प्रदर्शित किए गए हैं तथा वित्त विभाग द्वारा विश्वविद्यालय का संक्षिप्त एवं सटीक लेखा–प्रस्तुत किया गया है।

नालंदा के लक्ष्य पर विश्वविद्यालय निरंतर केन्द्रित रहता है। हम यह आशा करते हैं कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नालंदा जैसे प्राचीन उत्कृष्ट केन्द्र के जीर्णोद्धार संबंधी स्वप्न को साकार करने के लिए उनके द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने स्थापना समूह के पूरे समर्पण के साथ इसके लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे। हम यह आशा करते हैं कि यह रिपोर्ट आप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। कृपया किसी अन्य अपेक्षित सूचना के लिए हमसे सम्पर्क करने की कृपा करें।

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ नालंदा प्रबंधन मंडल के सदस्य

विश्वविद्यालय शासन – विधि

विश्वविद्यालय शासन–विधि बहुस्तरीय है जहां विभिन्न हितधारकों जैसे–शासकीय बोर्ड, कार्यकारी समिति, शैक्षिक परिषद, वित्तीय समिति, भवन एवं कार्य समिति, संकाय तथा प्रशासनिक स्टाफ द्वारा व्यवहारिक रणनीतिक तथा परिचालन स्तर पर निर्णय लिए जाते हैं।

शासकीय मंडल

विश्वविद्यालय शासकीय मंडल नीति–निर्माण संबंधी सभी निर्णयों के प्रति उत्तरदायी होता है जिससे विश्वविद्यालय अपने लक्ष्य प्रप्ति के पथ पर अग्रसर हो सके। यह मंडल एक वर्ष में दो बार नीति–निर्णय संबंधी मामलों पर विचार–विमर्श के लिए बैठक आयोजित करता है।

शासकीय मंडल के सदस्यों का संक्षिप्त विवरणः–

श्री जार्ज यो
कुलाधिपति

श्री जार्ज यो विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष तथा अंतर्राष्ट्रीय परामर्श पैनल के अध्यक्ष हैं। श्री यो हांगकांग द्वारा सूचीकृत कैरी लॉजिस्टिक नेटवर्क के अध्यक्ष तथा कैरी ग्रुप के उपाध्यक्ष हैं। वे कैथोलिक चर्च होली सी (Holy See) के आर्थिक प्रशासनिक संरचना के संदर्भ के लिए गठित 8 सदस्यीय पॉन्टीफिकल कमीशन के सदस्य थे, तथा वर्तमान में अर्थव्यवस्था के लिए गठित नये वैटिकन काउंसिल के सदस्य हैं। वे वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के स्थापना बोर्ड निकोलस बेर्गग्रुवेन इंस्टि्टयूट के 21वीं शताब्दी काउंसिल तथा आईईएसई (IESE) बिजनेस स्कूल के अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श बोर्ड के भी सदस्य हैं। उन्होंने सिंगापुर सरकार में सूचना एवं कला मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, व्यापार एवं उद्योग मंत्री तथा विदेश मंत्री के रूप में लगभग 23 वर्षो तक कार्य किया है। उन्हें भारत सरकार द्वारा वर्ष 2002 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

प्रो. अमर्त्य सेन
संस्थापक कुलाधिपति

प्रोफेसर अमर्त्य सेन नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलाधिपति हैं। वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में थॉमस डब्ल्यू. लेमाउंट अर्थशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं। वे वर्ष 2004 तक ट्रीनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज के मास्टर रह चुके हैं। वे अमेरिकन इकोनॉमिक एसोशिएयन, दि इंडियन इकोनॉमिक एसोशिएशन तथा इंटरनेशनल इकोनॉमिक एसोशिएशन और इकोनॉमिक सोसायटी के अध्यक्ष रह चुके हैं।

उनके व्यापक अनुसंधान का विस्तार अर्थव्यवस्था, दर्शन तथा निर्णय सिद्धांत, सामाजिक विकल्प सिद्धांत, कल्याणकारी अर्थव्यवस्था, मापन सिद्धांत, विकसित अर्थव्यवस्था, जन स्वास्थ्य, लिंग अध्ययन तथा नैतिक एवं राजनैतिक दर्शन तक फैला हुआ है। उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है जिसके अन्तर्गत–भारत रत्न (भारत), कॉमान्डियर डी ला लिजिऑन दि ऑनियर (फ्रांस), दि नैशनल ह्युमैनिटीज मेडल (यूएसए); आर्डम डो मेरिटो साइंटिफिको (ब्राजील); एजटेक ईगल (मैक्सिको); ऑनरैरी कम्पैनियन ऑफ ऑनर (यू.के.) तथा अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार सम्मिलित है।

श्री एन. के. सिंह

श्री एन. के. सिंह एक राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री तथा पूर्व वरीय प्रशासनिक अधिकारी थे। अभी हाल ही में कुछ समय पूर्व तक वे बिहार से राज्यसभा के सदस्य थे। वे भारत सरकार में एक नौकरशाह थे तथा उन्होंने भारत के व्यय और राजस्व सचिव के पद पर कार्य किया। उन्होंने प्रधान मंत्री के सचिव के रूप में भी कार्य किया तथा वे राष्ट्रीय योजना आयोग के सदस्य तथा बिहार राज्य योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

प्रो. लार्ड मेघनाद देसाई

प्रो. लार्ड मेघांद देसाई वतर्मान में ऑफिशियल मोनेटरी एंड फाइनेन्सियल इन्स्टिट्यूशन फोरम (OMFIF) के एडवाईजरी बोर्ड के चेयरमैन हैं। वे लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में एमेरिटस प्रोफेसर हैं। वे अप्रैल 1991 में सिटी ऑफ वेस्टमिंस्टर में सेंट क्लेमेंट डेन्स के बैरॉन देसाई लाईफ पीयर बनाया गया। लार्ड देसाई 1990 में एलएसई में डेवलपमेंट स्टडीज इंस्टिट्यूट (DESTIN) के संस्थापक सदस्य रहे। उन्होंने अर्थमिति, वृहद अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र तथा कई वर्षो तक विकसित होती अर्थव्यवस्था पर अध्यापन कार्य किए। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

प्रोफेसर प्रपोद अस्सावीरूलहाकर्न

प्रोफेसर प्रपोद अस्सावीरूलहाकर्न चुलालांगकॉर्न, विश्वविद्यालय, बैंकॉक में फैकल्टी ऑफ आर्ट्स के पूर्व डीन तथा डिपार्टमेन्ट ऑफ ईस्टर्न लैंग्वेज के प्रमुख रह चुके हैं। वे बौद्धधर्म और संस्कृत के विशेषज्ञ हैं, उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले से बौद्ध अध्ययन में पीएचडी प्राप्त की है। उनकी अनुसंधान अभिरूचि शब्द व्युत्पत्ति, भाषा तथा समाज, पालि–संस्कृत साहित्य तथा धार्मिक वाचन तक फैली है।

प्रोफेसर वांग गुंगवू

प्रोफेसर वांग गुंगवू नैशनल यूनवर्सिटी ऑफ सिंगापुर के यूनवर्सिटी प्रोफेसर तथा आस्ट्रेलियन नेशनल युनवर्सिटी के एमेरिटस प्रोफेसर हैं। वे एनयूएस (NUS) में ईस्ट एशियन इंस्टिट्यूट तथा ली कुवान यियु स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी के अध्यक्ष हैं। वे सिंगापुर में आईएसईएएस (ISEAS)–युसुफ ईशॉक इंस्टिट्यूट के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के अध्यक्ष हैं। प्रोफेसर वांग अमेरिकन एकैडमी ऑफ आर्ट्स एंड साइंस के विदेशी मानद सदस्य एवं चाइनीज एकैडमी ऑफ सोशल साइंस के मानद सदस्य हैं। वे कमॉन्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर (CBE) भी हैं। वे 1986 से 1995 तक यूनवर्सिटी ऑफ हांगकांग के कुलपति भी रह चुके हैं।

प्रोफेसर सुसुमु नाकानिशी

प्रोफेसर सुसुमु नाकानिशी कोशीनोकूनी म्युजियम ऑफ लिटरेचर के महानिदेशक तथा एसोशिऐशन फॉर दि स्टडी ऑफ जैपनीज लैंग्वेज एंड लिटरेचर के अध्यक्ष हैं तथा जापानोलॉजी फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं। वे इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर फॉर जापानीज स्टडीज के एमेरिटस प्रोफेसर (पूर्व डीन) तथा क्योटो सिटी युनवर्सिटी ऑफ आर्ट्स के एमेरिटस प्रोफेसर (पूर्व अध्यक्ष) भी रह चुके हैं। वे जापानी विज्ञान परिषद् के सदस्य भी थे। उनका अनुसंधान तुलनात्मक साहित्य खासकर 'दि मान योशु' ग्रन्थ है। उन्होंने जापानी लेखन पर लगभग 100 से अधिक पुस्तकें लिखीं है जिसके अन्तर्गत 'दि कम्प्लीट वर्क्स ऑफ नाकानिशी सुसुमु' भी शामिल है, जिसमें 36 खण्ड हैं। उन्हें 1970 में जापान एकेडेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा 2013 में उन्होंने ऑर्डर ऑफ कल्चर प्राप्त किया।

प्रोफेसर सुगत बोस

प्रोफेसर सुगत बोस हार्वर्ड यूनवर्सिटी में ओसनिक हिस्ट्री एंड अफेयर्स के गार्डिनर प्रोफेसर हैं। उन्होंने हार्वर्ड में इतिहास के स्नातकोत्तर अध्ययन के निदेशक तथा हार्वर्ड साउथ एशिया इन्स्टीच्यूट के संस्थापक निदेशक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की है। उन्होंने प्रेजीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की है। बोस की विभिन्न पुस्तकों के अन्तर्गत–अ हन्ड्रेड हॉरीजनः दि इंडियन ओसन इन दि ऐज ऑफ ग्लोबल एम्पायर (कैम्ब्रिज एमएः हार्वर्ड, यूनवर्सिटी प्रेस, 2006), मार्डन साउथ एशियाः हिस्ट्री कल्चर, पॉलिटिकल इकोनॉमी सह–लेखक आएशा जलाल (थर्ड एडिशन, लंदन न्यूयॉर्क : राउटलेज, 2011) तथा हिज मैजेस्टीज अपोनेन्ट : सुभास चन्द्र बोस एंड इंडियाज स्ट्रगल अगेनस्ट एम्पायर (कैम्ब्रिज, एमएः दि बेल्कनैप प्रेस ऑफ हार्वर्ड यूनवर्सिटी प्रेस एंड न्यू देलही : ऐलेन लेन पेंग्युईन, 2011)। उपनिवेश तथा उपनिवेश के पश्चात् राजनैतिक अर्थव्यवस्था, ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के बीच संबंध, परिवहन के अंतर क्षेत्रीय स्थल, भारतीय समुद्र के आर–पार व्यापार एवं संकल्पना और भारत की नैतिक चर्चा, राजनैतिक दर्शन तथा आर्थिक विचार को समझने में उनके विद्वतापूर्ण लेखन की अहम भूमिका है। वे वर्तमान में भारतीय संसद की स्थायी समिति के सदस्य भी हैं।

प्रोफेसर वांग बैंगवेई

प्रोफेसर वांग बैंगवेई पेंकिग यूनवर्सिटी में इंस्टिट्यूट ऑफ ओरियंटल स्टडीज एंड ओरियंटल लिटरेचर रिसर्च सेंटर के प्रोफेसर एवं निदेशक हैं। वे पेकिंग यूनवर्सिटी में भारत अनुसंधान केन्द्र के निदेशक भी हैं। उनके शोध के अन्तर्गत बौद्ध साहित्य का शास्त्रीय अध्ययन (संस्कृत तथा उसकी चीनी अनुवाद), बौद्ध इतिहास (चीन और भारत दोनों का), चीन–भारत के बीच सांस्कृतिक संवाद, खासकर उन विषयों पर जो बौद्ध, चीनी बौद्ध तीर्थस्थल के विवरण तथा फाहियान जुंजांग तथा याईजिंग विशेषकर भारत के ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्त्रोतों से संबंधित हैं, शामिल है।

प्रोफेसर तानसेन सेन

प्रोफेसर तानसेन सेन बरुच कालेज, दि सिटी युनवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क में इतिहास के प्रोफेसर हैं। वर्तमान में वे ह्युमैनिटीज एंड ग्लोबल चाइना के विजिटिंग प्रोफेसर तथा एनवाईयू–शंघाई, चीन में सेंटर फार ग्लोबल एशिया के निदेशक हैं। प्रोफेसर सेन ने पेकिंग विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय से पीएचडी प्राप्त की। वे एशियाई इतिहास और धर्म के विशेषज्ञ हैं तथा उनकी भारत–चीन के बीच पारस्परिक संबंध, भारतीय समुद्री व्यापार, बौद्धवाद, तथा सिल्क रोड आर्कीलॉजी में विशेष शोध अभिरूचि है।

श्री अनिल वाधवा

श्री अनिल वाधवा 6 जनवरी 2014 से 3 मार्च 2016 तक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में सचिव (पूर्व) थे। श्री वाधवा थाईलैण्ड, पोलैण्ड तथा ओमान सल्तनत में भारत के राजदूत के रूप में कार्य करने के अतिरिक्त हेग में प्रोविजनल तकनीकी सचिवालय तदन्तर तकनीकी सचिवालय, ऑर्गानाइजेशन फॉर दि प्रोहाईबिशन ऑफ कैमिकल वेपन (OPCW) में प्रतिनियुक्ति पर निदेशक/संयुक्त सचिव के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने हांगकांग बेजिंग में भारत के दूतावास तथा जेनेवा में भारत के स्थायी मिशन में विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान की है तथा निःशस्त्रीकरण मामलों के लिए एक दशक से अधिक का समय बिताया है। वे धारा प्रवाह अग्रेंजी, हिन्दी तथा चीनी भाषा बोलते हैं। उन्होंने इतिहास में (चीनी इतिहास, मध्य कालीन भारतीय इतिहास एवं स्थापत्य कला में विशेषज्ञता) में स्नात्तकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है।

श्रीमती प्रीती सरन

श्रीमती प्रीती सरन ने 4 मार्च 2014 को विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। उन्होंने वियतनाम में भारत के राजदूत के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की तथा इससे पूर्व उन्होंने टोरंटो तथा कनाडा में भारतीय कौंसिल जनरल संयुक्त सचिव सार्क (साउथ एशियन एसोशिएशन फॉर रीजनल कोपरेशन) तथा संयुक्त सचिव उत्तरी प्रभाग के रूप में कार्य किया। उन्होंने जेनेवा, कैरो, ढाका तथा मॉस्को में भारतीय मिशन में विभिन्न पदों पर कार्य किया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अग्रेंजी साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है।

डॉ. गोपा सभरवाल

डॉ. गोपा सभरवाल नालंदा विश्वविद्यालय की संस्थापक कुलपति हैं। नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पदभार प्रहण करने के पूर्व वे समाजशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में भारत के सबसे स्वतंत्र सिद्धांत के लिए विख्यात लेडी श्री राम महाविद्यालय (LSR) से सम्बद्ध थी, उन्होंने 1993 में LSR में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की थी। उनके व्यापक शोध ग्रन्थों ने शहरी भारत की जाति समूह, विजुअल एन्थ्रपोलॉजी, स्वतंत्रता तथा समाज के इतिहास पर प्रकाश डाला है। उनकी पुस्तकों के अन्तर्गत–इथिनिसिटी एंड क्लास : सोशल डिवीजन इन ऐन इंडियन सिटी (न्यू देलही, ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस 2006); दि इंडियन मिलैनियम–A.D.1000 जव A.D.2000, (पेंगविन इंडिया 2007) तथा इंडिया सिन्स 1947 : दि इन्डिपेन्डन्ट ईयर्स (पेंगविन इंडिया 2007)। वे 2006 में आवासीय चाथम कॉलेज फॉर वूमेन, पिट्स वर्ग में एक शोधार्थी रही थी जो यूएस में प्राचीन महिला विद्यालयों में से एक है।

कार्यकारी समिति

1. d|ykf/kifr] ukyn|k fo'ofo|ky; & v/;{k
2. lfpo ¼io½ fon'k e=ky; & lnL;
3. d|ykf/kifr d nk ukferh & lnL;
4. d|yifr] ukyn|k fo'ofo|ky; & lnL; lfpo

05 जुलाई, 2015 को नालंदा विश्वविद्यालय के शासकीय मंडल की 12वीं बैठक

शासकीय समिति

शैक्षिक परिषद

1. कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय : अध्यक्ष
2. डीन (शैक्षिक योजना), नालंदा विश्वविद्यालय : सदस्य
3. नालंदा विश्वविद्यालय के सभी विद्यालयों के डीन : सदस्य
4. नालंदा विश्वविद्यालय के प्रत्येक विद्यालय से दो संकाय : सदस्य
5. पुस्तकालयाध्यक्ष, नालंदा विश्वविद्यालय : सदस्य
6. उद्योग से एक विशेषज्ञ अथवा एक व्यवसायी : सदस्य
7. शैक्षिक क्षेत्र से दो प्रख्यात विद्वान : सदस्य
8. रजिस्ट्रार, नालंदा विश्वविद्यालय : सदस्य सचिव

वित्त समिति

1. कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय : अध्यक्ष
2. विदेश मंत्रालय (एमईए) के नामिति जेएस (दक्षिण) : सदस्य
3. वित्त मंत्रालय (एमएचआरडी) के नामिती जेएस एफए : सदस्य
4. नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा रोटेशन पर नामित स्कूल ऑफ स्टडी के एक डीन : सदस्य
5. श्रीमती जानकी कठपालिया, कोषाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय : सदस्य
6. श्रीमती दीपाली खन्ना, सदस्य सचिव आईजीएनसीए : सदस्य
7. वित्त पदाधिकारी नालंदा विश्वविद्यालय : सदस्य सचिव

भवन एवं कार्य समिति

1. कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय : अध्यक्ष
2. डीन (शैक्षिक योजना) नालंदा विश्वविद्यालय : सदस्य
3. एएस एंड एफए, एमईए : सदस्य
4. संयुक्त सचिव (दक्षिण) विदेश मंत्रालय : सदस्य
5. श्री सुधीर कुमार, मुख्यपरियोजना प्रबंधक, आईआईटी, पटना : सदस्य
6. श्री ए. के. सिन्हा, पूर्व एडीजी, सीपीडब्ल्यूडी (सैट्रल पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) : सदस्य
7. श्री ए.आर. रामानाथन, प्रोफेशनल एडवाइजर एनयू : सदस्य
8. वित्त अधिकारी, एनयू : सदस्य
9. विश्वविद्यालय अभियंता, एनयू : सदस्य
10. रजिस्टार, एनयू : सदस्य

अध्ययन विद्यालय (विभाग) एवं संकाय

विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015–2016 के लिए निम्नांकित दो विद्यालयों में स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान किया :–

1. पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय
2. ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन (SEES)

यह विद्यालय प्राकृतिक वातावरण एवं मानव गतिविधियों के पारस्परिक संबंधों पर शिक्षा एवं अनुसंधान के प्रचार हेतु प्रकृति विज्ञान से लेकर सामाजिक विज्ञान तक व्यापक पैमाने पर शैक्षिक लक्ष्यों को सम्मिलित करता है।

यह विद्यालय संभावित व्यापक अभिरूचि क्षेत्रों के अतिरिक्त वर्तमान में निम्नांकित क्षेत्रों पर फोकस कर रहा है : ये क्षेत्र है – मानव पास्थितिकी, जल संसाधन, आपदा प्रबंधन, भोजन एवं कृषि, मौसम परिवर्तन एवं उर्जा अध्ययन।

एसईईएस के संकाय सदस्य

1. बी. मोहन कुमार, प्रोफेसर एवं कार्यकारी डीन
2. सोमनाथ बंदोपाध्याय, एसोसिएट प्रोफेसर
3. पी. लक्ष्मणन, एसोसिएट प्रोफेसर
4. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
5. अभिराम शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर
6. सायन भट्टाचार्य, असिस्टेंट प्रोफेसर

ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय (SHS)

ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय (एसएचएस) संकाय सदस्यों एवं स्नातक छात्रों का एक क्रियाशील समुदाय है। एसएचएस मूलभूत प्रश्नों के बारे में एक सुदृढ़ अन्वेषण के कार्यक्रम से सम्बद्ध है जो एशिया एवं उससे इतर ऐतिहासिक अनुभवों को संबोधित करता है। विद्यालय का फोकस क्षेत्र प्राचीन नालंदा की विरासत तथा एशिया एवं उससे इतर के अनेक देशों के साथ ऐतिहासिक सम्पर्क से अभिप्रेरणा ग्रहण करता है।

एसएचएस का फोकस क्षेत्र–एशियाई अन्तर–सम्पर्क, पुरातत्व विद्या, कला इतिहास तथा आर्थिक इतिहास है। इसके अतिरिक्त विद्यालय का लक्ष्य गैर–एशियाई तथा वैश्विक इतिहास पर ध्यानाकर्षण करना है।

एसएचएस के संकाय सदस्य

1. आदित्य मलिक, प्रोफेसर एवं डीन
2. पंकज मोहन, प्रोफेसर
3. सैमुअल राइट, असिस्टेंट प्रोफेसर
4. काश्शाफ घानी, असिस्टेंट प्रोफेसर
5. श्रमण मुखर्जी, असिस्टेंट प्रोफेसर
6. मुरारी झा, असिस्टेंट प्रोफेसर
7. रानू राय चौधुरी, असिस्टेंट प्रोफेसर

अतिथि संकाय (SHS)

1. अभिषेक एस. अमर, अतिथि असोसिएट प्रोफेसर
2. एन्ड्रिया एक्री, अतिथि असिस्टेंट प्रोफेसर
3. क्रिस्टिन इन विआल कैयजर, अतिथि, असिस्टेंट प्रोफेसर

मुख्य अधिकारी एवं प्रशासनिक स्टाफ

वित्त पदाधिकारी
श्री के. चन्द्रमूर्ति

विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. निहार कान्त पात्रा

निदेशक (संचार)
श्रीमती स्मिता पोलाइट

प्रबंधक (दाखिला)
श्री सौरभ चौधरी

सहायक रजिस्टार (शैक्षिक)
डॉ. बी अम्बिका प्रसाद पाणी

सहायक वित्त अधिकारी
श्री शिशिर जैन

सहायक वित्त अधिकारी
श्री सुजीत कुमार ठाकुर

सहायक अभियंता (सिविल)
श्री जॉय चौधरी

सहायक अभियंता (इलेक्ट्रिक)
श्री मनोज कुमार

सहायक रजिस्ट्रार (क्रय)
श्री कृष्ण मोहन

ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय द्वारा 14 नवम्बर 2015 को बोध गया का क्षेत्र भ्रमण

शैक्षिक गतिविधियां

शैक्षिक वर्ष 2015–16 में दो विद्यालयों– ऐतिहासिक अध्ययन तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन में शैक्षिक गतिविधियां महत्वपूर्ण ढंग से बढ़ीं। भारत तथा पूरे विश्व से विद्वानों के लगभग 24 औपचारिक व्याख्यान आयोजित किए गए। ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय की एक पहल आंत्रे नुस सीरीज (Entre Nous series) के एक भाग के रूप में विभिन्न अनौपचारिक तथा स्व वर्गीय शैक्षिक व्याख्यान आयोजित किए गए। दो विद्यालयों द्वारा क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों एवं संकाय सदस्यों ने विभिन्न बाह्य शैक्षिक गतिविधियों जैसे – विभिन्न सम्मेलनों में लेख प्रस्तुतिकरण, कार्यशालाओं तथा अन्य विद्वतापूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया। ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के छात्रों ने सितम्बर के अन्त में विडियो कान्फ्रेन्सिंग के द्वारा एक पाठ्यक्रम के लिए यूनवर्सिटी ऑफ नार्थ कारोलिना, चैपल हिल, यूएसए के छात्रों के साथ पारस्परिक संवाद स्थापित किया। भविष्य में होने वाले विभिन्न अन्तर–विश्वविद्यालय सम्बद्धताओं में से यह पहली सम्बद्धता थी।

इस अनुभाग में इन सभी शैक्षिक गतिविधियों की सूचनाएं प्रदान की गई है।

विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला

''शुआनचांग की राजनैतिक स्थितिः शिचुचि में भारतीय राजवंश का एक नीतिपरक निर्माण'' पर मैक्स डीग का व्याख्यान

प्रोफेसर मैक्सडीग प्रोफेसर, बौद्ध अध्ययन तथा अध्यक्ष बोर्ड ऑफ स्टडीज कार्डिफ स्कूल ऑफ हिस्ट्री आर्किलॉजी एंड रिलीजन, कॉर्डिफ यूनवर्सिटी यूके, ने 9 viy 2015 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत एक व्याख्यान दिया। जिसका विषय ''शुआनचांग की राजनैतिक स्थितिः शिचुचि में भारतीय राजवंश का शिक्षात्मक निर्माण था'', उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान बौद्ध कथाएं तथा बौद्ध समुदाय ऐतिहासिक पहचान में उनकी भूमिका के बारे में भी बताया।

प्रोफेसर डीग अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन संघ, यूरोपीय धार्मिक अध्ययन संघ, दि नोबिली रिसर्च सोसायटी फॉर दि स्टडी ऑफ साउथ एशियन रिलीजन्स एंड फिलासॉफी के सदस्य भी हैं। प्रोफेसर डीग बौद्ध इतिहास एवं भारत से मध्य एवं पूर्व एशिया के बीच बौद्धवाद के प्रसार के विशेषज्ञ हैं।

प्रोफेसर मैक्स डीग 9 अप्रैल 2015 को विशिष्ट व्याख्यान देते हुए।

''नालंदा बिहार क्षेत्र का भूजल'' पर दीपांकर साहा का व्याख्यान

डॉ. दीपांकर साहा, (सदस्य सचिव, केन्द्रीय भूजल बोर्ड, जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा पुनरुद्धार मंत्रालय भारत सरकार) ने 18 viy 2015 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का शीर्षक–''नालंदा बिहार क्षेत्र का भूजल'' था।

डॉ. साहा विभाग का अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्य देखते हैं तथा उन्हें भूजल की जांच, विकास तथा प्रबंधन में 30 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

वे बिहार और झारखण्ड राज्य के जल विज्ञान रिपोर्ट, भारत में भूगर्भीय भूजल प्रदूषण समेत विभिन्न विभागीय रिपोर्टों के संकलनकर्ता रह चुके हैं। उन्होंने एशियन इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नालॉजी, बैंकॉक से एप्लाइड क्वार्टीनैरी जियोलॉजी तथा जापान इंटरनेशनल कोपरेशन एजेंसी (जीका), टोक्यो से एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

डॉ. दीपाकर साहा 18 अप्रैल 2015 को अपना विशिष्ट व्याख्यान देते हुए।

''चम्बल घाटी में मंदिर संरक्षण की चुनौती के रोमांचकारी कथानक'' पर के. के. मुहम्मद का व्याख्यान

श्री के. के. मुहम्मद, (पुरातात्विक परियोजना निदेशक, आगा खां संस्कृति न्यास) ने 24 viiy 2015 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का विषय ''चम्बल के डाकुओं एवं खनन माफियायों के बीच फंसनाः'' चम्बल घाटी में मंदिर संरक्षण का रोमांचकारी कथानक'' था।

उनका व्याख्यान मोरेना (मध्यप्रदेश) में एक पुरतात्विक स्थल बटेश्वर में उनके सरंक्षण कार्य पर केन्द्रित था। बटेश्वर ग्वालियर से 40 किमी दूर स्थित 200 प्राचीन शिव एवं विष्णु मंदिरों का एक भवन समूह है। मंदिरों का निर्माण, खजुराहो मंदिर के निर्माण से लगभग 200 वर्ष पूर्व 9वीं से 11वीं शताब्दी में गुर्जर प्रतिहार वंश के काल में किया गया था।

श्री के. के. मुहम्मद ने बटेश्वर में जब कार्य करना आरम्भ किया तो उन्हें यह पता चला कि इस क्षेत्र में निर्भय सिंह गुज्जर और गादरिया डाकुओं का अधिक प्रभुत्व है। उनके व्याख्यान में इन समुदायों तथा डाकुओं से मंदिरों के संरक्षण के लिए उनके राजी करने में उनके संघर्षों का रोमांचकारी कथानक सम्बद्ध है। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार उन्हें इस क्षेत्र के खनन माफियाओं से लड़ना पड़ा था। श्री मुहम्मद ने इस क्षेत्र में अपने कार्य अवधि के दौरान 60 मंदिरों को पुनः प्रति स्थित किया था।

श्री के. के. मुहम्मद 24 अप्रैल 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

श्री करींगामान्नू कुजहियिल मुहम्मद एक प्रसिद्ध भारतीय पुरातत्ववेत्ता तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, उत्तरी क्षेत्र के पूर्व निदेशक भी हैं। उन्हें भारत में विभिन्न स्मारकीय स्थलों के संरक्षण के लिए कई राष्ट्रीय पुरास्कार प्राप्त हैं।

''भारत में जैव ईंधन के लिए अवसर एवं चुनौतियां : यूएस तथा ब्राजील से सबक'' पर मधु खन्ना का व्याख्यान

प्रोफेसर मधु खन्ना, एसीईएस प्रतिष्ठित प्रोफेसर, पर्यावरणीय अर्थव्यवस्था, कृषि एवं उपभोक्ता अर्थव्यवस्था विभाग, इलिनोआय विश्वविद्यालय, अर्बाना कैम्पागेईन ने 31 अगस्त 2015 को नालंदा में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस व्याख्यान का विषय – ''भारत में जैवईंधन के लिए अवसर एवं चुनौतियां : यूएस तथा ब्राजील से नीतिगत सीख'' थी।

उन्होंने भारत में ईथानॉल के उत्पादन को बढ़ाने के विकल्पों तथा नीतियों जो ईथानॉल आधारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है का कृषि एवं परिवहन क्षेत्रों में पड़ने वाले इसके आर्थिक प्रभावों पर चर्चा की। इन्होंने दो अग्रणी जैवईंधन उत्पादनकर्ताओं ब्राजील तथा यूएस की नीतिगत सोच को परिभाषित किया, जिन्होंने बड़े महत्वपूर्ण ढंग से जैवईंधन का विस्तार किया है, तथा इस सीमा तक विस्तार किया है, जहां तक वे सफल रहे हैं। उन्होंने इन

डॉ. मधु खन्ना 31 अगस्त 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

नीतियों के वितरण प्रभाव तथा नीतियों के लिए सीख, जिसे भारत में लाया जा सकता है की व्याख्या प्रस्तुत की।

''पश्चिमी बंगाल के बौद्ध मन्दिरों से प्राप्त नये साक्ष्य : मोघालमारी में उत्खनन'' पर रजत सान्याल का व्याख्यान

डॉ. रजत सान्याल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पुरातत्व विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, ने 23 flrEcj 2015 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय–''पश्चिमी बंगाल में मठवासी बौद्ध धर्म के नये साक्ष्य : मोघालमारी में उत्खनन'' था।

डॉ. सान्याल ने मोघालमारी में उत्खनन के बारे में बताया। मोघालमारी पश्चिम बंगाल के पश्चिमी मेदिनीपुर जिले का एक छोटा–सा गांव है। पुरातत्व विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय (सीयू) के द्वारा उत्खनन शुरू किया गया जिसके परिणाम स्वरूप (60Mx60M) का एक विशाल बौद्ध मठ भवन जो एक परिसर में दो मठ खण्डों से मिलकर बना था, प्राप्त हुआ। उनका मुख्य फोकस स्थल से प्राप्त परिणामों के शिलालेखीय अध्ययन पर था।

डॉ. रजत सान्याल 23 सितम्बर 2015 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

विदेश नीति के रूप में विदशी छात्र : आस्ट्रेलिया तथा चीन के तुलनात्मक दृष्टिकोण पर डेविड लोवी का व्याख्यान

प्रोफेसर डेविड लोवी, अध्यक्ष, समसामयिक इतिहास, डेकिन विश्वविद्यालय ने 6 vDVcj 2015 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय 'विदेश नीति के रूप में विदेशी छात्र : आस्ट्रेलिया तथा चीन का तुलनात्मक दृष्टिकोण था।

एशियाई शताब्दी की सबसे सामान्य धारणा, विकास एवं गतिशीलता की भावना विशेष रूप से व्यक्ति, व्यापार एवं वित्त, सामरिक शक्ति तथा सूचना पर टिका हुआ है।

डॉ. लोवी ने विकास तथा गतिशीलता विशेष रूप से व्यक्ति, व्यापार एवं वित्त, सामरिक शक्ति पर आधारित एशियाई शताब्दी की धारणा पर चर्चा की। उन्होंने आस्ट्रेलिया और चीन के परिप्रेक्ष्य में विदेशनीति के रूप में विदेशी छात्र पर चर्चा की तथा जारी शोध पर खासकर एशिया में छात्रों की गतिशीलता में प्रत्याशित बढ़त के प्रसंग में कुछ सुझावों की व्याख्या की।

प्रोफेसर डेविड लोवी 6 अक्टूबर 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

प्रोफेसर डेविड लोवी 2009 से 2014 तक अल्फ्रेड डेविन रिसर्च इंस्टिट्यूट के निदेशक भी रह चुके हैं।

''21वीं शताब्दी में जन स्वास्थ्य की चुनौतियां : जीवविज्ञान जनसांख्यिकी, अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण का अभिसरण'' पर के. एम. वेंकट नारायण का व्याख्यान

प्रोफेसर के. एम. वेंकट नारायण, अध्यक्ष ग्लोबल हेल्थ, प्रोफेसर, मेडिसिन एंड इपिडिमोलॉजी इमोरी यूनवर्सिटी, अटलांटा (यूएसए) ने 30 vDVcj 2015 को अधिवेशन भवन, पुराना सचिवालय, पटना बिहार में नालंदा विशेष व्याख्यान श्रृंखला में ''21 वीं शताब्दी में जन स्वास्थ्य की चुनौतियां : जीव विज्ञान, जन सांख्यिकी अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण का अभिसरण' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में प्रोफेसर नारायण ने विश्वभर में किस प्रकार अब लोग लम्बे समय तक जीवित रह रहे हैं तथा किस प्रकार विकास के साथ रोगों के तरीकों में परिवर्तन आ रहा है, पर चर्चा की।

उन्होंने कहा कि जन स्वास्थ्य की मुख्य चुनौतियों के अन्तर्गत : गरीबी एवं आर्थिक असमानता, युद्ध एवं हिंसा, जलवायु परिवर्तन, बढ़ता शहरीकरण, सुरक्षित जल, स्वस्थ भोजन, संक्रामक रोग एवं महामारी तथा स्वास्थ्य सुरक्षा प्रणाली है। भारत को किस प्रकार अपने जन स्वास्थ्य के लिए शहर एवं ग्रामीण दोनों स्तर पर समस्या से निपटने की आवश्यकता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अधिकतर स्वास्थ्य समाधानों के लिए अन्तर्विषयी कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने भारत में अनुसंधान एवं विकास पर निवेश को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि भारत का जनसांख्यिकी लाभांश स्वास्थ्य एवं शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रदान करने पर निर्भर करता है।

प्रोफेसर नारायण एक चिकित्सीय–वैज्ञानिक हैं, वे आंतरिक औषधि, जरा औषधि, एवं निवारक औषधि में प्रशिक्षित हैं तथा महामारी विज्ञान एवं मधुमेह, मोटापा तथा संवहनी रोगों के रोकथाम के विशेषज्ञ हैं। उनका कैरियर पिछले दो दशकों में तीन महाद्वीपों तक फैला हुआ है उन्होंने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डायबिटीज, डाईजेस्टिव एंड किडनी डिसीजेज तथा सेंटर्स फॉर डिसीज कन्ट्रोल एंड प्रिवेंटिशन में भी विभिन्न पदों पर कार्य किया है।

प्रोफेसर के. एम. वेंकट नारायण 30 अक्टूबर 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''राष्ट्रवाद, मृदुल शक्ति योग, तथा विश्व धर्म संसद, 1893'' पर रिचर्ड ह्यूयजेस सीजर का व्याख्यान

प्रोफेसर रिचर्ड ह्यूजेस सीजर, दि वैट्स एंड बेंजामिन प्रोफेसर, रिलीजियस एंड क्लासिकल स्टडीज, हैमिल्टन कॉलेज, न्यूयॉर्क ने 10 uoEcj 2015 को नालंदा में विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय 'राष्ट्रवाद, मृदुल शक्ति योग तथा विश्व धर्म संसद 1893' था।

उन्होंने विकास की ऐतिहासिक परम्परा में आधुनिक योग की खोज पर चर्चा की जिसके बारे में पश्चिमी जगत, विश्व धर्म संसद 1893 के द्वारा परिचित हुआ। इतिहास में इनके अनुसंधान से इस संसद में एशियाई योगदान के महत्व को समझने में सहायता प्राप्त होती है। इन्होंने विवेकानन्द के चरित्र, हिन्दू–अमेरिकी डायस्पोरा के अन्तर्गत वर्तमान विकास और अमरीकी योग समुदाय तथा नरेन्द्र मोदी जी के वर्ष 2014 में संयुक्त राज्य अमेरिका के भ्रमण के दौरान ''मृदुल शक्ति योग'' की कूटनीति पर चर्चा की।

प्रोफेसर सीजर ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय तथा यूएनसी चैपेल हिल समेत कई संस्थानों में शिक्षण कार्य किया है। वे हाल तक पूर्वी संस्कृति के विषय में लोक शिक्षा तथा पश्चिमी जगत के उसके संवाद के कार्यक्रमों में लोक शिक्षा से जुड़े हुए थे।

प्रोफेसर रिचर्ड ह्यूजेस 10 नवम्बर 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''नालंदा : विश्व विरासत स्थल के चयन की प्रक्रिया'' पर हिमांशु प्रभा राय का व्याख्यान

प्रोफेसर हिमांशु प्रभा राय, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 26 uoEcj 2015 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''नालंदाः एक विश्व विरासत स्थल बनने की प्रक्रिया'' था।

प्रोफेसर प्रभा राय ने विभिन्न विषयों पर चर्चा की। उन्होंने विरासत विषय से ही अपनी चर्चा की शुरुआत की, यह शब्द यूरोपीय समझ से उपजा है। जो भारत के संदर्भ में जटिलता प्रकट करता है। उन्होंने नालंदा के विश्वविरासत बनने की यात्रा पर भी प्रकाश डाला।

प्रोफेसर हिमांशु प्रभा राय, हमबोल्ट फाउन्डेशन के एन्नीलाइजी मेयर रिसर्च अवार्ड की प्राप्तकर्ता हैं तथा लडविग मैक्सीमिलन यूनवर्सिटी, म्युनिख से सम्बद्ध हैं।

प्रोफेसर हिमांशु प्रभा राय, 26 नवम्बर 2015 को अपना विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''आईएसआईएस की अपील 2015'' पर मैलिसे रूथवेन का व्याख्यान

प्रोफेसर मैलिसे रूथवेन, पूर्व प्रोफेसर, इस्लामिक अध्ययन, सांस्कृतिक इतिहास एवं तुलनात्मक धर्म, एबरदीन, स्कॉटलैण्ड ने 3 दिसम्बर 2015 को नालंदा में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान दिया। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''आईएसआईएस की अपील 2015'' था।

उन्होंने पश्चिमी दोषपूर्ण नीतियों, मौजूदो राज्य व्यवस्था की संरचनात्मक संवेदनशीलता, ईराक तथा सीरिया में आईएसआईएस के बढ़ने के संदर्भ में स्वयंभू कैलिफेट की सुकुमारता की शैली पर चर्चा की। उन्होंने यह तर्क दिया कि विश्व के विभिन्न भागों के मुस्लिमों के लिए आईएसआईएस की अंतराष्ट्रीय इस्मालिक अपील इस भावना पर आधारित होती है कि इसका सिद्धांत इस्लामिक संस्था के मूल ग्रंथ में चित्रित कैलिफेट के नरक और स्वर्ग के निर्णय की कल्पना को साकार करता है।

प्रोफेसर रूथवेन, पूर्व कथा लेखक, बीबीसी अरेबिक एंड वर्ल्ड सर्विसेज ने बर्कबैक कॉलेज यूनवर्सिटी ऑफ लंदन, दि यूनवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैन डिएगो, डार्टमाउथ कॉलेज, न्यू हैम्पशायर तथा कोलोराडो कॉलेज, कोलोराडो स्प्रिंग में इस्मालिक अध्ययन, सांस्कृतिक इतिहास एवं तुलनात्मक धर्म का शिक्षण कार्य किया है।

डॉ. मैलिसे रूथवेन 3 दिसम्बर 2015 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''भिक्षु, धन तथा पांडुलिपि : गान्धार में बौद्ध धर्म पर जेन्स–उवे हार्टमैन का व्याख्यान

प्रोफेसर जेन्स उवे हार्टमैन, प्रोफेसर, भारत–विद्या, म्युनिख विश्वविद्यालय ने 6 जनवरी 2016 को ''भिक्षु, धन तथा पांडुलिपि गान्धार में बौद्ध धर्म'' विषय पर नालंदा विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर जेन्स–उवे हार्टमैन ने पहली शताब्दी के दौरान गान्धार क्षेत्र में हुए विकास कार्यों पर चर्चा की। इस क्षेत्र में बौद्ध विचार एवं कलात्मक शैली का अधिकाधिक विकास हुआ, जहां इसने बुद्ध तथा बोद्धिसत्व को मानव रूप में प्रदर्शित करने के लिए रोमन मॉडल अपनाया। अपने भाषण में प्रोफेसर हार्टमैन ने तर्क प्रस्तुत करते हुए कहा कि गान्धार बौद्ध धर्म प्राचीन व्यापार मार्ग जिसे सामान्य रूप से सिल्क रोड नाम से जाना जाता है के सामान्तर अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। गान्धार से बौद्ध कला एवं सिद्धांत पहले तुर्कीस्तान तत्पश्चात् पूर्व की ओर से चीन, कोरिया तथा जापान तक इस रूट के साथ फैलता गया।

प्रोफेसर जेन्स उवे हार्टमैन हमबोल्ट यूनवर्सिटी बर्लिन में तिब्बत विद्या (Tribetology) के शिक्षण कार्य से भी जुड़े थे।

प्रोफेसर जेन्स उवे हार्टमैन 6 जनवरी 2015 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''वैश्विक स्तर पर फसल कटाई के पश्चात् होने वाले नुकसान की रोकथाम और एडीएम इंस्टिट्यूट : एक बहुशेयर धारक दृष्टिकोण'' पर प्रशांता के. कलीता का व्याख्यान

प्रोफेसर प्रशांता के. कलीता, निदेशक, एडीएम इंस्टिट्यूट, प्रिवेंटेशन ऑफ पोस्टहार्वेस्ट लॉस, यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय, अर्बाना कैम्पागेन, यूएसए ने 10 जनवरी 2016 को नालंदा में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का शीर्षक ''वैश्विक स्तर पर फसल कटाई के पश्चात् होने वाले नुकसान की रोकथाम और एडीएम इंस्टिट्यूट : एक बहुशयेर धारक दृष्टिकोण'' था।

प्रोफेसर कलीता ने खासकर भारत जैसे विकासशील देशों में भूख से निपटने के लिए पोस्टहार्वेस्ट लॉस (पीएचएल) को रोकने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार आपूर्ति श्रृंखला को और अधिक प्रभावशाली बनाने पर यह संभव हो सकता है। उन्होंने यह भी चर्चा की कि किस प्रकार विकासशील एवं विकसित देशों में अलग–अलग रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है, क्योंकि दोनों ही मामलों में स्थिति एवं समस्याएं पूर्णरूपेण पृथक हैं। उन्होंने वर्तमान वैश्विक पीएचएल की स्थिति नवीनतम पीएचएल डाटा और पीएचएल की रोकथाम के लिए संभावित हस्तक्षेप पर तथ्यात्मक डाटा भी प्रस्तुत किया। अन्त में उन्होंने अनुसंधान से संबंधित क्षेत्र में एडीएम इंस्टिट्यूट, यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय द्वारा समर्थित विभिन्न वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा अन्य जारी गतिविधियों पर चर्चा की। प्रोफेसर प्रशांता के कलीता, यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय, अर्बाना– कैम्पागेन, यूएस में कृषि एवं जीवविज्ञान अभियांत्रिकी विभाग में प्रोफेसर भी हैं।

प्रोफेसर प्रशांता के कलीता 10 जनवरी 2016 अपना विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''मूलसर्वास्तिवाद तथा महासंघिका–लोकोत्तरवाद विन्यास में महिला एजेंसी'' पर एमी पेरिस लैंगनबर्ग का व्याख्यान

डॉ. एमी पेरिस लैंगनवर्ग, असिस्टैन्ट प्रोफेसर, धार्मिक अध्ययन विभाग, एकर्ड कॉलेज, फ्लोरिडा ने 22 जनवरी 2016 को विश्वविद्यालय परिसर में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनका विषय– ''मूलसर्वास्तिवाद तथा महासंघिका–लोकोत्तरवाद विन्यास'' था।

डॉ. लैंगनबर्ग ने मठ समुदाय में लिंग पदानुक्रम को समझने के लिए बौद्ध मठ विधि पाठ को पढ़ा। उनकी भिक्षुणी विनय पाठ का जटिल वाचन इस पाठ की भाषा को मठवासिनी समुदाय के विभिन्न तौर–तरीकों के लिए संवेदनशीलता प्रकट करता है। उनकी यह परिकल्पना थी कि बौद्ध धर्म में भिक्षुणी के पास उनकी अपनी कुछ साधन होती है। उन्होंने अपने व्याख्यान के लिए ''मूलसर्वास्तिवाद तथा महासंघिका लोकोत्तरवाद विन्यास'' के पाठ का संदर्भ लिया था।

डॉ. एमी पेरिस लैंगनबर्ग 22 जनवरी 2016 को विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

डॉ. एमी पेरिस लैंगनबर्ग ने ब्राउन यूनवर्सिटी तथा ऑबर्न यूनवर्सिटी में विभिन्न पदों पर कार्य किया है।

''अंतिम जीवन : देहांतरण, त्याग एवं विमुक्तिकरण'' पर सिल्विया डी इंटीनो का व्याख्यान

डॉ. सिल्विया डी इंटीनो, वरिष्ठ शोधकर्ता, सीएनआरएस, पेरिस ने विश्वविद्यालय में 11 फरवरी 2016 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनका विषय 'अंतिम जीवन : देहांतरण, त्याग एवं विमुक्तिकरण' था।

संस्कृत भाषा विज्ञान तथा वैदिक अध्ययन की विशेषज्ञ सिल्विया डी इंटीनो ने मानव जीवन एवं जीवन समापन पर ब्राह्मणिक विचारधारा के बारे में चर्चा की। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान प्रारम्भिक भारत में ब्राह्मणिक स्त्रोतों एवं दार्शनिक परम्पराओं का संदर्भ प्रदान किया। उनकी विषय के साथ सम्बद्धता अत्यंत प्रेरक थी। उनके अनुसार यदि मोक्ष प्राप्त करने के लिए देहांतरण अत्यंत आवश्यक कदम है, तो विमुक्तिकरण अंतिम जीवन के अन्तर्निहित आदर्श से हाथ से हाथ मिलाकर चलती है, जो कर्मफल के शून्यीकरण की ओर बढ़ती है, वासानास के सभी चिन्ह एवं छाया मानव के अस्तित्व को प्रभावित करते हैं, तथा उत्तम जीवन के नमूने प्रदान करते हैं, जिसमें त्यागकर्ता (संन्यासी) और जीवन से मुक्त (जीवनमुक्ता) दोनों सम्मिलित होते हैं। उन्होंने मानव की स्थिति पर भारतीय विचारधाराओं की सामान्य कड़ी की उपस्थिति को प्रदर्शित करने के लिए बुद्ध के जीवन चरित्र से अंतिम जीवन के आदर्शों का उल्लेख किया।

डॉ. सिल्विया डी इंटीनो 11 फरवरी 2016 को एक विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''चेतना की तंत्रिका तंत्र के अन्वेषण के लिए आरईएम (REM) स्लीप की समझ'' पर बीरेन्द्र एन. मलिक का व्याख्यान

प्रोफेसर बीरेन्द्र एन. मलिक, प्रोफेसर, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, ने 15 फरवरी 2016 को ''चेतना की तंत्रिका तंत्र के अन्वेषण के लिए आर.ई.एम. स्लीप की समझ'' पर नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर मलिक का व्याख्यान रैपिड आई मूवमेन्ट स्लीप (आरईएमएस) के द्वारा चेतना को समझने पर आधारित था। उनके अनुसार यद्यपि हम तंत्रिका तंत्र तथा चेतना नियंत्रण को अभी तक नहीं समझ पाए हैं, सबसे दर्शनीय एवं स्पष्ट शारीरिक–व्यावहारिक संबंध सोना और जागना है, जिसे मस्तिष्क की संबंधित इलेक्ट्रिक गतिविधियों, दि ईईजी द्वारा निष्पक्षता से परिभाषित किया गया है। प्रकृति ने एक विशेष व्यवस्था प्रदान की है, आरईएमएस–जब यद्यपि एक व्यक्ति व्यवहारिक रूप से सोया हुआ है, फिर भी जागने के कुछ लक्षण प्रदर्शित होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया आरईएमएस के तंत्रिका नियंत्रण को समझने पर चेतना के तंत्रिका नियंत्रण को समझने का संकेत प्राप्त हो सकता है।

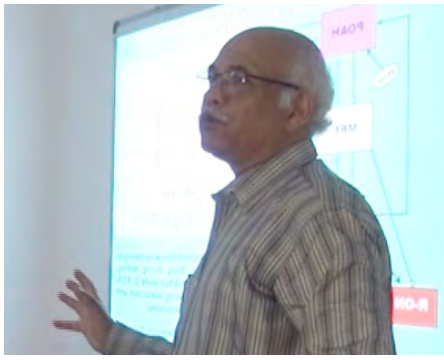

प्रोफेसर बीरेन्द्र एन. मलिक 15 फरवरी 2016 को अपना विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

उन्होंने आरईएमएस नियंत्रण पर उन्नत शोधों का विवरण भी प्रस्तुत किया।

''कम्युनिटी विश्वविद्यालय संबंध और उन्नत भारत अभियान'' पर जेन ई. स्कुकोस्की का व्याख्यान

जेन ई. स्कुकोस्की, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एस.एम. सहगल फाउन्डेशन, गुड़गांव ने अपने सहयोगी डॉ. विकास झा के साथ एनयू कम्युनिटी से संवाद स्थापित करने के लिए नालंदा का भ्रमण किया तथा 19 फरवरी 2016 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में व्याख्यान प्रस्तुत किया उनके व्याख्यान का शीर्षक–''कम्युनिटी विश्वविद्यालय संबंध और उन्नत भारत अभियान'' था।

जेन. ई. स्कुकोस्की नालंदा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिषद की सदस्य भी हैं।

जेन. ई. स्कुकोस्की तथा विकास झा ने एस. एम. सहगल फाउन्डेशन के कार्य के बारे में चर्चा की। सहगल फाउन्डेशन का उपयुक्त ग्रामीण सुशासन कार्यक्रम ग्रामीण स्तर के संस्थानों के नागरिकों एवं नेताओं को व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें ज्ञान, कौशल तथा विश्वास प्रदान है। ताकि वे जागरूकता एवं सक्रियता से स्वयं के कौशल से अपने समुदायों का विकास कर सकें। उन्होंने मानव संसाधन विकास द्वारा दिसम्बर 2014 में प्रारंभ किए उन्नत भारत अभियान (यूबीए) के बारे में भी चर्चा की। यूबीए का उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा उनके आस–पास स्थित ग्रामीण गांवों तक शिक्षा पहुंचाना है।

दोनों ने यह सुझाव दिए कि विश्वविद्यालय को भी ऐसे कार्यक्रमों से सम्बद्ध होना चाहिए तथा आस–पास के पड़ोसी गांवों के सामुदायिक मामलों पर फोकस करना चाहिए। नालंदा के भविष्य की योजनाओं के

श्रीमती जेन ई. स्कुकोस्की 9 फरवरी 2016 को अपना विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

अन्तर्गत पहले से ही विभिन्न विषयों जैसे–अपशिष्ट प्रबंधन तथा कृषि पर पड़ोसी गांवों के साथ मिलकर कार्य करना शामिल है।

शुआनचांग के ''पश्चिमी क्षेत्र के अभिलेख को कैसे पढ़े'' भारतीयता एवं पुनः स्थापित चीनी राष्ट्र की चुनौती, पर मैक्स डीग का व्याख्यान

प्रोफेसर मैक्स डीग, स्कॉलर–इन–रेजीडेंस, नालंदा विश्वविद्यालय एवं प्रोफेसर, बौद्ध एवं धार्मिक अध्ययन, कार्डिफ विश्वविद्यालय ने 23 Qjojh 2016 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में अपना भाषण प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय ''शुआनचांग के 'पश्चिमी क्षेत्र के अभिलेख' को कैसे पढ़े– भारतीयता एवं पुनः स्थापित चीनी राष्ट्र की चुनौती'' था।

प्रोफेसर डीग ने शुआनचांग के यात्रा वृतांत ''महान टैंग वंश के पश्चिमी क्षेत्र के अभिलेख'' (दातांग जियु जी) के बारे में चर्चा की। उन्होंने भारतीय बौद्ध एवं प्रारम्भिक मध्य भारतीय इतिहास को समझने के लिए इस पाठ के स्थापित प्रयोग पर प्रश्न खड़ा किया। उन्होंने यह प्रदर्शित करने के लिए कि किस प्रकार इस पाठ में भारतीयता पर चीनी प्रभाव हावी है, के लिए अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने यह उल्लेख किया कि इस पाठ के पाठकों को आवश्यक रूप से इस प्रसंग एवं तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि यह चीनी श्रोताओं एवं चीनी सम्राट के लिए लिखा गया है। उन्होंने फिर से इस बात पर जोर दिया कि भारतीय ऐतिहासिक वस्तुगत स्थिति को परिभाषित करने वाले एक दस्तावेज के रूप में इसके पाठ को पढ़ने अथवा इसके तथ्यों एवं विंदुओं को अप्रसांगिक ठहराने को अवश्य असफल मानना चाहिए, क्योंकि किसी मध्य भारतीय पाठ्यपुस्तक स्त्रोत में ऐसे व्याख्यान को असफल माना जाता है।

उन्होंने दो चयनित मार्गों के संदर्भ में पाठ्यपुस्तक को पढ़ने के प्रस्ताव का उदाहरण दिया। इसके विवरणात्मक आशय एवं प्रकृति के निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले इसके मूल चीनी संदर्भ के विवरण एवं पाठ्यपुस्तक के संभावित रेखांकित आशय पर जाना चाहिए। भारतीय सेना एवं विधिक प्रणाली पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रोफेसर डीग ने धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र का संदर्भ भी दिया।

प्रोफेसर मैक्स डीग 23 फरवरी 2016 को नालंदा विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

गंगा नदी के लिए प्रदूषण प्रबंधन' पर कल्याण रूद्र का व्याख्यान

डॉ. कल्याण रूद्र, अध्यक्ष, प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड, पश्चिम बंगाल ने 31 ekp 2016 को विश्वविद्यालय में नालंदा विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला में ''गंगा पुनरुद्धार : प्रदूषण प्रबंधन'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

डॉ. कल्याण रूद्र ने प्रदूषण तथा मानव की अन्य गतिविधियों के कारण गंगा की बिगड़ती हुई स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने गंगा की जलगुणवत्ता को सुधारने के लिए गंगा एक्शन प्लान (जीएपी) जिसे 1985 में प्रारंभ किया गया था, के अतिरिक्त अन्य विभिन्न उपायों के बारे में चर्चा की। डॉ. रूद्र ने गंगा प्रदूषण प्रबंधन से संबंधित विभिन्न आकंड़े साझे किये। उन्होंने गंगा में अविरल (बिना अवरोध प्रवाहित) एवं निर्मल धारा (प्रदूषण रहित) के उद्धार हेतु सात आईआईटी के सहयोग से मिलकर बनी एक विशेषज्ञ समिति के अधीन परियोजना का भी उल्लेख किया। हालांकि उनके अनुसार ये प्रयास भी पर्याप्त नहीं हैं। अपने निष्कर्ष में उन्होंने सभी मायनों में नदी के जल की गुणवत्ता को प्राप्त करने के जन भागीदारी कार्यक्रम पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वास्तव में इसमें एक सामूहिक उत्तरदायित्व की पहल होनी चाहिए।

डॉ. रूद्र केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के भी सदस्य हैं। उन्हें नदी एवं जल प्रबंधन में विशेषज्ञता के साथ एक भूगोलवेत्ता के रूप में भी शैक्षणिक प्रशिक्षण प्राप्त है। उन्होंने अपनी लम्बी अवधि के शैक्षिक कैरियर से वर्ष 2007 में विराम लेकर पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के एक अनुसंधान परियोजना में कार्यग्रहण किया। उन्होंने डब्ल्युबीपीसीबी (WBPCB) की दो परियोजनाओं पहली– 'जल संसाधन एवं इसकी गुणवत्ता' तथा दूसरी– 'पश्चिम बंगाल सक्रिय नदी प्रणाली' के परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया। वे राज्य की शीर्ष अदालत द्वारा गंगा की सफाई के लिए गठित की गई समिति के वर्ष 2005 से एक विशेषज्ञ सदस्य हैं।

डॉ. कल्याण रूद्र 31 मार्च 2016 को अपना विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

नालंदा विशेष व्याख्यान श्रृंखला

''भारत के मैदानी क्षेत्रों में भूमि उपयोग एवं जलवायु का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'' पर आलोक मुखर्जी का व्याख्यान

श्री आलोक मुखर्जी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (वैज्ञानिक–सी), राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली ने नालंदा विश्वविद्यालय में 16 viy 2015 को अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री मुखर्जी के व्याख्यान का शीर्षक– ''भारत के मैदानी क्षेत्रों में भूमि उपयोग एवं जलवायु का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'' था।

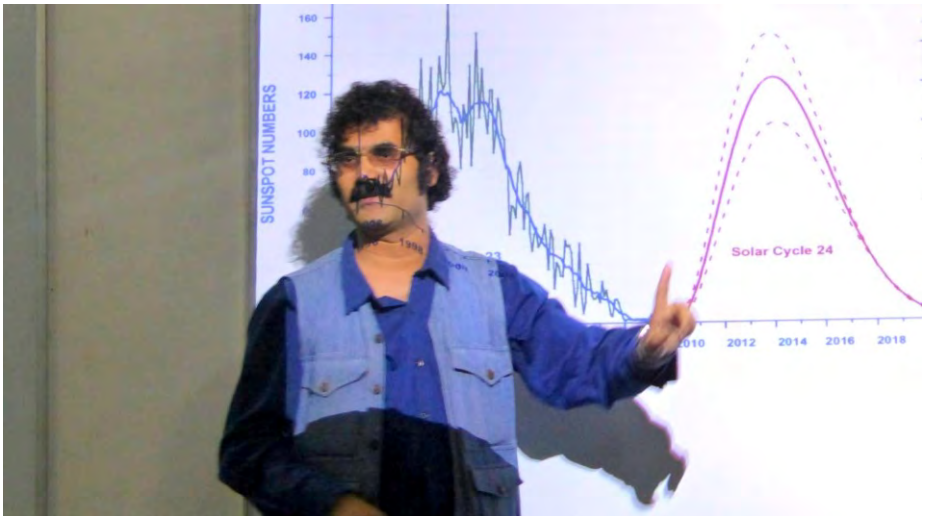

श्री आलोक मुखर्जी 16 अप्रैल 2015 को अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

श्री आलोक मुखर्जी, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला में स्थित साउथ एशियन स्टार्ट (START) कमेटी के ग्लोबल चेंज केन्द्र में वैज्ञानिक सचिव के रूप में कार्य कर रहे हैं। वे नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, भारत, बांग्लादेश, मालद्वीव तथा मारीशस के साथ विभिन्न परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं। वे पिछले आठ वर्षों से पर्यावरण अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में विजिटर अतिथि संकाय के रूप में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

''एन्थ्रोपोसिने'' की उभरती हुई नई ऐतिहासिक/पर्यावरणीय संकल्पना तथा विवरणात्मक इतिहास लेखन की समस्या'' पर मासाहीरो टेराडा का व्याख्यान

डॉ. मासाहीरो–टेराडा, विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर, रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑफ ह्युमैनिटी एंड नेचर, क्योटो, जापान ने 18 ekp 2016 को विश्वविद्यालय में अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का शीर्षक 'प्रकृति कृत्रिमता तथा उपयुक्तता'–' ''एन्थ्रोपोसिने'' की उभरती हुई नई ऐतिहासिक पर्यावरणीय संकल्पना तथा विवरणात्मक इतिहास लेखन की समस्या'' था।

डॉ. टेराडा एक इतिहासकर्ता एवं नेशनल म्युजियम ऑफ एथनोलॉजी (ओसका, जापान) में रिसर्च फेलो हैं। उन्होंने 18वीं तथा 19वीं शताब्दी के सामाजिक–आर्थिक इतिहासकर्ता के रूप में कार्य किया, तत्पश्चात् ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व की समस्या, संग्रहालय–नृविज्ञान, विवरण तथा इतिहास पर फोकस किया।

डॉ. मासाहीरो–टेराडा 18 मार्च 2016 को अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''सर्तकता की स्थिरता'' पर मकोतो ओहाशी का व्याख्यान

प्रोफेसर मकोतो ओहाशी, टोकूशिमा विश्वविद्यालय, जापान ने 24 Qjojh 2016 को नालंदा विश्वविद्यालय में ''सर्तकता की स्थिरता को कैसे विकसित करें'' नामक शीर्षक पर एक विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर मकोतो ओहाशी ने जापान, कोरिया, थाईलैंड तथा मंगोलिया की संधारणीय कृषि प्रणाली पर अपने वर्तमान अनुसंधान कार्य के बारे में बताया। प्रोफेसर मकोतो ओहाशी ने मियाज़ाकी मेडिकल कॉलेज जापान से पीएचडी की है तथा प्रतिरक्षा विज्ञान के विशेषज्ञ हैं।

प्रो. मकोतो ओहाशी, 24 फरवरी 2016 को अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

''किफायती खर्चे में पूर्व एशिया पर शोध : एक पुस्तकालयाध्यक्ष का दृष्टिकोण'' पर डैरेल डॉरिंगटन का व्याख्यान

प्रोफेसर डैरेल डॉरिंगटन ने नालंदा विश्वविद्यालय में 27 uoEcj 2015 को ''बजट पर पूर्व एशिया का अन्वेषण : एक पुस्तकालयाध्यक्ष का दृष्टिकोण'' विषय पर अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर डॉरिंगटन आस्ट्रेलिया में एशिया पैसिफिक क्लस्टर, आस्ट्रेलिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय पुस्तकालय, के प्रमुख थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कुछ साइटों को प्रदर्शित किया जो मुफ्त में अच्छे संसाधन उपलब्ध कराती हैं, इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ रणनीतियों की चर्चा की जिससे छात्र पुस्तकालय संसाधनों तक अपनी पहुंच को बढ़ा सकते हैं।

प्रोफेसर डैरेल डॉरिंगटन 27 नवम्बर 2015 को अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला

Mk- ejkjh d- >k] vfLVV ikQlj, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय ने 14 अगस्त 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''16वीं से 18वीं शताब्दी में पूर्वी गंगा क्षेत्र में व्यापारी समुदाय परिवर्तन के एक एजेंट के रूप में'' नामक विषय पर अपना पहला व्याख्यान प्रस्तुत किया।

डॉ. रवीश चन्द्रा

Mk- joh'k pUnk] vfLVV ikQlj, सिंचाई एवं जल निकासी अभियांत्रिकी विभाग, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, बिहार ने 24 सितम्बर 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''कृषि क्षेत्र में जल उत्पादकता को बढ़ाना : चुनौती एंव अवसर'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

Mk- vk'kqrks"k mik/;k;] iem[k Hkfe ,o ty ic/ku iHkkx, आईसीएआर रिसर्च काम्प्लेक्स फॉर ईस्टर्न रीजन, पटना ने 9 अक्टूबर 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''निर्णय समर्थित उपकरण के द्वारा सतही एवं भूजल के संयोजित उपयोग हेतु विकल्पों का अन्वेषण'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

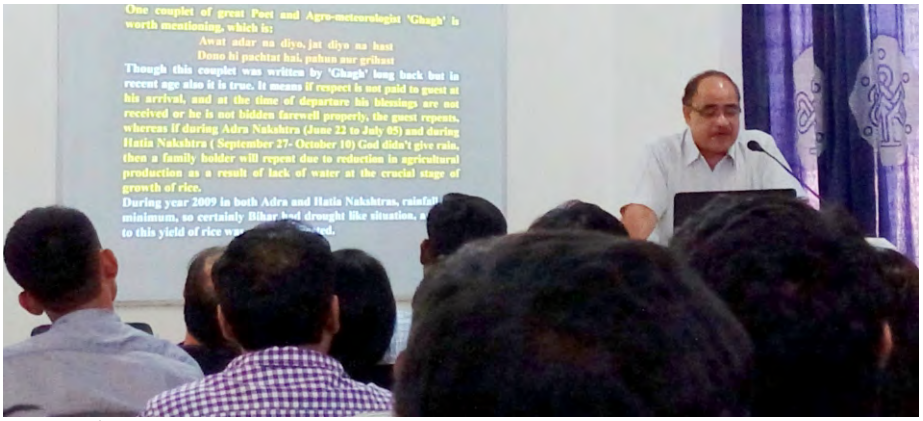

डॉ. आशुतोष उपाध्याय

Mk- lfer lu] cky jkx ,o xq.koÙkk l/kkj, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय तथा चिकित्सा निदेशक, शिशु विकास, गुड

डॉ. सुमित सेन

स्मार्टियन हास्पिटल, सैन जोस, यूएसए ने 27 अक्टूबर 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय ''प्रारंम्भिक बचपन के हस्तक्षेप : सामाजिक अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता'' था।

Mk- fpx okb- yk] vfrfFk fo}ku] flfoy bathfu;fjx foHkkx, रायर्सन

डॉ. चिंग वाई. लो

विश्वविद्यालय, टोरंटो, कनाडा ने 18 नवम्बर 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''ग्लोबल वॉर्मिंग पर एक खुशहाल समाधान'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

Jh inek Mh- eVyM] ih,pMh Nk=] dfyQkfu;k fo'ofo|ky;, बर्कले ने 20 नवम्बर 2015 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''कैलिफोर्नियाज हिप्पी

श्री पदमा डी

कॉस्मोग्राफी : गॉर्डन एशबी एंड होल अर्थ'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

Mk- cktkfeu] fdXlcjh] 0;k[;krk] bfrgkl n'ku] jktuhfr foKku ,o vUrjk"Vh; lac/k fo|ky;] foDVkfj;k fo'ofo|ky;] ofyxVu] U;thyM ने 12 फरवरी 2016 को नालंदा साप्ताहिक व्याख्यान श्रृंखला में ''विकास एवं विनाश : सागरद्वीप का एक मामला'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

आंत्रे नुस सीरीज

29 vDVwcj 2015 को ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के संकाय सदस्यों ने आलोचनात्मक लेकिन मैत्रीपूर्ण संवाद हेतु आंत्रे नुस (हमारे बीच) नामक फोरम को प्रारंभ किया। इस दौरान विश्वविद्यालय कम्युनिटी के सदस्य (संकाय सदस्य, छात्र तथा अन्य इच्छुक सदस्य) संस्कृति तथा प्रकृति अध्ययन के संबंध में व्यापक रूप से अर्जित कार्य प्रगति की प्रस्तुतीकरण करते हैं। इसमें 30 मिनट का एक व्याख्यान होता है तत्पश्चात् चर्चा की जाती है।

^^U;k; dk nork xkyno** ij vkfnR; efyd dk 0;k[;ku

डॉ. आदित्य मलिक, डीन एवं प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के साथ 'गोलूदेव का दरबार : मध्य हिमालय में न्याय, सत्य तथा दैवीय अवतार पर टिप्पणी'' पर बात चीत के द्वारा आंत्रे नुस सीरीज को प्रारंभ किया गया।

प्रोफेसर मलिक का व्याख्यान उन सामग्रियों एवं विचारों पर आधारित था जिस पर उन्होंने हाल ही में लिखी अपनी पुस्तक– टेल्स ऑफ जस्टिस एंड रिचुअल्स ऑफ डिवाइन एम्बाडीमेंट : ओरल नैरेटिव फ्राम सेन्ट्रल हिमालया (न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस : इन प्रेस) में चर्चा की थी। यह पुस्तक न्याय के विचारों के बारे में हैं, जिसकी उत्पत्ति मौखिक एंव लिखित विवरणों, कहानियों, साक्ष्यों तथा कुमाऊँ के मध्य हिमालयी प्रांत में गोलूदेव (न्याय के देवता) से संबंधित धार्मिक क्रियाओं से हुई है।

^^chjHkn rFkk mudh ijEijkvk dh le>** ij ikouh lkbjke dk 0;k[;ku

20 नवम्बर 2015 को श्रीमती पावनी साईराम, एम.ए. छात्र, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय ने ''वीरभद्र तथा उनकी परम्पराओं की समझ'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उन्होंने अपने क्षेत्र कार्य के प्रारम्भिक परिणामों पर चर्चा की, जो उन्होंने एम.ए. थीसिज को तैयार करने के दौरान किया था। इस क्षेत्र शोध के दौरान उन्होंने आंध्रप्रदेश के गोदावरी जिले में वीरभद्र देवता के विभिन्न विवरणों एवं धार्मिक क्रियाओं का अध्ययन किया। उनके

संसाधनों के अन्तर्गत मौखिक विवरण, कहानियां, त्यौहार, धार्मिक क्रियाएं, लिखित साहित्य, मंदिर पूजा तथा अन्य पवित्र स्थलों के दर्शन शामिल हैं। ये परम्पराएं जिन्हें मुख्य रूप से मंदिर एवं लोक संगीत में विभाजित किया जा सकता है, वीरभद्र के इर्द–गिर्द घूमती हैं, जो उसी भौगोलिक स्थान पर उपलब्ध है तथा देवता पर केन्द्रित है, और इस सांस्कृतिक परिवेश की समझ के बहु–अस्तित्व के बारे में लोगों के दिलचस्प अवलोकन को प्रदर्शित करती हैं।

^^feVVh d okrkoj.k e uukd.k** ij iHkkdj 'kek dk 0;k[;ku

बंसत ऋतु 2016 के लिए आंत्रे नुस की श्रृंखला का प्रारम्भ ''मिट्टी के वातावरण में नैनोकण'' पर 11 जनवरी 2016 को डॉ. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन, नालंदा विश्वविद्यालय के चर्चा के साथ हुआ।

इस चर्चा के दौरान डॉ. शर्मा ने इंजीनियर्ड नैनोपार्टिकल (ENPs) पर किए जा रहे अपने कार्यो की चर्चा की। उनका कार्य बड़े पैमाने पर रिलीज की घटना से पूर्व भारतीय अथवा समान पर्यावरण (उदाहरणतया–मिट्टी, झील, एक्वीफर्स) में कुछ चयनित वाणिज्यिक उत्पादों से रिलीज इंजीनियर्ड नैनोपाटिकल (ENPs) के फेट एवं ट्रांसपोर्ट को समझने से सम्बद्ध है। इएनपीएस को 1–100nm के क्रम में कम से कम 1 आयाम होने के रूप में परिभाषित किया जाता है। इंजीनियर्ड नैनोपार्टिकल (ENPs) का प्रयोग वैश्विक स्तर पर विभिन्न उपभोक्ता उत्पादों जैसे–सनस्क्रीन, फार्मास्युटिकल्स, सफाई से संबंधित उत्पादों, खाद्य पदार्थ, खाद्य पदार्थ की पैकेजिंग तथा कपड़ा उद्योगों में किया जाता है।

^^fyf¶Vx fn Qkx vku ukyn** ij eDl Mhx 0;k[;ku

बसंत ऋतु 2016 के लिए आंत्रे नुस का दूसरा व्याख्यान 18 जनवरी 2016 को प्रोफेसर मैक्स डीग, स्कॉलर इन रेजीडेंस, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय के ''फॉग ऑन नालंदा–एंड हाउ टू लिफ्ट इट'' शीर्षक पर उनकी प्रस्तुतीकरण से शुरू हुआ।

इस चर्चा में मैक्स डीग ने अपने उन समस्याओं पर प्रकाश डाला, जिसका सामना उन्होंने शुआनचांग शिचुचि के मगध खंड (पश्चिमी क्षेत्रों के अभिलेख) पर अपने कार्य के दौरान किया था। उन्होंने अपने पाठ्य पुस्तक के अनुवाद पर हो रही प्रगति का विस्तृत विवरण दिया तथा यह प्रदर्शित किया कि किस प्रकार बिना आवश्यक प्रासंगिकता तथा बिना किसी पुरातात्विक साक्ष्य के पाठ्य स्रोत को तैयार करने का कार्य किया गया है जिससे नालंदा का एक छद्म इतिहास सृजित हुआ है जो बुद्ध और अशोक के समय को दर्शाता है। उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि किस प्रकार यह विवरणात्मक बनावट नालंदा की और अधिक लघु कहानी में विखेर सकती है।

^^cxky MYVk e vkl fud lin"k.k d ueuk dh iueY;kdu vikp** ij lk;u Hkêkpk;l dk 0;k[;ku

डॉ. सायन भट्टाचार्य, असिस्टेंट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन ने आंत्रे नुस श्रृंखला में 21 मार्च 2016 को अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनके व्याख्यान का विषय– ''जैव संचय तथा अवशोषण के द्वारा उपचार पर अध्ययन के विशेष संदर्भ में बंगाल डेल्टा में आर्सेनिक संदूषण'' था। वर्तमान में जिसे आर्सेनिक (एएस) के नाम से जाना जाता है, पर्यावरण के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि यह उच्च विषाक्त प्रकृति का होता है, जिसमें अत्यधिक विषाक्तता पायी जाती है।

अब यह भी प्रमाणित हो चुका है कि भारत में बंगाल बेसिन विश्व में सर्वाधिक आर्सेनिक प्रभावित भूवैज्ञानिक प्रांत है। डॉ. सायन भट्टाचार्य का शोध कार्य कालीनारायणपुर (23°14'N, 88°59E) नादिया, पश्चिम बंगाल, भारत का एक भाग था। उन्होंने इस अनुसंधान की परियोजना रिपोर्ट एवं डाटा को प्रदर्शित किया जिसमें मानसून के पूर्व एवं पश्चात् ट्यूब वेल के जल का संग्रहण किया गया तथा भूजल मानकों के साथ उसका अध्ययन किया गया। इन परिणामों के आधार पर डॉ. भट्टाचार्य ने जल, मिट्टी तथा बंगाल डेल्टा की खाद्य श्रृंखला में आर्सेनिक संदूषण पर व्यवस्थित रूप से समाधान निकालने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि जल और खाद्य संसाधनों एवं इसके प्रभाव से आर्सेनिक के जोखिम को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

ejhVkbe flYd #V d lkekukrj x<ck) /ke dk uVod** ij ,fUM;k ,Øh dk 0;k[;ku

15 फरवरी 2016 को विजिटिंग असिस्टेंट प्रोफेसर, एन्ड्रिया एक्री, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय ने अपनी आगामी पुस्तक जिसका शीर्षक इंजोटेरिक बुद्धिस्ट नेटवर्क्स एलांग दि मैरीटाइम सिल्क रूट्स, 7जी–13जी सेंचुरी ए.डी. है पर चर्चा की।

डॉ एक्री, नालंदा–श्री विजय सेंटर (आईएसईएएस–युसुफ ईशाक इंस्टिट्यूट) सिंगापुर की विजिटिंग फेलो भी हैं। उन्होंने चर्चा की कि किस प्रकार भारतीय (गुप्तकाल के पश्चात्) मध्यकाल में तटीय एवं भीतरी इलाके की राजनीति का विशाल भौगोलिक विस्तार हुआ था, जिसका सम्पर्क बेब ऑफ एन्ट्रीपॉट्स के द्वारा जुड़ा हुआ था, जिससे की भारतीय समुद्र बंगाल की खाड़ी, दक्षिण चीन सागर, पश्चिमी प्रशांत सागर से जुड़े हुए थे। उन्होंने इसकी अवधारणा 'मैरीटाइम एशिया' के रूप में की। उनके अनुसार ये महानगरीय निवासी राजनीतिक सत्ता, व्यापारिक उद्यमिता, और कौशल केन्द्र, पूजा–पाठ एवं तीर्थयात्रा के चौराहे पर खड़े हैं जहां हिन्दू धर्म के संस्थागत गूढ़ रूप और बौद्धधर्म गूढ़ तांत्रिक प्रवृत्तियों के सामानांतर चल रहे हैं। उन्होंने अपनी खोज से यह प्रदर्शित किया कि 7वीं शताब्दी के प्रारम्भ से गूढ़ बौद्ध शिक्षकों, पाठ्य पुस्तकों और मूर्तियों को भारत एवं उपमहाद्वीप एवं उसके बाहरी क्षेत्रों जिसे 'परिधि' कहा जाता है, में स्थित प्रसार के विभिन्न केन्द्रों द्वारा सम्पूर्ण एशिया में पहुंचाया गया था।

	भारतीय	विदेशी नागरिक	पुरुष	महिला	कुल
पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन	29	5	18	16	34
ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय	15	1	12	4	16
dqy	**44**	**6**			**50**

fuEukfdr lewr dqy 18 jkT;ksa ls Hkkjrh; Nk=ksa us izos'k izkIr fd;k

1.	आंध्रप्रदेश	10.	केरल
2.	असम	11.	महाराष्ट्र
3.	बिहार	12.	उड़ीसा
4.	छत्तीसगढ़	13.	पंजाब
5.	दिल्ली	14.	सिक्किम
6.	गुजरात	15.	तेलंगाना
7.	हरियाणा	16.	उत्तराखंड
8.	झारखण्ड	17.	उत्तर प्रदेश
9.	कर्नाटक	18.	पश्चिम बंगाल

fon'kh Nk= rhu n'kksa& ykvksl] E;ekj rFkk HkVku ls vk;sA

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय

नालंदा विश्वविद्यालय ने अपने पुस्तकालय की कल्पना, संरचना एवं वहन दोनों स्तरों पर विश्वविद्यालय के मास्टर प्लान के केन्द्रीय आधार के रूप में की है, पुस्तकालय को सम्पूर्ण विश्वविद्यालय कम्युनिटी के शैक्षिक यात्रा में एक अभिन्न मित्र की तरह होना चाहिए तथा ज्ञान के नये संकाय के सृजन के अन्वेषण में सहायता करनी चाहिए।

नालंदा यूनवर्सिटी लाइब्रेरी (एनएएल) निरंतर उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के लिए सतत् प्रयत्नशील है तथा विश्वविद्यालय कम्युनिटी के बौद्धिक अन्वेषण, अनुसंधान, एवं आजीवन सीखने रहने की आवश्यकता को समर्थन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। पुस्तकालय का लक्ष्य विभिन्न प्रारूपों में आसानी से उपलब्ध अत्याधुनिक पुस्तकालय संसाधनों (प्रिंट तथा डिजीटल) के साथ एक केन्द्रीय बौद्धिक संसाधन केन्द्र के रूप में स्वयं को स्थापित करना है। इसकी अभिलाषा बौद्धिक विनिमय अभियान एवं अन्तर्विषयी परिसर–पार अनुसंधान हेतु नवोन्वेषी सेवाओं के द्वारा निर्बाध रूप से सूचना की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

नालंदा यूनवर्सिटी लाइब्रेरी (एनयूएल) अपने आरम्भ से ही पुस्तकें, ई–पुस्तकें, ई–जर्नल एवं ऑनलाइन डाटाबेस प्रदान कर रही है।

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय

विश्वविद्यालय के पास मुद्रित पुस्तकों के लगभग 7999 खंडों का संग्रह है तथा यह लगभग 170 ई–पुस्तक, 48000 ई–जर्नल तथा ऑनलाइन डाटाबेस जैसे–एल्सेवियर के साइंस डायरेक्ट, जेस्टोर (Jstor) नेचर, टेलर एंड फ्रांसिस, ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस तथा सेज पब्लिकेशन का एक्सेस प्रदान करता है।

एनयूएल ने व्यक्तिगत दानकर्ताओं से पुस्तकों के रूप में कई दान प्राप्त किए।

वर्ष 2015–16 में प्रोफेसर वांग गुंगवू, सदस्य, नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मडल ने अपने संग्रह से 347 पुस्तकें एवं 1746 जर्नल्स तथा श्रीमती गिरिजा वर्मा ने अपने पिता श्री युवराज किशन के संग्रह से एनयूएल को 294 पुस्तकें प्रदान की।

एनयूएल के पास डेलनेट (Delnet) (डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क) और सेंटर फार रिसर्च लाइब्रेरीज (सीआरएल), शिकागो की सदस्यता प्राप्त हैं जिससे यह इंटर–लोन फैसिलिटी के द्वारा प्रयोक्ताओं के लाभ हेतु संसाधनों का एक्सेस प्रदान करता है।

यह आधुनिक उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी और आधारभूत संरचना से लैस है। पुस्तकालय प्रणाली के उपप्रणाली को स्वचलित बनाने के लिए पुस्तकालय ने ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर कोहा (KOHA) को क्रियान्वित किया है।

,u;,y d i;kDrkvk dfy, fuEufyf[kr lok,i inku dh tk jgh g%&

- वेब आधारित ओपैक (ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटालॉग)
- सलेक्टिव डिसीमिनेशन ऑफ इन्फॉरमेशन (एसडीआई)
- करेन्ट अवेयरनेस सर्विस (कैस)
- संदर्भ एवं सूचना सेवाएं
- इन्फॉरमेशन लिटरैसी
- प्रयोक्ताओं के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम
- इंटर–लाइब्रेरी लोन (आईएलएल)
- रेप्रोग्राफी सर्विस

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय (एसईईएस)

एसईईएस टीम ने जिज्ञासा अनुसंधान 2015 में प्रतिभागिता की।

नालंदा विश्वविद्यालय के टीम को जिज्ञासा – एक लेख लेखन प्रतियोगिता के लिए चुना गया, जिसमें शैक्षणिक समुदायों छात्रों, अनुसंधान विद्वानों को पूरे बिहार राज्य में प्राथमिक अनुसंधान टूर करने तथा अपने तथ्यों के निष्कर्ष को सफेद कागज पर प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इन विषयों जिनके लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए गए थे, वे इस प्रकार थे– महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, कानून व्यवस्था, स्वास्थ्य एवं कृषि।

इस टीम का नेतृत्व डॉ. प्रभाकर शर्मा, एसिसटेन्ट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय (एसईईएस) तथा एसईईएस के 2016 बैच के तीन छात्रों श्री अंशुमान शेखर, श्री अरुण गांधी और श्री रंजीत कुमार द्वारा किया जा रहा था। इस टीम ने कृषि उद्यमी श्री प्रमोद कुमार को भी अपने टीम में शामिल किया। उनका फोकस गया जिले पर था।

इस टीम ने कृषि विषय के अन्तर्गत एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उनका कार्य राज्य में कृषि उत्पादकता को सुधारने के लिए बिहार सरकार द्वारा किए गए उपायों के प्रभावों की जांच एवं अन्वेषण करना था। उनके अनुसंधान का फोकस रणनीतियों के कार्यान्वयन में कमी तथा आगे के सुधार के लिए सुझाव प्रदान करने पर आधारित था।

जिज्ञासा, बिहार सरकार के 2015 के लिए निर्धारित 40,000 कार्यक्रमों में से एक था, जिसके द्वारा इसकी बिहार / 2025 (Bihar / 2025) कैम्पेन के लिए 4 करोड़ लोगों तक पहुंचने की अभिलाषा है। इस कैम्पेन को नीति–निर्माण में जन–भागीदारी तथा अगले 10 वर्षों के लिए राज्य के विकास पर एक विजन दस्तावेज तैयार करने को सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किया गया था।

एसईईएस ने बंसत ऋतु 2016 के लिए जीआईएस (GIS) आर्कजीआईएस (ArcGIS) को प्रारंभ किया।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय ने बंसत ऋतु 2016 के लिए सभी छात्रों के लिए जीआईएस (जियोग्राफिक इन्फॉरमेशन सिस्टम) में एक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया। यह पाठ्यक्रम किसी भी विद्यालय में प्रवेश प्राप्त सभी छात्रों के लिए एक सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में उपलब्ध था। इस पाठ्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय ने विशेष प्रबंध किए थे जिसके अन्तर्गत जीटीसी कन्सलटैन्सी से विशेष ट्यूटर को बुलाया जाना, प्रत्येक सप्ताह के अंत में छात्रों के आवासीय हॉल कम्प्युटर लैब में अभ्यास कराना शामिल था। इस पाठ्यक्रम के संयोजक–डॉ. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण थे।

ग्राफिक इन्फॉरमेशन सिस्टम इन दिनों विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग होने वाला मुख्य एप्लीकेशन है। मौजूदा डाटा का एक बड़ा भाग अब एक स्पैटियल (Spatial) तत्व है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र जीआईएस (GIS) कौशल विकसित करेंगे। इससे छात्रों को अपने प्रोजेक्ट को और अधिक आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करने एवं उसके विश्लेषण करने में सहायता प्राप्त होगी।

एसईईएस के छात्रों ने जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में लेख प्रस्तुत किए।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय के दो छात्र अविनाश मोहंती तथा कुंदन सागर ने 8 मार्च 2016 को इंटरडिसीप्लिनरी क्लाइमेट रिसर्च सेंटर (आईसीआरसी), कॉटन कालेज, गुवाहाटी तथा क्योटो यूनवर्सिटी और आईसीईडीएस कागावा यूनवर्सिटी, जापान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित जलवायु परिवर्तन पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में अपने लेख प्रस्तुत किए। उनके लेख का शीर्षक : ''विकास पर चर्चा एक यर्थाथ अथवा कल्पनाः बिहार में जलवायु परिवर्तन लचीलापन का मूल्यांकन'' था। छात्रों के लेख का मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन लचीलापन तथा आपदा प्रबंधन में आगामी सूचना संग्रह को एक्सेस करना था।

अपनी प्रस्तुतीकरण में दोनों ने पर्यावरण, सामान्य रूप से विकासशील राज्यों तथा

विशेष रूप से बिहार में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझने के लिए संभावित समग्र दृष्टिकोण प्रदर्शित किए।

गुवाहाटी में दो दिवसीय सम्मेलन 7 मार्च 2016 को शुरू हुआ जिसकी थीम– ''पूर्वोत्तर भारत में संधारणीय जलवायु सूचना एवं सहयोग को बढ़ाने के लिए जलवायु अनुसंधान की सीमाएं'' थी, तथा इसमें पूरे विश्व से शोधकर्ता तथा शोध विद्वान ने अपनी प्रस्तुति प्रदान की।

एसईईएस द्वारा क्षेत्र भ्रमण का आयोजन

काट्रिधी गांव का क्षेत्र भ्रमण – पारम्परिक सिंचाई प्रणाली का अध्ययन।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय (एसईईएस) द्वारा 14 अगस्त 2015 को काट्रिधी गांव के क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। इस क्षेत्र भ्रमण पर छात्रों का नेतृत्व डॉ. सोमनाथ बंदोपाध्याय, एसोसिएट प्रोफेसर, एसईईएस और डॉ. अभिराम शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, एसईईएस ने किया। इस क्षेत्र भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को आहर–पईन नामक दक्षिण बिहार की पारम्परिक सिंचाई प्रणाली की विशेष जानकारी प्रदान करना था।

छात्रों ने किसानों द्वारा प्रयोग में लाई जा रही कृषि पद्धति, फसल के नमूनों, सिंचाई की तकनीक तथा सम्पूर्ण समाजिक संरचना को समझने के लिए गांवों के चारो तरफ एंव खेतों का भ्रमण किया। यह अनुभव किया गया कि सिंचाई में आहर–पईने का प्रयोग अब इस क्षेत्र में कम हो गया है, वर्तमान में कृषकों द्वारा सिंचाई के लिए गांव के सामानांतर बहने वाली नहरों का प्रयोग किया जा रहा है।

छात्रों ने कृषकों एंव गांव के अन्य लोगों से कृषि की स्थिति के संबंध में कई छोटी–छोटी वार्ताएं कीं। यह देखा गया कि नहर प्रणाली, आहर–पईन का प्रयोग धान की फसल के लिए किया जाता है। 50 किमी. लम्बी इस नहर का निर्माण बिहार राज्य के पहले मुख्यमंत्री श्री कृष्णा सिंह द्वारा 1953 में किया गया था। यह नालंदा जिले में 400 गांवों को सिंचाई के लिए जल प्रदान करता है। कुछ किसान किसी दूसरी फसल के रूप में गेंहूँ की खेती करते हैं तथा उसके लिए वे ट्यूब वेल, कुएं से सिंचाई करते हैं।

छात्रों ने वहां के प्राथमिक विद्यालय का भी भ्रमण किया तथा वहां छात्रों एवं शिक्षकों से भी बात की। डॉ. अभिराम शर्मा ने उस गांव के विभिन्न सामाजिक पहलुओं पर भी चर्चा की। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्र के डाटा संग्रहण की विधियों पर अपने इनपुट प्रदान किए।

काट्रिधी गांव का क्षेत्र भ्रमण

धरानेई का क्षेत्र भ्रमण – भारत का पहला पूर्णरूपेण सौर ऊर्जा द्वारा संचालित गांव।

19 सितम्बर 2015 को पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय ने धरानेई (जहानाबाद जिला) भारत के पहले पूर्णरूपेण सौर उर्जा से संचालित गांव के एक दिवसीय क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया। ग्रीनपीस की एक परियोजना जिसमें 100 किलोवाट प्रणाली 450 घरों के 2400 व्यक्तियों, 50 व्यावसायिक संचालनों, दो विद्यालयों, एक प्राशिक्षण केन्द्र तथा एक स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधा को उर्जा प्रदान करती है।

विद्यालय के इस अग्रणी बैच ने धरानेई का भ्रमण डॉ. अविराम शर्मा के साथ पर्यावरण, प्रौद्योगिकी एवं समाज पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में किया जिसका उद्देश्य पर्यावरणीय दृष्टिकोण से परियोजना के सामाजिक एवं प्रौद्योगिकीय क्षेत्रों में संबंध स्थापित करते हुए समीक्षक के रूप में विश्लेषण करना था।

धरानेई गांव का क्षेत्र भ्रमण

साइड–पार गांव का क्षेत्र भ्रमण

डॉ. अविराम शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय ने 7 नवम्बर 2015 को मास्टर प्रोग्राम के 2017 बैच के छात्रों के लिए नालंदा जिला, बिहार के साइड–पार गांव के लिए एक दिवसीय क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया। यह क्षेत्र भ्रमण फाउन्डेशन कोर्स जिसका शीर्षक पर्यावरण था, के लिए आयोजित किया गया था। जिसका उद्देश्य सिंचाई की बदलती हुई पद्धति एवं दक्षिण बिहार में कृषि संबंध को समझना था।

साइड–पार गांव का क्षेत्र भ्रमण

घोड़ा कटोरा का क्षेत्र भ्रमण

23 सितम्बर 2015 को डॉ. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय ने एसईईएस के अग्रणी बैच जिन्होंने उनके जियोहाइड्रोलॉजी पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है, उन छात्रों के लिए एक–एक दिवसीय क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया। डॉ शर्मा के साथ छात्र घोड़ा कटोरा, राजगीर के क्षेत्र भ्रमण के लिए रवाना हुए।

घोड़ा कटोरा का क्षेत्र भ्रमण

बिहार एग्रीकल्चरल यूनवर्सिटी (बीएयू) तथा कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) का क्षेत्र भ्रमण – नूरसराय तथा हरनौत में प्रयोगशाला सुविधा का भ्रमण

पारिस्थितिक एवं पर्यावरण विद्यालय द्वारा 19 फरवरी 2016 को बिहार एग्रीकल्चरल यूनवर्सिटी, नूरसराय तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत के एक क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। यह क्षेत्र भ्रमण कोर्स के पाठ्यक्रम ''कृषि पारिस्थितिकी तंत्र (एग्रोइकोसिस्टम) प्रबंधन का परिचय'' के एक भाग के रूप में था। इस एक दिवसीय यात्रा के लिए विद्यालय से 20 छात्रों की एक टीम का पर्यवेक्षण दो संकाय संदस्यों–डॉ. बी. मोहन कुमार, प्रोफेसर एवं डीन (कार्यकारी) तथा डॉ. प्रभाकर शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर द्वारा किया जा रहा था।

क्षेत्र भ्रमण का उद्देश्य बागवानी महाविद्यालय, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, नूर सराय और कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत में क्षेत्र एवं प्रयोगशाला सुविधाओं का भ्रमण करना था, तथा विशेषकर बागवानी प्रजातियों समेत फसल उत्पादन, फसल संरक्षण एवं फसली पौधों के पौषक तत्व प्रबंधन पर प्रायोगिक एवं प्रदर्शन स्थलों का अध्ययन करना था। छात्रों को अध्यापकगण से मिलने तथा प्रयोगशाला एवं क्षेत्र इकाईयों के भ्रमण का अवसर भी प्राप्त हुआ। फसल की किस्मों, पौधो के पोषक तत्वों, जैव–उर्वरकों, हरी खादों इत्यादि के अनुसंधान एवं विकास पर नई जानकारी प्राप्त हुई। इस भ्रमण को डॉ. पी. के. सिंह, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा निर्देशित किया गया था।

भ्रमण की गई अन्य इकाइयों के अन्तर्गत–मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, प्लांट हेल्थ क्लिनिक, पौध प्रजनन और आनुवांशिकी प्रयोगशाला, उत्तक संवर्धन एवं आणविक जीवविज्ञान प्रयोगशाला और बागवानी इकाई, सुगंधित गुलाब खंड, औषधीय एवं सुगंधित पौधा खंड, संरक्षित खेती इकाई, कृमि खाद इकाई और आम, अमरूद एवं साइट्रस के बाग शामिल थे। तत्पश्चात् टीम ने कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके), हरनौत का भ्रमण किया, जहां उन्होंने वैज्ञानिकों एवं प्रशिक्षु महिला किसानों से परस्पर संवाद स्थापित किया।

नूरसराय तथा हरनौत में प्रयोगशाला सुविधा के लिए क्षैक्षिक भ्रमण

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय (एसईईएस) द्वारा सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान विधि पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त छात्रों के लिए 17 मार्च 2016 को डॉ. अविराम शर्मा असिस्टेंट प्रोफेसर एसईईएस द्वारा विश्व शांति स्तूप के एक अनुसंधान आधारित क्षैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

इस भ्रमण का उद्देश्य अपशिष्ट प्रबंधन तथा क्षेत्र निपटान पर्यटन के प्रभाव तथा पर्यटक स्थल के चारों ओर के वातावरण पर इसके प्रभाव के आकलन के लिए एक मिश्रित सर्वेक्षण आधारित अनुसंधान करना था।

इस भ्रमण के दौरान छात्रों को अनुसंधान के लिए कुछ कार्य सौंपे गए जैसे– पर्यटकों, प्रतिभागियों के साक्षात्कार एवं पर्यावरण पर्यवेक्षण तथा गुणात्मक साक्षात्कार इत्यादि।

पर्यटकों के लिए अनुकूल मौसम में इस स्थल के भ्रमण हेतु पूरे विश्व से यहां लगभग 3 लाख लोग आते हैं। पर्यटन गतिविधियों का बढ़ता हुआ दबाव चारो तरफ के वातावरण पर अपशिष्ट/पहाड़ियों पर बिखरे हुए कचरे के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह बौद्ध धार्मिक स्थल, राजगीर के वन्यजीव अभ्यारण के पास स्थित है। वन्य क्षेत्रों में अपशिष्ट निपटान यहां के निवासियों एवं जानवरों के लिए एक गम्भीर खतरे का विषय है। नालंदा विश्वविद्यालय हमेशा से अपने चारो ओर के स्थलों पर पहुंचने के लिए फोकस रहा है, तथा उनके संधारणीय विकास में योगदान दिया है। छात्रों के इस टीम द्वारा किए गए अनुसंधान से अपशिष्ट/वर्तमान में कचरे के निपटान परिदृश्य एवं विभिन्न कारकों जिनसे निपटान परिदृश्य में सुधार लाया जा सकता है, पर एक संक्षिप्त विवरण प्राप्त होता है।

विश्व शांति स्तूप का शैक्षणिक भ्रमण

एसईईएस के संकाय सदस्यों की गतिविधियां

संगोष्ठी/सम्मेलन/लेख प्रस्तुतिकरण/ प्रशिक्षण कार्यशाला/पैनेल के सदस्य अथवा विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभागिता

cnkik/;k;] lkeukFk 24–25 नवम्बर 2015 को टी.एम. भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा ''संरक्षित क्षेत्रों में जैवविविधता संरक्षण की प्रणाली एवं उपकरण'' पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में एक मुख्य वक्ता थे। ''जैवविविधिता संरक्षण के लिए एक उपकरण के रूप में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का मूल्यांकन'' नामक लेख का उनकी प्रोसीडिंग में प्रकाशन। इन्होंने एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता भी की।

cnkik/;k;] lkeukFk u ch- ekgu dekj के साथ ''वन्य एवं प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की नीति एवं कार्यक्रम : बदलती जलवायु के अन्तर्गत इसे अपनाने के प्रभाव'' पर 6 नवम्बर 2015 को पटना में बिहार राज्य पर्यावरण एवं वन विभाग (पर्यावरण, वन और जलवायु मंत्रालय, भारत सरकार एवं डीएफआईडी– सीसीआईपी के संयुक्त तत्वाधान में) द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागिता की।

cnkik/;k;] lkeukFk को 27 फरवरी 2016 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, लखनऊ (नोएडा परिसर) में '' विकास एवं संरक्षण मुद्दों के लिए व्यावहारिक उदाहरणों के साथ निर्णय लेने एवं तालमेल स्थापित करने में पारिस्थितिकीय अर्थव्यवस्था एवं इसकी क्षमता'' शीर्षक पर व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया।

cnkik/;k;] lkeukFk ने 29–30 मार्च 2016 के दौराण श्री अरविंदो महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ''विकासशील देशों की संधारणीयता के लिए उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं एवं चुनौतियां'' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'संरक्षण को विकास योजना में एकीकृत करने के लिए पारिस्थितिकीय अर्थव्यवस्था'' शीर्षक पर अपना व्याख्यान दिया।

Hkêkpk;] lk;u ने 25–27 अप्रैल 2016 को इंडोनेशिया विश्वविद्यालय जकार्ता में ''प्रथम एशियाई शोधकर्ता संगोष्ठी'' में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

Hkêkpk;] lk;u ने (5–7 अक्टूबर 2015) को नई दिल्ली में जैव प्रौद्योगिकी विश्व कांग्रेस में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj ने 11–13 मार्च 2016 को, विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ''वैश्विक विधिक शिक्षा : शिक्षण एवं शोध की सर्वोत्तम प्रणाली'' पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ''विधिक शिक्षा के पुनरुद्धार में शोध की प्रासंगिकता'' पर लेख प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj ने 12–14 फरवरी 2016 को विधि केन्द्र परिसर विधि संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ''जैवविविधता का संरक्षण'' एवं संधारणीय उर्जा : विधि एवं प्रणाली'' पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ''भारत में लाभ में साझेदारी एवं पहुंच पर नागोया प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन के मुद्दे एवं चुनौतियां'' पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj 20 जनवरी 2016 को झारखंड राज्य, रांची के कनिष्ठ स्तर के वन अधिकारियों के लिए ''पर्यावरण संरक्षण एवं न्यायिक हस्तक्षेप'' पर आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए तथा ''भारत में पर्यावरणीय विधियां एवं पर्यावरणीय न्यायविज्ञान'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj 21 जनवरी 2016 को झारखंड राज्य, रांची के वरिष्ठ स्तर के वन अधिकारियों के लिए ''पर्यावरण संरक्षण एवं न्यायिक हस्तक्षेप'' पर आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए, तथा ''भारत में वन विधियां एवं पर्यावरणीय न्यायविज्ञान'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj 15–16 अक्टूबर 2015 के दौरान, भोपाल में मध्य प्रदेश जैवविविधता बोर्ड, भोपाल द्वारा मध्यप्रदेश के वन अधिकारियों के लिए जैवविविधता संबंधी मुद्दे पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए तथा ''वन अधिकारियो द्वारा जैवविविधता एवं उसके कार्यान्वयन संबंधी विधिक प्रावधान'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

y{e.ku] i"idekj ने 15–18 दिसम्बर 2015, नेशनल लॉ यूनवर्सिटी, नई दिल्ली, भारत में ''बौद्धिक सम्पदा एवं लोकहित पर चौथे विश्व कांग्रेस'' में चर्चा प्रतिभागी के रूप में प्रतिभागिता की।

y{e.ku] i"i d|ekj 19 दिसम्बर 2015 को भुवनेश्वर में ओडिशा जैवविविधता बोर्ड द्वारा ''शोध वैज्ञानिकों के लिए जैविक विविधता संबंधी अधिनियम एवं नियम'' पर आयोजित एक–दिवसीय संवेदीकरण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए।

ekgu d|ekj] ch- ने 15–17 अगस्त 2015, युनाइटेड नेशनल यूनवर्सिटी, एशिया प्रशांत क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय मूल्यांकन पर ''इंटरगवर्नमेंटल प्लेटफार्म ऑन बायोडाईवर्सिटी एंड इकोसिस्टम सर्विसेज (आईपीबीईएस) फर्स्ट लीड आथर्स'' मीटिंग में प्रतिभागिता की।

ekgu d|ekj] ch- 8–10 अक्टूबर 2015 को एनएएससी कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली, भारत में ट्रस्ट फॉर एडवांसमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (टीएएएस), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), वर्ल्ड एग्रोफॉरेस्टी सेंटर (आईसीआरएएफ), इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रोफॉरेस्ट्री एंड एशिया पैसिफिक एसोशिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टि्टूयट (एपीएएआरआई) द्वारा आयोजित ''कृषिवानिकी पर क्षेत्रीय परामर्श : भविष्य का पथ (कृषिवानिकी में नये ज्ञान का दोहन तथा 2016 के पश्चात् विकास कार्य सूची)'' में एक पैनल सदस्य के रूप में उपस्थित रहे।

ekgu d|ekj] ch- 5–9 अक्टूबर 2015, केरल वन अनुसंधान संस्थान पीची 680653 त्रिशूर, केरल में भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए शहरी जैवविविधता एवं पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए हरित स्थल प्रबंधन पर एक सप्ताह के अनिवार्य प्रशिक्षण में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए तथा 6 अक्टूबर 2015 को शहरी परिदृश्य में हरित स्थलों एवं संबंधित जैवविविधता के प्रबंधन के लिए कृषिवानिकी प्रणाली पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

ekgu d|ekj] ch- ने 6 नवम्बर 2015 को बिहार राज्य पर्यावरण एवं वन विभाग, पटना द्वारा ''वन एवं प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र नीति एवं कार्यक्रम : बदलती जलवायु के अधीन अनुकूलता पर प्रभाव'' पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागिता की।

ekgu d|ekj] ch- ने 16–20 नवम्बर 2015, एनएएससी, नई दिल्ली में ''जलवायु लचीली कृषि के लिए स्मार्ट पद्धति'' पर सार्क क्षेत्रीय प्रशिक्षण में एक संसाधित व्यक्ति के रूप में प्रतिभागिता की, तथा 19 नवम्बर 2015 को ''कृषिवानिकी की पारिस्थितिकीय तंत्र सेवाएं'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

'kek] vfHkjke ने 23–25 फरवरी 2016 यूनवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके पीर रिव्यूड कान्फ्रेंस में ''दक्षिण बिहार में बदलती सिंचाई पद्धति एवं उभरती संधारणीयता की चुनौती : नीति एवं पद्धति के बीच एक संवाद,'' प्रतियोगीग्रस्त कृषि : परिदृश्य, मामले एवं प्रभाव, पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

'kek] vfHkjke ने 27 जनवरी 2016 को स्टेप्स (STEPS) सेंटर, यूनवर्सिटी ऑफ ससेक्स तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा ''शहरी सुविधाएं जोखिम एवं प्रतिक्रियाएं'' के नीति प्रभाव पर कार्यशाला में चर्चा करने के लिए एक सदस्य के रूप में उपस्थित हुए।

'kek] vfHkjke 29–30 जनवरी 2016 को साउथ एशिया सस्टेनविलिटी हब तथा नॉलेज नेटवर्क (SASH & KN) जेएनयू स्टेप्स (STEPS) सेंटर तथा एसीपीआरयू, यूनवर्सिटी ऑफ ससेक्स यूके, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यकारी समूह के लिए चर्चा करने के सदस्य के रूप में उपस्थित हुए।

'kek] vfHkjke 28–30 जनवरी 2016 को भूगोल विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता (सारादिंदू भादूरी तथा नाजिया तलत के साथ) में शहरीकरण तथा क्षेत्रीय सधारणीयता पर क्षेत्रीय विज्ञान संघ के 47 वें वार्षिक सम्मेलन में ''शहरी भारत में पीने योग्य जल की शुद्धता प्रौद्योगिकियों का विकास : एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पर अपना व्याख्यान, प्रस्तुत किया।

'kek] vfHkjke द्वारा 23–25 सितम्बर 2015 (पीररिव्यूड कॉन्फ्रेंस) को 13वें ग्लोबेलिक्सि (Globelecs) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, हवाना में ''प्रौद्योगिकी, मानक, एवं सहायक संस्थान : भारत में बोतलबंद उद्योग में जल की शुद्धीकरण प्रौद्योगिकी की एक विकासवादी विश्लेषण'' पर पोस्टर प्रस्तुतीकरण।

'kek] iHkkdj ने 2016 में नैनोपार्टिकल पर सिंगापुर में ''पर्यावरण में नैनोमैटेरिअल'' ईएमएन मीटिंग में भाग लिया।

'kek] iHkkdj ने 2016 में भारतीय विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान मोहाली में ''मिट्टी पर्यावरण में नैनोमैटेरिअल'' परं आयोजित व्याख्यान में भाग लिया।

टीसैंग सी.एफ., रॉसवर्ग जे.ई., 'kek ih-, नियेमी ए. तथा जुलियन सी. ने वर्ष 2016 में ईजीयू जनरल ऐसम्बली, वियाना, आस्ट्रिया में ''हाईड्रोजियोलॉजिक टेस्टिंग ड्यूरिंग ड्रिलिंग ऑफ कॉस्क–1 (Cosc-1) बोरहोल : एप्लीकेशन ऑफ ईएफएफईसी लॉगिंग मेथड'' में प्रतिभागिता की।

'kek] iHkkdj ने वर्ष 2015 में राधा शान्ता कॉलेंज, तिलोथू, बिहार, भारत में ''साझा जल संसाधन : विरोध एवं सहयोग'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

फेगरलुंड, एफ., एम. हेदायती, जे.एम. मायोट्टी, तथा ih- 'kek ने वर्ष 2015 में ग्रुंडवाट्टेनडागार्ना, स्वीडिश भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण, स्टॉकहोम, स्वीडन में ''मिट्टी एवं घुलनशील कार्बनिक पदार्थ द्वारा प्रभावित नैनोपार्टिकल के साथ भूजल का परिवहन'' में भाग लिया।

फेगरलुंड, एफ., एम. हेदायती, जे. एम. मायोट्टी तथा ih- 'kek ने वर्ष 2015 में इंटरपोर, इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ पोरस मीडिया, पाडोवा, 2.040 ''सैचुरेटेड पोरस मीडिया में TiO_2 नैनोपार्टिकल के प्रतिधारण एवं परिवहन पर कार्बनिक पदार्थ का प्रभाव'' में भाग लिया।

बासिरत, एफ., एच. पेर्राउड, जे. डेंचिक, जी. लाड्स एफ फेगरलुंड, ih- 'kek, पी. पेजार्ड, तथा ए. नाईमी, 2015 ''मैग्युएलोन, फ्रांस में शैलो इंजेक्शन मॉनीटरिंग प्रयोग क्षेत्र में मॉडलिंग गैस परिवहन की व्यावहारिकता।''ईजीयू जनरल असेम्बली, वियाना, आस्ट्रिया, ERE5.2, EGU 2015–15224

फेगरलुंड एफ,एम. हेदायती, ih- 'kek, तथा डी. कात्याल, 2015 ''सैटुरेटेड पोरस मीडिया में कार्बन आधारित नैनोपार्टिकल का परिवहन'' ईजीयू, जनरल असेम्बली, वियाना आस्ट्रिया, HS8.1.6, EGU 2015.1073

टीसैंग, सीएफ, जे. ई. रोजवर्ग, ih- 'kek, ए. नाईमी, तथा सी. जुहलिन. 2015 ''कॉस्क 1(COSC-1) बोहोल के ड्रिलिंग के दौरान हाइड्रोजियालॉजिक परीक्षण : ईएफईसी लॉगिंग विधि का अनुप्रयोग ''ईजीयू, जनरल असेम्बली, वियाना आस्ट्रिया, ERE1.6 EGU 2015-4414.

लोकप्रिय लेख/मीडिया/ सम्मेलन छवि

cnkik/;k;] lkeukFk आमंत्रित ब्लॉग का प्रकाशन–'डाउट्स डॉग टॉयलेट बिल्डिंग कैम्पेन' फॉर दि सेंटर फॉर साइंस एंन्वाइरन्मेन्ट (सीएसई), नई दिल्ली, कृपया देखें

http://www.downtoearth.org.in/author/somnath-bandopadhyay-81292

lk;u Hkêkpk;l ने 14 मार्च 2016 को अपराह्न 4 बजे से 5 बजे तक डीडी वसुंधरा प्रोग्राम, दूरदर्शन (प्रसार भारती) में 'जल प्रदूषण एवं उसके उपचार' पर एक विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

Hkêkpk;l , l- दत्ता पी., शोम, ए., बनर्जी, ए., पुरकैट, डी., घोष, यू.सी. 2015 'उत्तरी बंगाल, भारत में अवस्थित दो पारिस्थितिकीय रूप से संवेदनशील पर्वतीय गांवों का जल–भू–रासायनिक अभिलक्षणन' नई दिल्ली जैवप्रौद्योगिकी विश्व कांग्रेस की प्रोसीडिंग (5–7 अक्टूबर 2015), pp. 338.

Hkêkpk;] , l-, मोहन कुमार, बी. तथा अरूणाचलम, ए. 2015 ''भविष्य के लिए बीज बोना : कृषि के उत्थान के लिए एक पहल का विवरण'' रोजगार समाचार 30 मई 2015 p1 एंड 64शोम, ए. मजूमदार, जी., दत्ता, ए.,– बनर्जी आर. 2015 ''दार्जलिंग जिला, पश्चिम बंगाल, भारत में पारिस्थितिकीय रूप से महत्वपूर्ण जंगली गांव का पर्यावरणीय, आर्थिक एवं कृषि सर्वेक्षण'' नई दिल्ली भारत में जैव प्रौद्योगिकी विश्व कांग्रेस की प्रोसीडिंग (5–7 अक्टूबर 2015), pp. 187.

'kek] vfHkjke, ''क्यों भारत के शहरी शोधकर्ताओं को मेगासिटी के इतर जाने की आवश्यकता है?'' LVl l STEPS lVj Cykx यूनवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके–फरवरी 2016

शोधलेख / अन्तर्राष्ट्रीय पीर रिव्यूड जर्नल में लेख प्रकाशन

Hkêkpk;] lk;u ½2016½ ''विकासशील देशों में जल संकट एवं मानवाधिकार के बदलते परिदृश्य एवं पारस्परिक चर्चा'', वर्ल्ड साइंटिफिक न्यूज 34: 86-97 (ISSN:2392-2192).

Hkêkpk;] lk;u, रिम्पा मैती, गौर सरकार, गौतम घोष देबाश्री मुखर्जी तथा चंद्रामयी मुखोपाध्याय (2016) ''बुक्सा टाइगर रिजर्व पश्चिम बंगाल, भारत में पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण जंगल के किनारे बसे गांव का सामाजिक आर्थिकी सर्वेक्षण'', इंटरनेशनल लेटर्स ऑफ नैचुरल साइंसेज, Vol. 52: 67-83. (ISSN: 2300-9675).

कित्तूर, बी.एच., सुधाकर, के., ekgu dqekj] ch., कुन्हामू, टी.के., तथा सुरेश कुमार, पी. 2015 ''केरल, भारत में बांस आधारित कृषिवानिकी : सात वर्ष पुराने बांस के स्टैंड द्वारा अलग किए गए स्थलों के उप मंडल में हल्दी (कर्कुमा लोंगा एल.) का निष्पादन, कृषिवानिकी प्रणाली, फर्स्ट ऑनलाइन 8 अक्टूबर 2015. DOI 10.1007/s10457-015-9849-z.

ठाकुर, एस., ekgu dekj] ch- तथा कुन्हामू, टी. के. 2015 ''कोर्स रूट बायोमास, कार्बन, तथा न्यूट्रीएन्ट स्टॉक डायनामिक्स ऑफ डिफरेन्ट स्टेम एंड क्रांउन क्लासेज ऑफ सिल्वर ओक (ग्रेविलिया रोबस्टा ए. कून्न. ई एक्स.आर. बीआर.) मध्य केरल, भारत में वृक्षारोपण'' कृषि वानिकी का प्रणाली, 89 (5): 869-883. DOI: 10.1007/s10457-015-9821-y

'kek] vfHkjke 2015, ''शहरी जल प्रावधान का संधारणीय एवं सामाजिक समावेशी विकास : पटना का एक मुद्दा'', पर्यावरण और शहरीकरण एशिया 6(1), 28–40 (सेज पब्लिकेशन)

टीसैंग, सी.एफ., जे. ई. रोजबर्ग, ih- 'kek, सी. जुलियन, तथा ए. नाईमी. 2016 ''ड्रिलिंग के दौरान हाइड्रोलॉजिकल परीक्षण : गहरे बोरहोल के ड्रिलिंग के लिए फ्लोइंग फ्लूइड, इलेक्ट्रिक कन्डक्टीविटी (FFEC) लॉगिंग विधि का अनुप्रयोग'', हाइड्रोजियोलॉजी जे 24 : 1333–1341

हेदायती, एम., ih- 'kek, डी. कात्याल, तथा एफ. फेगरलुंड 2016 ''सैचुरेटेड पोरस मीडिया के द्वारा कार्बन आधारित इंजीनियर्ड तथा नैचुरल नैनोपार्टिकल का परिवहन एवं प्रतिधारण'', जे नैनोपार्टिकल आरईएस. 18: 57, doi: 10.1007/s11051-016-3365-6.

'kek] ih-, एफ. फेगर लुंड, यू. आईवेरफेल्डट, तथा ए. एसकेबाईक 2016 ''उप सतह प्रणाली में अग्नि जनित पार्टिकल का फेट (Fate) तथा परिवहन'' टैक्नोलॉजीज, 4, 2; doi: 10.3390 / टैक्नोलॉजीज 4010002 doi:10.3390/ technologies 4010002

'kek ih-, सी. एफ. टीसैंग, आई.टी. कुक्कोनेन, तथा ए. नाईमी, 2016 ''ऑटोकोम्पू, फिनलैण्ड में गहरे ड्रिल होल की हाइड्रोलिक संरचना के मूल्यांकन के लिए छः वर्षीय फ्लूइड इलेक्ट्रिक कंडक्टीविटी का विश्लेषण'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्थ–साइंसेज, 105 : 1549–1562

'kek] ih-, 2015 ''पारिस्थितिकीय एवं मृदा पर्यावरण में नैनोपार्टिकल से खाद्यपदार्थ की पैकेजिंग और वाणिज्यिक उत्पाद'' करेन्ट साइंस, 109 : 1223–1224

बासिरत, एफ., पी. शर्मा, एफ. फेगरलुंड, तथा ए. नाईमी, 2015 ''पोरस मीडिया के दोहरे क्षेत्र तथा फ्री–फ्लो में CO_2 फ्लो और ट्रांसपोर्ट के प्रायोगिक और प्रतिरूपक अन्वेषण'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ग्रीनहाउस गैस कंट्रोल, 42 : 461–470

पुस्तक अध्याय

Hkêkpk;] , l-, ''भारत के दार्जलिंग जिले में जंगल के किनारे बसे पर्वतीय गांव का सामाजिक–पर्यावरणीय सर्वेक्षण तथा संधारणीय प्रबंधन'' पहले एशियाई शोध संगोष्ठी की प्रोसीडिंग, इंडोनेशिया विश्वविद्यालय, जकार्ता, इंडोनेशिया (25–27 अप्रैल, 2016), pp. 549-564. ISBN No. 978-979-8972-63-8.

y{e.ku] i"idekj, अलाइस स्कीपर, ब्रायन हाईस, 2016 ''शाउन स्टार (ईडी.) आस्ट्रेलिया तथा भारत में पर्यावरणीय विधि : विधि एवं विधिक अभ्यास का तुलनात्मक अवलोकन, यूनवर्सल लॉ पब्लिकेशन तथा लेक्सिस–नेक्सिस, नई दिल्ली, ISBN978-93-5035-625-8.

y{e.ku] i"idekj] ''लाभ में साझेदारी एवं पहुंच पर नगोया प्रोटोकाल के प्रकाश में जैविक विविधता अधिनियम 2002 के बारे में पूछताछ'' जर्नल ऑफ लॉ टीचर्स ऑफ इंडिया, 6 JLT-I (2015) pp. 35-55. ISSN 2231-1580.

y{e.ku] i"idekj, 2016 ''भारत में जैविक विविधता एवं इसके प्रोटोकॉल पर कन्वेंशन का कार्यान्वयन'' पारंम्परिक अंतर्राष्ट्रीय विधिक आदेश में भारत की अवस्थिति, बुर्रा श्रीनिवास तथा राजेश कुमार द्वारा संपादित, स्प्रिंगर पब्लिकेशन, नई दिल्ली (आगामी 2016 के लिए स्वीकृत)

y{e.ku] i"idekj तथा शांची सिंह ''विधिक शोध विधि में सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण विधिक शोध को प्रोत्साहन'' इंडियन लॉ इंस्टिट्यूट (आईएलआई) नई दिल्ली, (आगामी 2016 के लिए स्वीकृत)

क्लाउज बॉशलमैन तथा i"idekj] y{e.ku] ऊर्जा एवं विधि में ''एक वैश्विक कॉमन्स के रूप में वायुमंडल तथा नये उर्जा, विकल्पों के द्वारा इसकी सफाई'' डॉ. ऊषा टंडन द्वारा सम्पादित, ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस (आगमी 2016 के लिए स्वीकृत)

y{e.ku] i"idekj, मोहन कुमार, बी. 2016 ''मृदा जैवविविधता : सूची प्रकार्य एवं प्रबंधन में ''होमगार्डन के हारबिंगर्स के रूप में आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भूमिगत जैवविविधता'' के. जी. सक्सेना तथा के. एस. राव (ईडीएस) बिशेन, सिंह, महेन्द्रपाल सिंह देहरादून, pp 173–182 शाची सिंह, एस. अस्ता लक्ष्मी, ''भारत में जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता'', जर्नल ऑफ क्लाईमैट चेंज, आईओएस प्रेस, खंड 3 अंक 1 (आगामी दिसम्बर 2016 के समीक्षाधीन)

'kek] vfHkjke तथा हार्वे मार्क, 2015 ''विभाजित दिल्ली : ब्राइकोलेज इकोनॉमी तथा संधारणीयता संकट'', इन मार्क हार्वे, पीने योग्य जल : ऐतिहासिक एवं सामाजिक विभिन्नता का सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण, राउटलेज, लंदन, यूके.

संपादकीय, समीक्षा, संदर्भ तथा अन्य कार्य

ekgu dqekj] ch-, सह–संपादक, कृषि वानिकी प्रणाली, स्प्रिंगअर साइंस नीदरलैंड द्वारा प्रकाशित अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल।

ekgu dqekj] ch-, सह संपादक, ''कृषि पारिस्थितिकी और भूमि उपयोग प्रणाली में सीमाएं (फ्रंटिअर इंन एन्वाइरन्मेन्टल साइंस), नेचर पब्लिशिंग ग्रुप, लुसाने, स्वीटजरलैण्ड।

ekgu dqekj] ch-] सदस्य, सलाहकार संपादकीय बोर्ड, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ, इकोलॉजी, एंड एन्वाइरन्मेंन्टल साइंसेज, नेशनल इंस्टि्टूयट ऑफ इकोलॉजी, नई दिल्ली, अग्रिविता, जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल सांइसेज, ब्रावीजया, यूनवर्सिटी, इडोंनेशिया द्वारा प्रकाशित।

ekgu dqekj] ch-] अग्रणी लेखक ''2b डिलिवरेबल्स के लिए इंटरगवर्नन्मेंटल साइंस–पॉलिसी ऑन बायोडाइवर्सिटी एंड इकोसिस्टम सर्विसेज (IPBES) एशिया प्रशांत क्षेत्र में जैवविविधता तथा पारिस्थितिकी सेवाओं का क्षेत्रीय मूल्यांकन।

ekgu dqekj] ch-] समीक्षक ''वन पारिस्थितिकी एवं प्रबंधन, कृषि, पारिस्थितिकी तंत्र तथा पर्यावरणीय कृषि प्रणाली, कृषि वानिकी प्रणाली,'' बायोट्रोपिया।

ekgu dqekj] ch-] केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर (मार्च 2016) के प्रमाणन के लिए पीर रिव्यूड टीम के सदस्य।

'kek] iHkkdj] संपादकीय मंडल सदस्य : पर्यावरणीय विज्ञान की सीमा, करेन्ट साइंस एन्वाइरन्मेंट।

'kek] iHkkdj] सहायक संपादक, विश्व विज्ञान पर्यावरण

सम्मान/राष्ट्रीय स्तर की समितियों की सदस्यता

y{e.ku] i"idqekj] सदस्य, मौजूदे एबीएस अनुबंध के संसोधन की विशेषज्ञ समिति नेशनल बायोडाईवर्सिटी अथॉरटी (एनबीए), पर्यावरण, वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार– 2015–16

y{e.ku] i"idqekj] सदस्य, ^^ekSfldrk jk"Vªh; lxgky; dk iqdk;ksa dh leh{kk rFkk bldk fo'ks"k vf/kn'k ,oa dk;Z fn'kk&funsZ'k dk fodfIr djus ds fy, lxgky; gsrq iznÑr e[; fo'ks"kK**, दि नेशनल बायोडाई वर्सिटी अथॉरिटी, पर्यावरण वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार – 2015

y{e.ku] i"idqekj] फैकल्टी असोशीएट, ''वर्कमैन सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसायटी'' हार्वर्ड लॉ स्कूल, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, यूएसए, 2015–16,

y{e.ku] i"idqekj, संस्थापक संयोजक, ग्रीन फलब्राइटर्स फोरम, भारत।

अनुदान (आवेदन, प्राप्त, सम्मानित) वर्तमान में जारी

y{e.ku] i"idqekj] विशेषज्ञ परामर्शदाता, ''आईएससीबी के द्वारा विकसित उत्पादों के संबंध में देयता एवं पर्याप्त मानकों पर पृष्ठभूमि नीति पत्र तैयार करने के लिए'' इंडो–स्विस कलैबरेशन इन बायोटैक्नालॉजी (आईएससीबी) तथा डिपार्टमेन्ट ऑफ बायोटैक्नालॉजी (डीबीटी), भारत सरकार, नई दिल्ली, 2016 (जारी) द्वारा आयोजित भारत स्विटजरलैण्ड सहयोग परियोजना, कन्सल्टैंसी राशि INR 3,90,000/-

'kek] vfHkjke] परिवहन अनुदान, कन्टेस्टेड एग्रोनॉमी कान्फ्रेंस, यूनवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके. फरवरी 2016 के लिए

'kek] vfHkjke] परिवहन अनुदान, 13वें ग्लोबेलिक्स इंटरनेशनल कांन्फ्रेस, 23–25 सितम्बर 2015 के दौरान, हवाना क्यूबा के लिए।

ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय (एसएचएस)

इतिहास कल्पना, अतीत लेखन : ऐतिहासिक अध्ययन संकाय द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय में एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन।

नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) के ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय द्वारा, 11 तथा 12 मार्च को राजगीर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, राजगीर में पहले अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पूरे विश्व से आए कला इतिहास, नृविज्ञान, पुरातत्व, इतिहास, विजुअल स्ट्डीज, राजनीतिक सिद्धांत और समाजशास्त्र के विद्वानों के परस्पर संवाद के लिए एक मंच प्रदान किया। इस दो दिवसीय कार्यशाला के लिए एनयू ने ईआई कालेजियो डि मैक्सिको, मैक्स वेबर कालेग फॉर एंडवांस सोसल रिसर्च जर्मनी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तथा सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंस, कोलकाता से वक्ताओं को आमंत्रित किया था। इस कार्यशाला में एनयू के संकाय सदस्य एवं छात्रों ने भी अपने लेख प्रस्तुत किए। कार्यशाला का उद्देश्य एशियाई परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक विचारों का आलोचनात्मक रूप से पुनः परीक्षण करना, एशिया के संदर्भ में इतिहास से क्या तात्पर्य है?, क्या स्थानीय एवं क्षेत्रीय इतिहास स्वयं को व्यापक स्तर पर सम्पूर्ण एशिया में स्थापित करते हैं? ऐतिहासिक एवं दार्शनिक संदर्भ में एशियाई संस्कृति में किस प्रकार की इतिहास लेखन परम्परा थी, और वर्तमान में चलती आ रही है? कौन–सी विभिन्न शैलियां (लिखित, दृश्य और मौखिक) हैं, जिनमें इतिहास को रचा गया है? किन तरीकों से इतिहास की रचना एवं संचरण विभिन्न प्रकार के कौशल एवं व्यवहारों को उत्पन्न करती हैं। कौन वास्तव में विभिन्न इतिहासों का अभ्यासकर्ता, लेखक, कलाकार तथा निष्पादक है। कार्यशाला में एशिया के संबंध में इतिहास लेखन की विभिन्न शैलियों एवं इसके विभिन्न प्रारूपों यथा–साहित्य, लोक साहित्य, तथा दृश्यात्मक प्रतिनिधित्व जैसे–कल्पना में विभिन्न प्रयोग करना, पर केन्द्रित करते हुए इन प्रश्नों पर चर्चा की गई। इसमें उन व्यक्तियों जो ऐसे वर्णनों में लेखन, वाचन, प्रदर्शन तथा देखने, सुनने एवं बताने के कार्य से सम्बद्ध हैं के द्वारा सुनिश्चित किए गए पारिभाषिक शब्दावली के विषय पर प्रकाश डाला गया। ऐसा करते हुए कार्यशाला में लिखित इतिहास, मौखिक वृतांत, दृश्यात्मक प्रतिनिधित्व, साहित्यिक प्रारूपों तथा उन संदर्भों के बारे में जो इतिहासकार अपने पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं को प्रेषित करते हैं, पर विशेष ध्यानाकर्षण किया गया। ऐतिहासिक अध्ययन संकाय के प्राध्यापकों के प्रयास से कार्यशाला को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, कार्यशाला के संयोजक के रूप में प्रो. आदित्य मलिक, डॉ. सैमुअल राइट तथा डॉ रानू रायचौधुरी थे। कार्यशाला की शुरूआत 11 मार्च को डॉ गोपा सभरवाल, कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय के स्वागत सम्बोधन से हुई।

कार्यशाला में प्रत्येक लेख प्रस्तुतिकरण के पश्चात् एक चर्चा आयोजित की जाती थी जिसमें श्रोताओं, उपस्थित व्यक्तियों एवं वक्ताओं द्वारा प्रश्न पूछे जाते थे। प्रत्येक दिवस के अंत में एक गोलमेज चर्चा का आयोजन भी किया जाता था। दोनों दिन चर्चा सत्र के दौरान चयनित छात्रों के समूह द्वारा उस दिन के प्रस्तुतिकरण से उभरने वाले महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक रूप से प्रश्न पूछे गए। दूसरे दिन अनिर्बान महापात्रा द्वारा निर्देशित एक लघु–फिल्म फॉलोइंग दि बॉक्स (2015, इंडिया यूएसए, 26 मिनट) की स्क्रीनिंग की गई। अगले दिन कुछ आमंत्रित प्रतिभागी विश्वविद्यालय के एक गाइड के साथ नालंदा खंडहरों के साइट–भ्रमण के लिए निकले।

अपने पहले अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में बड़ी सफलता प्राप्त करने के पश्चात् नालंदा विश्वविद्यालय अगले वर्ष इसी प्रकार की कार्यशाला एवं भविष्य में अन्य सम्मेलनों के आयोजन की योजना बना रहा है। विद्यालय इस कार्यशाला में प्रस्तुत किए गए लेखों को एक खण्ड में प्रकाशित करने की योजना भी बना रहा है।

इतिहास कल्पना, अतीत लेखन : ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय में एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

पटना संग्रहालय तथा बौद्ध स्मृति उद्यान

डॉ श्रमन मुखर्जी ने 11 अप्रैल 2015 को अपने पाठ्यक्रम– ''दक्षिण एशिया का अवलोकन : स्थल एवं साधन'' के लिए ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) द्वारा प्रस्तावित कोर्स के एक भाग के रूप में पटना संग्रहालय के क्षेत्र–भ्रमण का आयोजन किया। उनके साथ उनके पाठ्यक्रम में नामित छात्र, प्रतिष्ठित अतिथि–व्याख्याकार प्रो. मैक्स डीग, तथा डॉ. गोपा सभरवाल, कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय उपस्थित थीं। इस भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को संग्रहालय गैलरी के दोहरे–आशय के निर्माण के बारे में व्यावहारिक विवरण से अवगत कराना था। छात्रों में यह देखा कि किस प्रकार गैलरी का निर्माण आगुन्तकों की दृश्यता अपील को बढ़ाने के लिए ही नहीं किया गया, अपितु डिसप्ले सेटिंग के प्रबंधन द्वारा एक विशेष वृतांत पर केन्द्रित करने के लिए किया गया है। यह छात्रों के लिए अत्यंत अनिवार्य होता है कि उन्हें उनके पाठ्यक्रम में पढ़ाए जा रहे विषयों से संबंधित वस्तुओं को प्रत्यक्ष देखने का अवसर प्रदान किया जाए।

भारत की मोना लीजा, दीदारगंज याक्षी, पटना संग्रहालय में अपने स्थान पर गौरान्वित रूप से परिलक्षित हो रही थीं। इसका अध्ययन केवल कला–इतिहास की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु इसकी क्यूरेटोरियल गतिविधियां जो सदैव इसके साथ जुड़ी हुई हैं का अध्ययन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस मूर्ति की भारत की एक उत्कृष्ट कला वाहक के रूप में स्मिथसोनियन इंस्टिट्यूट तथा नैशनल गैलरी ऑफ आर्ट, वांशिगटन डी.सी. की यूएसए. समेत कई देशों में भ्रमण के दौरान प्रदर्शनी लगायी गई, भ्रमण में परिवहन के दौरान मूर्ति में छति पहुंचने के कारण इसे पटना संग्रहालय में स्थापित करने के पश्चात् इसके भ्रमण प्रदर्शनी पर रोक लगा दी गई। इसके वावजूद दुनियाभर के संग्रहालय निरीक्षकों के लिए यह एक आकर्षण का केन्द्र है। इस प्रसिद्ध प्रतिमा को पटना संग्रहालय में बिना कांच की सुरक्षा में रखे जाने का काफी विरोध हुआ। एक संग्रहालय विशेषज्ञ के शब्दों में ''पटना संग्रहालय के भ्रमण के दौरान मैंने यह देखा कि कला का एक अत्यंत उत्कृष्ट नमूना दीदारगंज याक्षी जो विश्व के किसी भी संग्रहालय के लिए एक ईर्ष्या का विषय हो सकता है को अन्य सामान्य मूर्तियों की तरह आगन्तुकों को छूने एवं इसकी चिकनाई का अनुभव करने के लिए रखा गया है।'' शायद इस प्रतिक्रिया पर बिहार सरकार ने इस मामले पर अपना ध्यानाकर्षण किया तथा याक्षी को उस नये स्थान पर शिफ्ट करने की योजना चल रही है जहां इसे इसकी प्रसिद्धि के अनुरूप बेहतरीन तरीके से सुसज्जित रूप में प्रदर्शित किया जा सके। पटना संग्रहालय में अन्य महत्वपूर्ण चीजों में बुद्ध के अवशेष हैं जिसको वैशाली, बिहार के स्तूप से निकाला गया था तथा 1972 से इस संग्रहालय में रखा गया है। इन अवशेषों के दर्शन के लिए देश से आए आगन्तुकों के लिए 100 रूपए तथा विदेशी आगन्तुको के लिए 500 रूपए का टिकट निर्धारित किया गया है। सुरक्षा प्रबंधकों के साथ आगन्तुकों की प्रसिद्ध अवशेष वाले कमरे में जहां इसके संरक्षण के लिए तापमान एवं नमी का समन्वय बनाया गया है, दर्शन कराया जाता है। इस कमरे की 24 x 7 के अधीन सीसीटीवी से निगरानी की जाती है। प्रकाश एवं बैठने की व्यवस्था इस प्रकार की गई है जिससे कि दर्शक पवित्र अवशेषों के साथ अपनी सम्बद्धता बनाए रखें। हालांकि आगन्तुक केवल कास्केट को देख सकते हैं। अवशेषों को नहीं क्योंकि कास्केट कांच के एक विशेष घेरे में रखा गया है एवं लॉक से उसे सील किया गया है। यह संग्रहालय किसी वस्तु को अमूल्य आभूषण की तरह रखे जाने का एक विशिष्ट उदाहरण हैं। आगन्तुकों को एक छोटी पुस्तिका भी प्रदान की जाती है जिसमें पुरातात्विक वैज्ञानिक तथा पुस्तकालय स्त्रोतों के अनुरूप अवशेषों के प्रामाणिकता की व्याख्या की गई है। पटना संग्रहालय को बुद्ध के पवित्र अवशेषों के दर्शनार्थ आने वाले आगन्तुकों से प्रतिवर्ष लगभग 5 लाख की आय प्राप्त होती है, यह ऐसे विशेष प्रबंधन के प्रयासों को दर्शाता है अतः यह कहा जा सकता है कि बुद्ध अवशेष संग्रहालय के भ्रमण का उद्देश्य केवल अमूल्य परिमाण का साक्षी बनना ही नहीं है जो संग्रहालय निरीक्षकों के इर्द–गिर्द घूमता रहता है, अपितु आध्यात्मिक एवं धार्मिक चिंतन पर विचार करना भी है जो संग्रहालय के स्थल से परिलक्षित होता है।

पटना संग्रहालय एवं बुद्ध स्मृति उद्यान का क्षेत्र–भ्रमण

तेलहारा तथा दुर्गांव

डॉ. अभिषेक कुमार, विजिटिंग असोसिएट प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय ने 24 सितम्बर 2015 को नालंदा, बिहार के पड़ोसी गांवों तेलहारा तथा दुर्गांव के क्षेत्र–भ्रमण का आयोजन किया। यह क्षेत्र–भ्रमण ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय में उनके द्वारा प्रस्तावित ''प्रारम्भिक भारत का पुरातात्विक इतिहास'' पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया। उनके साथ इस पाठ्यक्रम के नामित छात्र, डॉ. सोमनाथ बंदोपाध्याय, संकाय सदस्य, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय तथा डॉ. रजत सान्याल, कलकत्ता विश्वविद्यालय जो राजगीर में एक अतिथि व्याख्यान के लिए आए थे, उपस्थित हुए।

तेलहारा तथा दुर्गांव का क्षेत्र–भ्रमण

इस क्षेत्र–भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को पुरातात्विक स्थलों से परिचित करवाना था जिससे वे काफी नजदीक से विभिन्न प्रथाओं एवं विषयों का निरीक्षण कर सकें। तेलहारा एक सक्रिय पुरातत्व स्थल हैं जहां अभी भी उत्खनन जारी है। दुर्गांव जो तकनीकी रूप से एक पुरातात्विक स्थल नहीं है वहां गांव के आस–पास स्थानीय स्तर पर किए गए उत्खनन से प्राचीन वस्तुओं के अवशेष विखरें हैं। स्थानीय लोगों से इन प्राचीन अवशेषों के बारे में जानना तथा किस प्रकार वे स्वयं को इससे सम्बद्ध करते हैं, के बारे सुनना सदैव रोमांचकारी लगता है।

पटना संग्रहालय बुद्ध अवशेष दीर्घा तथा बुद्ध स्मारक उद्यान, पटना

डॉ. श्रमन मुखर्जी ने 30 अक्टूबर 2015 को राज्य संग्रहालय तथा बुद्ध स्मारक उद्यान, पटना के क्षेत्र–भ्रमण का आयोजन किया। यह क्षेत्र–भ्रमण ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय में उनके द्वारा प्रस्तावित ''सीमा के आर–पार बौद्ध धर्म का प्रसारः एशिया के थेरवाड़ा जगत में साम्राज्य, राष्ट्र तथा धर्म'' पाठ्यक्रम में नामित छात्रों के लिए आयोजित किया गया था।

इस क्षेत्र भ्रमण का उद्देश्य छात्रों को अवशेष के चारो तरफ की आधुनिक संरचना का अनुभव कराना था। सामान्यतः अवशेष से तात्पर्य ''किसी महान व्यक्ति के मृत शरीर अथवा उसके वस्तुओं के अंश को श्रद्धा के रूप में रखना'' होता है। इस संदर्भ में बुद्ध के अवशेष दो स्थलों पर रखे गए है, इस क्षेत्र भ्रमण में दोनों स्थल शामिल हैं। दोनों स्थल अवशेषों को बड़े गर्व के साथ प्रदर्शित करते हैं जबकि मूल अवशेष स्तूप संरचना के अन्तर्गत शवाधानित किया गया है। अवशेषों तथा इसकी संरचना स्थल का अर्थ कई स्तरों पर बदलता रहा है। व्यापक स्तर पर क्षेत्र भ्रमण का उद्देश्य बुद्ध के भौतिक अवशेष स्थल से लेकर संग्रहालय दीर्घा तथा थीम पार्क तक के पुराने एवं नये स्थलों के विन्यास एवं प्रदर्शनी पर केन्द्रित करना था।

पटना संग्रहालय का क्षेत्र–भ्रमण

बोध गया–बुद्ध की भूमि

डॉ. श्रमन मुखर्जी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर नालंदा विश्वविद्यालय ने 14 नवम्बर 2015 को महाबोधि मंदिर तथा सुजाता गढ़ स्तूप के एक क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया। यह क्षेत्र–भ्रमण ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय में उनके द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम–''सीमा के आर–पार बौद्ध धर्म का प्रसार एशिया के थेरावाड़ा जगत में साम्राज्य राष्ट्र तथा धर्म'' के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था। इस क्षेत्र भ्रमण में उनके साथ ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के छात्र, प्रो. एस. अमर तथा प्रो. अभिराम शर्मा, एनयू, प्रो. मैक्स डीग, कार्डिफ यूनवर्सिटी तथा प्रो. रिचर्ड सीजर, हैमिल्टन कॉलेज उपस्थित थे।

महाबोधि मंदिर पूर्वी भारत में बिहार राज्य की राजधानी पटना से दक्षिण में 115 किमी तथा गया में जिला मुख्यालय से 16 किमी. दूरी पर स्थित है। यह भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है, खासकर यह ज्ञान की प्राप्ति (बुद्धत्व) का स्थल है। इन परिसम्पत्तियों के अन्तर्गत पांचवी से छठीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप में इस अवधि के प्राचीन महत्वपूर्ण अवशेष हैं।

बोध गया का क्षेत्र–भ्रमण

लुम्बिनी तथा अन्यस्थल :– बुद्ध के पदचिन्ह

प्रो. मैक्स डीग, स्कॉलर इन रेजीडेंस, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय तथा डॉ. अभिषेक एस. अमर विजिटिंग असोसिएट प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय ने लुम्बिनी, नेपाल तथा अन्य स्थलों के छः दिवसीय क्षेत्र–भ्रमण का आयोजन किया। यह क्षेत्र–भ्रमण प्रोफेसर अमर द्वारा प्रस्तावित ''दक्षिण एशियाई बौद्ध धर्म'' पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में था। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बौद्ध धर्म के व्यापक विषयों मुख्य रूप से उद्भव, स्थापना तथा दक्षिण एशिया में बौद्ध धर्म के विस्तार पर प्रकाश डाला गया। इसके अन्तर्गत बौद्ध शिक्षण (धर्म), बौद्ध समुदाय (संघ) के उद्भव एवं विकास तथा धार्मिक पद्धति समेत संचरण एवं विस्तार तथा बौद्ध संस्थाओं के स्थानीकरण की विभिन्न व्याख्याएं प्रस्तुत की गईं हैं। पांच छात्र इस क्षेत्र–भ्रमण में मुख्य भाग के रूप में शामिल थे।

लुम्बिनी तथा अन्यस्थल का क्षेत्र–भ्रमण

इस क्षेत्र भ्रमण में बौद्ध धर्म के विस्तार से संबंधित विभिन्न स्थलों को कवर किया गया जिनमें आधुनिक समय के तीर्थयात्रियों का बौद्ध सर्किट भी शामिल था। इस समूह ने लुम्बिनी पहुंचने से पूर्व वैशाली, कोल्हुवा उत्खनन अवशेष के साथ अशोक स्तम्भ, कुशीनगर अवशेष स्थलों का भ्रमण किया। इस समूह ने क्रिस्टोफर डेविस से भी मुलाकात की जो विभिन्न स्थलों के उत्खनन कार्य से सम्बद्ध थे। इस समूह ने लुम्बिनी में तीन–दिन व्यतीत करने के पश्चात् राजगीर की वापसी यात्रा के समय लौरिया नंदागढ़ तथा केसरिया स्थल का भ्रमण किया।

यूनवर्सिटी ऑफ नार्थ कैरोलिना, चैपल हिल से वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा छात्रों का पारस्परिक संवाद

डॉ. काश्शाफ घानी के पाठ्यक्रम ''भारत–पारसी इतिहास'' में ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय में नामित छात्रों ने सितम्बर तथा नवम्बर 2015 में तीर्थस्थल डाटाबेस परियोजना तथा अन्य अनुसंधान अभिरुचि के विषयों पर चर्चा के लिए प्रो. कार्ल अर्नेस्ट क्लास, यूनवर्सिटी ऑफ नार्थ कैरालिना, चैपल हिल से वीडियो–कॉन्फ्रेसिंग के द्वारा परस्पर संवाद स्थापित किया।

पहले पारस्परिक संवाद में यूएनसी ने एनयू को ''तीर्थस्थल डाटाबेस परियोजना'' में सहयोग प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया।

दूसरे सत्र में परियोजना पर पुनः चर्चा की गई तथा यह सुनिश्चित किया गया कि दोनों वर्ग सूफी तीर्थ स्थल मानहेरी के बिहार शरीफ दरगाह हेतु अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

दोनों विश्वविद्यालय के छात्रों ने अपने अनुसंधान कार्यों को प्रस्तुत किया।

सम्मेलन/संगोष्ठी/वार्ता/लेख प्रस्तुतीकरण में प्रतिभागिता

?kkuh] dk''kkQ] ''विश्वास की सीमा से परे : भारत–पारसी परम्परा की समीक्षा। ''भारत की महत्वपूर्ण परम्परा तथा मौलाना आजाद'' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 6–7 नवम्बर 2015

?kkuk] dk''kkQ] ''धार्मिक नेटवर्क का अभिसरण : औरंगाबाद में सूफी परम्पराएं एवं पद्धतियाँ। ''औरंगाबाद क्षेत्र में पारस्परिक संवाद, सम्पर्क तथा आत्मीयता'' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, औरंगाबाद, 19–21 जून 2015

?kkuh] dk''kkQ] ''ब्रेकिंग दि मोनोलिथ : दक्षिण एशिया एवं इससे इतर मुस्लिम जगत का अन्वेषण'', मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, जुलाई 2015

>k] ejkjh dekj] ने वर्ल्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री कांग्रेस, क्योटो, जुलाई 2015 में शोध निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की जिसमें उन्हें पूर्व आधुनिक खण्ड में उत्कृष्ट पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध किया गया।

>k] ejkjh dekj] ने रियोटो शिमादा द्वारा ''प्रतिस्पर्धा, सहयोग'' तथा विरोध : अन्तर–एशियाई व्यापार, (1500–1800) में व्यापारी, नेटवर्क एवं राज्य'' पर आयोजित एक पैनल में ''समुद्री व्यापार के समय (1500–1800) में पूर्वी भारत में व्यापारिक समुदाय'' पर लेख प्रस्तुत किए, वर्ल्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री कांग्रेस, क्योटो, 6 अगस्त 2015

>k] ejkjh dekj] ने 14 अगस्त 2015 को एसईईएस, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक सम्मेलन में ''पूर्वी गंगा क्षेत्र में (16वीं से 18वीं शताब्दी) के दौरान व्यापारिक समुदाय परिवर्तन के एक प्रतिनिधि के रूप में '' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

>k] ejkjh dekj] ने इतिहास कल्पना, अतीत लेखन की थीम पर 29–30 मार्च 2016 को एसएचएस, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में ''दक्षिण एशिया के संबंध में मुगलों की राजनीति एवं सम्प्रभुता'' शीर्षक पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

efyd] vkfnR;] ने 21वें इंटरनेशनल असोसिएशन फॉर दि हिस्ट्री ऑफ रिलीजन (IAHR), एर्फुट, जर्मनी, 23–29 अगस्त 2015 में अपना लेख पढ़ा। पैनल का शीर्षक ''मुझको, मेरे ईश्वर तथा मैं : दैवीय आविर्भाव की प्राप्ति के रूप में व्यक्ति'', लेख का शीर्षक :– ''गॉड्स लिटिल हॉर्सेस : मध्य हिमालयी क्षेत्र में न्याय तथा धार्मिक अवतार''।

efyd] vkfnR;] उद्घाटन/विषयगत टिप्पणी, अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला : ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन ''ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर, 11–12 मार्च 2016। उद्घाटन/ विषयगत टिप्पणी का शीर्षक : वर्तमान दृष्टिकोण से एक इतिहास।

efyd] vkfnR;] पूर्ण लेख प्रस्तुतीकरण, अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला : ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर : 11–12 मार्च 2016, लेख का शीर्षक : कवि का स्वप्न : हम्मीर– महाकाव्य में इतिहास एवं कल्पना की उल्झन।

ekgu] i d t] कार्यशाला के दौरान विशेष व्याख्यान ''चीनी क्लासिक्स एवं समसामयिक साहित्य सामाग्रियों का हिन्दी में अनुवाद, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 20 फरवरी 2016

ekgu] i d t] ''कोरियाई उपनिवेशीय आधुनिक साहित्य का प्रक्षेपपथ'' पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में लेख प्रस्तुतीकरण, 19–20 फरवरी 2016, जेएनयू, दिल्ली।

ekgu] i d t] ने 11 मार्च 2016 को ''ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन'' पर ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय द्वारा आयोजित कार्यशाला का में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

e[kth Jeu] ''यात्रामय जीवन : पुरातत्ववेत्ता, 'बौद्ध पोप' तथा शाक्य मुनि की अस्थियां'' पर लेख प्रास्तुतिकरण, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, शंघाई, ''गतिशील लक्ष्य : रचनाकारिता, स्वामित्व तथा बौद्ध सामग्री संस्कृति में अनुभव'' पर सेंटर फॉर ग्लोबल एशिया द्वारा आयोजित संगोष्ठी, न्यूयार्क विश्वविद्यालय शंघाई, 28–29 अप्रैल 2016

e[kth] Jeu] ने 15–16 अप्रैल 2016 को फैकल्टी ऑफ इंग्लिश, यूनवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज द्वारा ''आब्जेक्ट इमोशन : पॉलीमिक्स'' पर आयोजित सम्मेलन में डिजायरिंग दि बुद्धा : दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया की मुख्य भूमि पर हड्डियों एवं समाधि का पुर्नावलोकन'' पर लेख प्रस्तुत किया।

e[kth] Jeu ने 12–13 मार्च 2016 को अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर, राजगीर में ऐतिहासिक अध्ययन, विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा ''ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन'' पर आयोजित कार्यशाला में ''बौद्ध अवशेष : दक्षिण एशिया में विश्वास एवं कूटनीति'' पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

e[kth] Jeu] ने 10 दिसम्बर 2015 को पटना में बिहार हेरिटेज डेवलपमेंट सोसायटी तथा के.पी. जायसवाल अनुसंधान संस्थान द्वारा ''पूर्वी भारत में स्थापत्य कला का इतिहास'' पर आयोजित सम्मेलन में संरक्षण, उद्धार, पुनिर्माण पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

Jeu] e[kth] ने 17 जुलाई 2015 को सेंटर फॉर सोशल साइंसेज, कलकत्ता में ''अतीत संग्रह'' पर आयोजित कार्यशाला में ''प्राचीन अतीत की पुनर्प्राप्ति'' पर अपना लेख प्रस्तुत किया।

jkbV] l e vy] ''राजनीतिक वक्तव्य : पूर्व आधुनिक बंगाल में संस्कृत विद्वान एवं राजनीति''। एशिया में भाषा, शासन तथा पहचान : भाषा की सीमाओं के पार सृजन''। इंटरनेशनल इंस्टि्टूयट फॉर एशियन स्टडीज (आईआईएएस), लाडेन, (नीदरलैंड) 14–16 मार्च 2016।

jkbV] l e vy] 'काल्पनिक अनुपस्थिति : पूर्व आधुनिक भारत में संस्कृत के विद्वान''। ''ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन'', ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय की पहली अंतर्राष्ट्रीय, कार्यशाला, राजगीर इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, राजगीर, बिहार (भारत), 12–13 मार्च 2016

jkbV] l e vy] ''सार्वभौमिक विज्ञान की परिभाषा : न्याय शास्त्र में सामाजिक चिंतन''। ''भारत की महत्वपूर्ण परम्परा और मौलाना आजाद।'' मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टि्टूयट ऑफ एशिया स्टडीज (कोलकाता, भारत) 6–7 नवम्बर, 2015

jkbV] l e vy] ''रासा/ : रास टूअर्ड कनेक्टेड हिस्ट्री ऑफ संस्कृत एंड भाषाईन प्रीमॉर्डन बंगाल''। 16वां विश्व संस्कृत सम्मेलन, सिल्पकॉर्न यूनवर्सिटी (बैंकॉक, थाईलैण्ड) 28 जून–जुलाई 2015.

jkbV] l e vy] ''बहुभाषी भारत की उत्पत्ति में शांति और युद्ध की रणनीति'' के लिए बने पैनल में चर्चाकार के रूप में, ''एशिया में भाषा, शासन तथा पहचान : भाषा की सीमाओं के पार सृजन।'' इंटरनेशनल इंस्टि्टूयट फॉर एशियन स्टीडज (आईआईएएस), लाडेन (नीदरलैण्ड) 14–16 मार्च।

प्रकाशन

(पुस्तकें, संपादित खण्ड, पुस्तक अध्याय, पीर रिव्यूड जर्नल में प्रकाशित शोध लेख, सम्मेलन खण्ड तथा लोकप्रिय लेख समेत)

?kkuh] dk''kkQ] ''गुरू का उत्तराधिकारी : प्रायद्वीपीय भारत के राजनीतिक तथा सामाजिक वातावरण में चिश्ती सूफी की स्थापना'' इन एन. चंद्रामौली (ईडी.) प्रायद्वीपीय भारत में धर्म एवं समाज (छठी से सोलहवीं शताब्दी सीई), आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2015

?kkuh] dk''kkQ] ''धार्मिक नेटवर्क का अभिसरण : औरंगाबाद में सूफी परम्पराएं एवं पद्धतियां, ''औरंगाबाद क्षेत्र में पारस्परिक संवाद, सम्पर्क तथा आत्मीयता, औरंगाबाद ऐतिहासिक समाज एवं चिश्चितया कला महाविद्यालय, औरंगाबाद, 2015

?kkuh] dk''kkQ] ''दम तोड़ती परम्परा का अवशेष : उन्नीसवीं शताब्दी बंगाल में तहफत उल– मुवाहहीद्दीन'', स्टडीया ईरानिका, खंड–44 अंक 1, 2015

>k] ejkjh dekj] ''स्थानांतरण, अवस्थापन एवं बिहार के गंगा क्षेत्र में राज्य गठन : एक ऐतिहासिक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य,'' जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ दि ओरिएंट 57:4 (2014)

>k] ejkjh dekj] ''साउथ एशिया, (1400–1800) : – दि मुगल एम्परर एंड दि टर्को–पर्सीनेट इम्पीरिअल ट्रडिशन इन दि इंडियन सबकन्टीनेन्ट।'' इन ब्रेन पी. फारेल एंड जैक फेयरी इडीएस.। एम्पायर इन एशिया : अ न्यू ग्लोबल हिस्ट्री (फोर्थ कमिंग, लंदन : ब्लूम्सबरी, 2016)

>k] ejkjh dekj] ''पूर्व आधुनिक एशिया (1600–1800) में बुनकर''। इन पाईअस मालेकानडाथिल ईडी ''पूर्व आधुनिक भारत को एक आकार प्रदान करने में हिंद महासागर की भूमिका (नई दिल्ली : मनोहर प्रकाशन (2016)

>k] ejkjh dekj] ''बंगाल की खाड़ी को पार करते हुए : प्रकृति का प्रकोप तथा प्रवासियों का भाग्य'' की पुस्तक समीक्षा (कैम्ब्रिज, एमए : हार्वर्ड यूनवर्सिटी प्रेस, 2013) सुनील एस. अमरिथ कृत, जर्नल ऑफ साउथईस्ट स्टडीज 46 (2015), pp. 310–312

>k ejkjh dekj] ''सिंधु नदी में स्टीमबोट : दक्षिण एशिया में तकनीकी श्रेष्ठता की सीमाएं'' (नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस, 2014) दक्षिण एशिया में क्लाइव डिवे कृत : जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्ट्डीज 39 : 3 (2016), pp. 705–708

>k] ejkjh dekj लोकप्रिय हिन्दी पत्रिका में लेख, ''गंगा नदी और बिहार की व्यापारिक सामग्रियों का विदेश व्यापार : पूर्व उपनिवेशवादी परिप्रेक्ष्य,'' बिहार समाचार (मार्च, 2015), pp. 50–52

efyd] vkfnR;] ''न्याय के किस्से एवं अवतार की धार्मिक क्रिया : मध्य हिमालयी क्षेत्र से मौखिक विवरण।'' न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस (मुद्रण में)

efyd] vkfnR;] (विल स्वीटमैन के साथ सह–संपादन) : भारत में हिन्दु धर्म की सेज पुस्तिका : आधुनिक तथा समकालीन आंदोलन (खंड–2) नई दिल्ली : सेज पाब्लिकेशन (मुद्रण में)।

efyd] vkfnR;] जॉन रॉउल की न्याय अवधारणा पर अर्मत्य सेन की आलोचना पर आधारित (मैक्स–बेबर–सेंटर फॉर एडवांस सोशल साइंस रिसर्च, एर्टफुर्ट) का एंटजी लिंकेन बैक के साथ सह–संपादन, पुस्तक का अस्थाई शीर्षकः न्याय की अनुभूति? भारत में नियामक आदेश एवं उसकी वास्तविकता।'' (भारत, यूसए, यूरोप) से दर्शन, धर्म, इतिहास, विधि, समाजशास्त्र, सामाजिक नृविज्ञान तथा संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों का सोलह अन्तर्विषयी क्षेत्रों में योगदान (आगामी)।

efyd] vkfnR;] सैमुअल राइट एवं रानू राय चौधुरी (ईडीएज.) के साथ सह–संपादन, ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन, (सम्मेलन छवि, आगामी)

efyd] vkfnR;] ''गोलूदेव का दरबार : अधिकार, याचिकाएं तथा आधुनिकता'' ''इन विलियम एस सैक्स एवं हेलेन वासु (ईडीएस) अधिकार क्षेत्र का कानून : धार्मिक क्रिया, चिकित्सा तथा पंथ निरपेक्ष राज्य'', न्यूयॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस, 2015 : 193–225।

efyd] vkfnR;] ''लोक हिन्दुत्व : मध्य आधार?'' भारत में हिन्दू धर्म की सेज पुस्तिका : आधुनिक तथा समकालीन आंदोलन, नई दिल्ली : सेज प्रकाशन (176–193) (ऊपर देखें)

efyd] vkfnR;] ''अधिकार क्षेत्र, परिवर्तन, आधुनिकता,'' इन एस. बंधोपाध्याय एंड ए. सेन (ईडीएस.), भारत में धर्म तथा समाज (36–63) नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस (मुद्रण में)।

ekgu] i|d t] ''काया के प्राचीन कोरियाई राज्य पर विवाद'' कोरिया जापान ऐतिहासिक युद्ध पर एक पुनरावलोकन'', ''जापान और कोरिया में ऐतिहासिक युद्ध एवं सुलह : इतिहासज्ञ, कलाकार, और कार्यकर्ता की भूमिका'' पालग्रेव मैकमिलन, 2016

ekgu] i|d t] ''आरम्भिक शिल्ला राज्य काल में जनता पर बौद्ध एवं कन्फ्युशियस विचारों का प्रभाव'', प्राचीन कोरियाई तथा जापानी इतिहास एवं जनमत'' एकैडमी ऑफ कोरियन स्टीड प्रेस, 2016 pp. 206–231 (कोरिया के एक पेपर में)

ekgu] i|d t] ''औपनिवेशिक युग के दौरान भारत के बौद्ध धर्म का कोरिया के साथ संबंध,'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बुद्धिस्ट थॉट एंड कल्चर, खंड 26 सं. 1 (जून 2016) : 11–33

ekgu] i|d t] ''समगुक यूसा पर आधारित काया राज्य की बौद्ध संस्कृति'' ''भारत तथा दक्षिण एशिया में कोरियाई अध्ययन'' (खण्ड III), रविकेश मिश्रा द्वारा संपादित, मानक प्रकाशन, 2016 pp. 3–19, (कोरिया अध्ययन अकादमी, कोरिया द्वारा जेएनयू को एक शोध परियोजना प्रदान की गई,)

ekgu] i|d t] विश्वकोश लेख, ''बैक्जे राज्य'', ''गोगुरियो राज्य'' तथा सिल्ला राज्य'' साम्राज्य विश्वकोष, विले ब्लैकवेल, 2015 (प्रकाशन के बारे में 2016 में सूचना प्राप्त हुई)।

e|[kth] Jeu ''अवशेष, खंडहर, तथा मंदिर निर्माण : पुरातात्विक विरासत तथा धर्मराजिका विहार, कलकत्ता की अवसंरचना'' नयनजोत लाहिरी तथा उपीन्दर सिंह ईडीएस. एशिया में बौद्ध धर्म : पुनरूद्धार एवं पुनः अन्वेषण'' (नई दिल्ली : मनोहर, pp., 147–190)

e|[kth] Jeu, पुनर्स्थापक की स्मृति : जोसेफ डेविडिटच मेलिक बेगलार तथा महाबोधि मंदिर' विजॉय कुमार चौधरी ईडी. ''बोधगया : इसके अन्तर्गत एवं इसके इतर प्रभाव'' (पटना : बिहार हेरीटेज डेवलपमेंट सोसायटी)।

e|[kth] Jeu, ''अ साइट म्यूजियम विदाउट अ साइट : दि बोधगया ऑकिलॉजिकल म्यूजियम'' सलोनी माथुर तथा कविता मित्तल ईडीएस. नो टचिंग, नो स्पिटिंग नो प्रेयिंग (नई दिल्ली– राउटलेज)।

jkbV] l|evy] ''सारांश में इतिहास : सत्रहवीं– शताब्दी वाराणसी में ब्राह्मण सत्ता एवं न्याय अनुशासन, जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी (44) 5 : 1041–1069 (नवम्बर 2015 में ऑनलाइन प्रकाशन)।

संपादकीय, समीक्षा, संदर्भ तथा अन्य कार्य

ekgu] i:d t] सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श बोर्ड, दि नेशनल, इंस्टिट्यूट ऑफ कोरियन हिस्ट्री ट्रांसलेशन प्रोजेक्ट ऑफ 413–वॉल्यूम वेरिटेबल रिकार्ड्स चोसोन डाइनेस्ट्री (1392–1910)

ekgu] i:d t] सदस्य, संपादकीय मंडल, इंटरनैशनल जर्नल ऑफ बुद्धिस्ट थॉट एंड कल्चर (डांगगुक यूनवर्सिटी)।

ekgu] i:d t] सदस्य, संपादकीय परामर्श बोर्ड, एशिया, मुनहवा, योंगु (एशियाई संस्कृति), क्युंगवान यूनवर्सिटी

ekgu] i:d t] सदस्य, संपादकीय मंडल, ''शिल्लासा हाकबो'' (स्टडीज इन शिल्ला हिस्ट्री)

ekgu] i:d t] सदस्य, कार्यकारी समिति, बौद्ध अध्ययन कोरिया संघ।

efyd] vkfnR;] अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन : ऐतिहासिक कल्पना, अतीत लेखन, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर : 11–12 मार्च 2016, भारत, मौक्सिको तथा जर्मनी से प्रतिभागिता। कार्यशाला में एनयू के छात्र, प्रस्तुतकर्ता एवं दूत के रूप में उपस्थित हुए।

फेलोसिप/अनुदान/सम्मान

>k] ejkjh dekj] वर्ल्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री कांग्रेस, क्योटो (2015) के आयोजनकर्ताओं द्वारा 115,000 जेपीवाई (यूएसडी 1,150) का सम्मेलन अनुदान।

efyd] vkfnR;] ''इतिहास तथा धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय संघ की 21वीं विश्व कांग्रेस (आईएएचआर), एर्फर्ट, जर्मनी, 23–29, अगस्त 2015 के लिए नालंदा विश्वविद्यालय से परिवहन हेतु अनुदान। पैनल का शीर्षक : मुझको मेरे ईश्वर तथा मैं : दैवीय आविर्भाव की प्रप्ति के रूप में व्यक्ति। लेख का शीर्षक ''गॉड्स लिटिल हॉर्सेस : मध्य हिमालयी क्षेत्र में न्याय तथा धार्मिक अवतार।''

efyd] vkfnR;] मैक्स–वेबर–कालेग फॉर एडवांस सोशल साइंस स्टडीज, यूनवर्सिटी ऑफ एर्फर्ट, जमनी। परिवहन, आवास, अनुसंधान तथा प्रशिक्षण निधि के अतिरिक्त एक वर्ष के लिए यूरो 81,600 (लगभग यूएस $ 90,600) का शिक्षण प्रतिस्थापन अनुदान। फरवरी, 2016 में एक पुरस्कार प्रदान किया गया। (मैरी स्कलोडाउस्का–क्यूरी ग्रांट एग्रीमेन्ट न. 665958 के अधीन यूरोपियन यूनियन हॉरीइजन 2020 रिसर्च एंड इनोवेशन प्रोग्राम द्वारा छात्रवृत्ति की निधि प्राप्त की गई।

efyd] vkfnR;] राष्ट्रपति भवन में आयोजित भारत के राष्ट्रपति के इन्स्पाइअर्ड टीचर्स इन–रेजीडेन्स प्रोग्राम में नामांकन।

राजगिर की दो दिवसीय यात्रा पर कुलाधिपति श्री जार्ज यो नालंदा विश्वविद्यालय समुदाय से मिलते हुए

घटनाक्रम रिपोर्ट

वर्ष 2015–16 में विश्वविद्यालय ने अनेक घोषणाएं की। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण घोषणाओं के अन्तर्गत श्री जार्ज यो का कुलाधिपति के रूप में कार्यग्रहण, पुर्तगाल के साथ समझौता ज्ञापन तथा अगले वर्ष तक बौद्ध अध्ययन दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म विद्यालय को प्रारंभ करने की योजना शामिल है। नालंदा विश्वविद्यालय ने डॉ. राजेन्द्र कुमार एवं उनकी पत्नी उर्सूला जोशी से ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय में प्रोफेशियल चेयर के समर्थन में $1 मिलियन की अपनी पहली निजी दान राशि भी प्राप्त की।

इस वर्ष के दौरान विभिन्न बैठकें हुईं, जिसके अन्तर्गत इंडोनेशिया के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री के साथ बैठक, कुलाधिपति की थाई प्रिंसेस एचआरएच माहा चक्री सिरींधॉर्न तथा यूएन महासचिव बानकी–मून के साथ बैठक शामिल है। इस वर्ष विश्वविद्यालय के आगन्तुकों के अन्तर्गत सिंगापुर से विश्वविद्यालय के शुभचिंतक एवं दान देने वाले व्यक्ति जिन्होंने पुस्तकालय भवन के निर्माण हेतु पूंजी प्रदान कर अपना योगदान दिया है, रॉयल सोसायटी ऑफ थाइलैंड के सदस्य तथा इलिनोआय तथा राजेन्द्र कृषि विश्वविश्वविद्यालय के छात्र शामिल है।

विश्वविद्यालय की घोषणाओं, बैठकों, आगन्तुकों तथा आयोजनों से संबंधित सभी सूचनाएं इस अनुच्छेद में कवर की गईं हैं।

श्री जार्ज यो ने कुलाधिपति का पदभार संभाला

भारत सरकार ने 30 मई 2015 यह घोषणा की, कि श्री जार्ज यो, पूर्व विदेशमंत्री, सिंगापुर नालंदा विश्वविद्यालय के अगले कुलाधिपति होंगे, उनका कार्यकाल जुलाई 2015 के मध्य से शुरू होगा।

03 मई 2015 को आयोजित विश्वविद्यालय की 21वीं प्रबंधन मंडल (जीबी) की बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता संस्थापक कुलाधिपति प्रोफेसर अमर्त्य सेन ने की, बोर्ड ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव किया कि नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) की चांसलरशिप श्री जार्ज यो को प्रदान की जाए।

श्री यो एनयू प्रबधन मंडल (जीबी) के सदस्य हैं तथा एनयू जीबी के अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श पैनल के अध्यक्ष हैं।

कुलाधिपति श्री जॉर्ज यो

प्रबंधन मंडल ने बौद्ध अध्ययन, दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म विद्यालय को प्रारंभ करने और एक कार्यकारिणी समिति के गठन हेतु अनुमोदन प्रदान किया।

नालंदा विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल ने 05 जुलाई 2015 को दिल्ली में अपनी 12वीं बैंठक आयोजित की। प्रोफेसर अमर्त्य सेन के अध्यक्ष एवं कुलाधिपति के रूप में मंडल की यह अंतिम बैठक थी। मंडल ने इसी दिन विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज से भी मुलाकात की। मंत्री महोदया ने मंडल से विश्वविद्यालय को अपने समर्थन का भरोसा दिलाया तथा कुलाधिपति के पद से विदा हो रहे प्रोफेसर अमर्त्य सेन को धन्यवाद भी दिया एवं नये पदस्थ कुलाधिपति श्री जार्ज यो का स्वागत भी किया।

अगले दिन श्री जार्ज यो तथा कुलपति गोपा सभरवाल, श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार से मुलाकात हेतु पटना गए।

05 जुलाई 2015 को 12 वीं बैठक के दौरान प्रबंधन मंडल के सदस्य

05 जुलाई 2015 को 12वीं बैठक के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय का प्रबंधन मंडल

मंडल की इस बैठक में वर्ष 2016–17 में बौद्ध अध्ययन, दर्शन तथा तुलनात्मक धर्म विद्यालय को प्रारंभ करने का सबसे महत्वपूर्ण फैसला किया गया।

प्रबंधन मंडल ने इस बैठक के दौरान मंडल की एक कार्यकारिणी समिति के गठन पर भी चर्चा की। यह कार्यकारिणी समिति, मंडल को विचार संभावित संकल्प तथा संस्तुति हेतु निर्देशित किए गए सभी मामलों पर चर्चा, निरीक्षण एवं कार्यवाही करेगी तथा महत्वपूर्ण संस्थागत मामलों और प्राथमिकताओं पर विचार करने के लिए एक फोरम के रूप में कार्य करेगी।

समिति की अध्यक्षता कुलाधिपति करेंगे जो प्रबंधन मंडल की भी अध्यक्षता करते हैं। कुलाधिपति प्रबंधन मंडल के सदस्यों में से अन्य सदस्यों को समिति के लिए नामित करेंगे। कुलपति एवं सचिव (पूर्व), एमईए (MEA) पदेन सदस्य होंगे। पदेन सदस्य अपने पद पर बने रहने तक समिति की सदस्यता के हकदार होंगे। अन्य नामित सदस्यों का कार्यकाल दो वर्ष के लिए होगा तथा अगली बार उन्हें पुनः नियुक्त किया जा सकता है। कार्यकारिणी समिति की सदस्यता प्रबंधन मंडल की सदस्यता के आधे से कम होना चाहिए।

कार्यकारिणी समिति की एक वर्ष में कम से तीन बैंठकें होंगी। दो बैठको का आयोजन मंडल की नियमित निर्धारित बैठकों के साथ संयोजन के रूप में किया जायेगा, जबकि अन्य बैठकें समिति के अध्यक्ष के कहने पर आयोजित की जायेंगी। बैठकें व्यक्तिगत रूप से अथवा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से आयोजित होंगी।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को श्रृद्धांजलि अर्पित करने के लिए शोकसभा का आयोजन

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, भारत रत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति, गणतंत्र भारत के 27 जुलाई 2015 को शिलांग में हुए अचानक निधन की सूचना के पश्चात् 28 जुलाई 2015 को डॉ. गोपा सभरवाल, कुलपति की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के अंतरिम परिसर में एक शोक सभा का आयोजन किया गया।

शोक संदेश पढ़ा गया एवं तत्पश्चात् उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। इस शोक सभा में उपस्थित होने वाले वरिष्ठ अधिकारियों तथा संकाय सदस्यों में प्रोफेसर पंकज, मोहन, डॉ. मुरारी कुमार झा, वित्त अधिकारी श्री के. चंद्रमूर्ति, और विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष, डॉ. निहार पात्रा शामिल थे। विश्वविद्यालय के दिल्ली कार्यालय से डॉ. अंजना शर्मा, डीन (शैक्षिक योजना) ने स्वर्गीय श्री डॉ. कलाम के घर जाकर विश्वविद्यालय की ओर से एक पुष्पमाला अर्पित की।

विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल ने एक वक्तव्य भी जारी किया जिसमें कहा गया था कि हमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के देहान्त की बड़ी दुःखद सूचना प्राप्त हुई। इस प्राचीन विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण में हम उनके अविचल समर्थन प्राप्त करने में सौभाग्यशाली थे।

उन्होंने नालंदा के परामर्श समूह से इसके निर्माण के वर्षों में संवाद स्थापित किया था और अनुसंधान पर केन्द्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जिसके लिए उन्होंने बताया कि भारत में इसे प्रायः बड़े शैक्षिक संस्थानों द्वारा भी उपेक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण शैक्षिक मुद्दों पर संस्थापक कुलाधिपति, प्रोफेसर अमर्त्य सेन तथा कुलपति, डॉ. गोपा सभरवाल को अपने ठोस सुझाव दिए। डॉ. कलाम के देहान्त से हमने न केवल एक बड़े लक्ष्यों वाले महान व्यक्तित्व को खोया है अपितु एक अच्छे एवं समर्पित मित्र को खोया है जिसका समर्थन इस नए पुनर्निर्मित ऐतिहासिक विश्वविद्यालय के लिए एक मजबूत शक्ति का स्त्रोत है।

राजगीर में शोकसभा का आयोजन तथा विश्वविद्यालय की ओर से पुष्पमाला अर्पण।

कुलाधिपति श्री जार्ज यो ने विश्वविद्यालय की प्रगति से अवगत कराने के लिए थाईलैण्ड की राजकुमारी एचआरएच माहा चक्री सिरींधॉन से मुलाकात की।

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ने किंगडम ऑफ थाईलैण्ड में सिंगापुर की राजदूत श्रीमती चुआ सियु सैन के साथ 30 जुलाई 2015 को सरा पाथुम पैलेस, बैंकॉक में नालंदा विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में संक्षेप में बताने के लिए थाईलैंड की राजकुमारी माहा चक्री सिरींधॉर्न एवं उनके प्रतिनिधि से मुलाकात की।

इस बैठक में प्रबंधन मंडल के सदस्य प्रोफेसर प्रापोद अस्सावाविरुलहाकर्न जो चूलालांगकॉर्न यूनवर्सिटी, बैंकॉक में फैकल्टी ऑफ आर्ट के डीन है, भी उपस्थित थे। एचआरएच प्रिंसेस सिरींधॉर्न ने सभी को शाही भोजन पर आमंत्रित किया। एचआरएच प्रिंसेस नालंदा के अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श पैनल की सदस्य हैं तथा विश्वविद्यालय के कार्यों में सक्रियता से रूचि लेती हैं। उन्होंने भी फरवरी 2014 में अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श पैनल की बैठक में भाग लेने के दौरान राजगीर का भ्रमण किया था।

कुलपति श्री जार्ज यो तथा किंगडम ऑफ थाइलैण्ड में सिंगापुर के राजदूत श्रीमती चुआ सियु सैन, सरा पाथुम पैलेस, बैंकॉक में राजकुमारी, माहा चक्री सिरींधॉर्न के साथ के एक बैठक के दौरान।

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय के निर्माण के लिए सिंगापुर ऑर्किटेक्ट के साथ एक त्रिपक्षीय अनुबंध हस्ताक्षर किया गया।

सिंगापुर के दान देने वाले एक समूह ने राजगीर नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर में एक केन्द्रीय पुस्तकालय के संरचना एवं विनिर्माण हेतु $10 मिलियन का प्लेज (Pledge) प्रदान किया। एनयू बोर्ड ने बड़े हर्ष के साथ इस समर्थन को स्वीकार किया।

तत्पश्चात् दान देने वाले व्यक्तियों के साथ वर्तमान कुलाधिपति जार्ज यो ने आरएसपी ऑर्किटेक्ट्स, प्लानर्स एंड इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड को पुस्तकालय के संरचना (डिजाइन) के लिए अपना आर्किटेक्ट्स चुना। आरएसपी टीम का नेतृत्व प्रसिद्ध आर्किटेक्ट एंड प्लानर श्री लियु थाई केर करेंगे। श्री लियु थाई केर पूर्व में सिंगापुर के मास्टर प्लानर के रूप में कार्य कर चुके हैं तथा उन्हें बहुरूपी परियोजनाओं में 50 वर्षों से अधिक का अनुभव है।

आरएसपी इस संबंध में एनयू, वास्तुशिल्प परामर्शक के लिए मास्टर प्लानर्स के साथ कार्य करेगा। 24 अगस्त 2015 को राजगीर में आरएसपी, वीएससी और एनयू के बीच एक त्रिपक्षीय अनुबंध हस्ताक्षरित किया गया। एक पांच सदस्यीय आरएसपी प्रतिनिधियों का समूह जिसमें श्री लियु थाई केर, श्री जॉन टैनी, श्रीमती ली ची ली, श्रीमती पेग्गी चाई फेट ची तथा श्री जैवियर कॉरराल एस्क्रीबानो शामिल थे। इस समूह ने एनयू तथा वीएससी को प्रस्तावित पुस्तकालय के संकल्पनात्मक अप्रोच की प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत की। वीएससी का प्रतिनिधित्व श्री राजीव काथपालिया तथा उनकी टीम ने किया।

(बाएं से दाएं) वीएससी से श्री राजीव काथपालिया, नालंदा विश्वविद्यालय से डॉ. गोपा सभरवाल तथा आरएसपी से श्री लियु थाई केर त्रिपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हुए।

नालंदा विश्वविद्यालय के साथ संबंधों को मजबूत बनाने के लिए इंडोनेशिया के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री के साथ बैठक का आयोजन

भारत और इंडोनेशिया के बीच शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए नालंदा विश्वविद्यालय ने 8 सितम्बर 2015 को इंडोनेशिया के शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री डॉ. एन्नीस बासवेडान को लंच पर आमंत्रित किया।

माननीय संस्कृति मंत्री (भारत सरकार) डॉ. महेश शर्मा सम्माननीय अतिथि के रूप में लंच के लिए उपस्थित हुए।

मंत्रियों के अतिरिक्त आगन्तुक इंडोनशिया के प्रतिनिधि, भारत में इंडोनेशिया के राजदूत एच. ई. रिजाली विलमार इन्द्रकेसुमा तथा प्रोफेसर इवान प्रानोटो एडुकेशन अटैच ने भी लंच किया। प्रतिनिधि सदस्यों के अन्तर्गत श्री हाररिस इस्कान्दर, डीजी फॉर अर्ली चाइल्डहुड एंड पब्लिक एडुकेशन श्री एनांटो कुसुमा सेटा, हेड ऑफ इंटरनेशनल को–ऑपरेशन ब्यूरो, श्री एडी बारडोयो काउंसेलर, श्री बुकिक सेतियावान, शिक्षा विशेषज्ञ श्री मोजेसटैनडंग लिलेटिंग, मिनिस्टार्न काउंसेलर तथा श्री अकबर नूगराहा। तीसरे सचिव, गणतंत्र इंडोनेशिया दूतावास शामिल थे।

नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल के सदस्य, श्री एन. के. सिंह, कुलपति डॉ गोपा, सभरवाल, अपर सचिव श्रीमती मोनिका कपिल मोहता तथा पूर्व डीन (शैक्षणिक योजना) डॉ. अंजना शर्मा भी लंच के लिए उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय के साथ संबंधों को मजबूत बनाने के लिए अपने वक्तव्य में इंडोनेशिया के माननीय शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री डॉ. एन्नीस बासवेडान ने कहा कि 'हम विश्वविद्यालय के साथ मजबूत संबंध विकसित करने एवं सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए सदैव तत्पर हैं।'

माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि 'नालंदा विश्वविद्यालय ज्ञान के भंडार का एक केन्द्र था और यह आगे भी ज्ञान के भंडार का केन्द्र होगा।

इंडोनेशिया ने दोनों देशों के बीच प्राचीन संस्कृतियों को शसक्त बनाने के लिए परियोजनाओं, इंडोनेशिया शोधार्थियों द्वारा भ्रमण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जिनसे दो संस्कृतियां आपस में जुड़ती है, के द्वारा विश्वविद्यालय के साथ मजबूत संबंध बनाने का प्रस्ताव दिया। इंडोनेशिया के पूर्व विदेश मंत्री श्री हसन वीराजूडा भी नालंदा विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय पैनल के सदस्य हैं।

(बाएं से दाएं) गोपा सभरवाल, कुलपति, एनयू, श्री एन. के. सिंह, प्रबंधन मंडल सदस्य, एनयू, डॉ. महेश शर्मा, माननीय संस्कृति मंत्री, भारत सरकार, डॉ. एन्नीस बासवेडान, माननीय शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री, इंडोनेशिया, एच.ई रिजाली विलमार इन्द्राकेसुमा, भारत में इंडोनेशिया के राजदूत, तथा मोनिका कपिल मोहता, संयुक्त सचिव (दक्षिण), विदेश मंत्रालय।

कुलाधिपति जार्ज यो ने अपने दो दिवसीय राजगीर भ्रमण के दौरान नालंदा विश्वविद्यालय कम्युनिटी से मुलाकात की।

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री जार्ज यो कुलाधिपति बनने के पश्चात् पहली बार 9 सितम्बर 2015 राजगीर में विश्वविद्यालय कम्युनिटी से मुलाकात की।

उन्होंने कम्युनिटी से अपने सम्बोधन में कहा कि अमर्त्य सेन से मुझे कुलाधिपति पद का कार्यभार संभालने का दायित्व मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। मैं उनका स्थान नहीं ले सकता। उन्होंने मुझसे प्रसन्नता के साथ विश्वविद्यालय के विकास के लिए अपनी सम्बद्धता बनाए रखने का वादा किया है। वे प्रबंधन मंडल में बने रहेंगे तथा अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श पैनेल के सदस्यों को व्यस्त रखने में मेरा सहयोग करेंगे।

स्थानीय मीडिया के सदस्यों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी राजगीर की यात्रा अल्पावधि की है, मुझे 11 सितम्बर को आम चुनाव में मतदान हेतु वापस सिंगापुर जाना है। इसके बावजूद भी छात्रों एवं संकाय सदस्यों के साथ महत्वपूर्ण बैठक हुई। उनके जीवन शैली में सुधार लाने के लिए हम यहां अतिरिक्त समय में भी कार्य कर रहे हैं। बिहार सरकार हमें अतिरिक्त आवास बनाने तथा स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाओं में सुधार लाने के लिए सहयोग प्रदान कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि अगले वर्ष तक बौद्ध अध्ययन, तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन हेतु नये विद्यालय स्थापित किये जायेंगे। आगे पुनः भविष्य योजनाओं पर बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि आगामी वर्षों में हमें धीरे–धीरे छात्रों की संख्या बढ़ाना है, ताकि उस समय तक नये परिसर का पहला चरण तैयार हो सके, 3–4 वर्षों में छात्रों की अनुमानित संख्या हजार से अधिक अथवा उसके आस–पास पहुंच जायेगी। कुलाधिपति राजगीर के दो दिवसीय यात्रा पर आये थे।

इस भ्रमण से पूर्व वे विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में अद्यतन सूचना प्रदान करने के लिए राष्ट्रपति से भी मिले जो विश्वविद्यालय के विजिटर हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति जार्ज यो ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री बानकी–मून से मुलाकात की

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री जार्ज यो ने यूएन महासचिव श्री बानकी–मून से नालंदा विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे संक्षेप में अवगत कराने के लिए 5 अक्तूबर 2015 को न्यूयॉक सिटी में मुलाकात की। वर्ष 2016 में महासचिव के अपने चुनाव के समय श्री बान गणतंत्र कोरिया के विदेशी मामले एवं व्यापार मंत्री थे। कोरिया के विदेश मंत्री के रूप में वे नालंदा के जीर्णोद्धार के उत्सुक समर्थक थे।

न्यूयॉर्क में श्री जार्ज यो यूएन महासिचव श्री बानकी–मून के साथ

नालंदा विश्वविद्यालय ने डॉ. राजेन्द्र एवं श्रीमती उर्सूला जोशी से $1 मिलियन की दान राशि प्राप्त की

नालंदा विश्वविद्यालय ने ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय में प्रोफेसोरियल चेपर के समर्थन में डॉ. राजेन्द्र कुमार जोशी एवं उनकी पत्नी श्रीमती उर्सूला जोशी से $1 मिलियन की एक दान राशि प्राप्त की।

22 सितम्बर 2015 को नई दिल्ली में आयोजित एक दान समारोह में श्रीमती उर्सूला जोशी ने कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल को एक प्रतीकात्मक चेक भेंट किया।

(बाएं से दाएं) डॉ. नलिन जोशी, श्रीमती उर्सूला जोशी डॉ. गोपा समरवाल श्री एन. के. सिंह, कर्नल आर. के. सिंह गोसाई, दान समारोह के दौरान

विश्वविद्यालय को इस प्रकार की यह दूसरी व्यक्तिगत दान राशि प्राप्त हुई। इससे पहले इतने ही राशि का दान राजदूत मदनजीत सिंह के साउथ एशिया फाउन्डेशन से प्राप्त हुआ था। दान का यह प्रकार अब भी प्रचलन में है। नालंदा विश्वविद्यालय ने आस्ट्रेलिया, चीन, सिंगापुर, लाओस तथा थाईलैंण्ड से भी दान प्राप्त किया। इसने व्यक्तिगत दानकर्ताओं से पुस्तकों के रूप में भी दान प्राप्त किया।

कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल ने डॉ. राजेन्द्र जोशी एवं श्रीमती उर्सूला जोशी को उनके योगदान हेतु धन्यवाद देते हुए कहा कि यह

दान विश्वविद्यालय के लिए विशेषकर इसके निर्माण के वर्षों में अत्यंत मूल्यवान है। हम इसके लिए विशेष रूप से आभारी हैं कि जोशी ने जी फार्मास्युटिकल्स क्षेत्र से संबंध रखने के बावजूद भी वर्तमान समय में इस विषय की महत्ता स्वीकार करते हुए ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय को अपना समर्थन प्रदान करने का निर्णय लिया। इस समय जब इतिहास एवं वास्तव में शिष्ट कला को अधिकाधिक समर्थन की आवश्यकता है, इस प्रकार की दृष्टि अत्यंत मूल्यवान है।

डॉ. राजेन्द्र जोशी (वर्तमान में स्विटजरलैण्ड के निवासी) की जड़े भारत में राजस्थान से जुड़ी हुई हैं तथा उन्होंने विट्स (BITS) पिलानी से स्नातक किया है। उन्होंने स्विटजरलैण्ड में अन्य साझेदारों के साथ मिलकर फूमाफार्म नामक एक कम्पनी की स्थापना की तथा उन्हें त्वचारोग एवं मल्टीपल स्केलेरोसिस के इलाज के लिए अत्यंत लागत कुशल औषधि को विकसित करने का श्रेय जाता है।

फूमाफार्म को यूएस आधारित कम्पनी बायोजेन आईडैक (Biogen Idec) द्वारा प्रायोजित किया गया तथा वह औषधि जिसे डॉ. जोशी ने विकसित की, अब वह वैश्विक स्तर पर एक सफल औषधि है, तथा यह टेकफिडेरा (Tecfidera) नाम से बेची जाती है।

वर्ष 2006 में डॉ. जोशी एवं श्रीमती जोशी ने स्विटजरलैण्ड की प्रशिक्षु प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली को भारत में लाने के लिए ज्यूरिख, स्वीट्जरलैण्ड में राजेन्द्र एंड उर्सूला फाउंन्डेशन (जेसीएफ) की शुरूआत की।

इस फाउंन्डेशन ने जयपुर में राजेन्द्र एंव उर्सूला जोशी स्किल डलपमेंट प्रा. लि. के द्वारा अपने पहले व्यावसायिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की शुरूआत की।

इस योगदान के पीछे उनकी अभिप्रेरणा के बारे में बात करते हुए डॉ. जोशी के भतीजे, डॉ. नलिन जोशी ने कहा कि डॉ. जोशी एक समर्पित भारतवंशी हैं और न केवल भारतीय संस्कृति के प्रशंसक हैं अपितु राष्ट्र की जगतगुरू की छवि में उनका दृढ़ विश्वास है। उनका मानना है कि ज्ञान से विनम्रता प्राप्त होती है, और विनम्रता से व्यक्ति चरित्रवान एवं सम्पन्नता को प्राप्त होता है तथा उस अच्छे कार्य से निर्वाण की प्राप्ति होती है। उनके मतानुसार शिक्षा के इस विशिष्ट केन्द्र के पुनरुद्धार से ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा किया जा सकेगा।

श्रीमती उर्सूला जोशी जिन्होंने धन अंतरण के प्रतीक के रूप में यह चेक प्रदान किया, ने कहा कि मुझे और मेरे पति को भारत की शिक्षा प्रणाली में विशेष रूचि है। नालंदा विश्वविद्यालय विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है, हम ऐसे प्रतिष्ठित संस्थान के पुनरुद्धार में खासकर ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के प्रोफेसोरियल चेयर के समर्थन में अपना योगदान प्रदान करना चाहते हैं। इसी प्रकार हम स्वीटजरलैण्ड की प्रशिक्षु प्रशिक्षण की दोहरी प्रणाली को भारत में लाने के लिए भी कार्यरत हैं। इस संबंध में जयपुर में शीघ्र ही

नालंदा विश्वविद्यालय पर पुर्तगाल तथा भारत के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर

9 अक्तूबर 2015 को विदेश मंत्रालय में आयोजित एक समारोह में पुर्तगाल, नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना पर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने वाला 17वां देश बना। पुर्तगाल की ओर से राजदूत अना मार्टिन्हो, महासचिव, विदेश मंत्रालय, पुर्तगाल तथा भारत की ओर से डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्रा, पुर्तगाल में भारत के राजदूत ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

पुर्तगाल समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वाला पहला यूरोपीय देश तथा पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन का चौथा राष्ट्र है। समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने वाले देशों में–आस्ट्रेलिया, बूनेई, दारूस्सलाम, कम्बोडिया, लाओ लोकतांत्रिक गणराज्य, म्यांमार, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, चीन, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, थाइलैण्ड, भूटान, श्रीलंका, पुर्तगाल तथा भारत है।

डॉ जितेन्द्र नाथ मिश्रा, पुर्तगाल में भारत के राजदूत तथा राजदूत अना मार्टिन्हो, महासचिव, विदेश मंत्रालय, पुर्तगाल समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करते हुए।

नालंदा विश्वविद्यालय पेकिंग विश्वविद्यालय के साथ मजबूत संबंध स्थापित करेगा।

18 अक्तूबर 2015 को कुलाधिपति जॉर्ज यो ने दोनों देशों के बीच नजदीकी सहयोग स्थापित करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए पेंकिग विश्वविद्यालय के वाइस प्रेसीडेंट ली यानसांग से मुलाकात की। प्रोफेसर वांग बैंगवेई, सदस्य, नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल, जो पेकिंग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, वे भी इस बैठक में उपस्थित थे।

नालंदा विश्वविद्यालय का सम्पर्क पहले से ही पेकिंग विश्वविद्यालय से जुड़ा हुआ है, लेकिन वर्तमान में दोनों विश्वविद्यालय नजदीकी सहयोग के द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय में स्थित एशियाई अध्ययन केन्द्र को शुरू करने के लिए संवाद स्थापित कर रहे हैं।

इस विकास पर टिप्पणी करते हुए कुलाधिपति जॉर्ज यो ने कहा कि हम यह आशा करते हैं कि बेजिंग विश्वविद्यालय के व्यापक सहयोग से दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच व्यापक समझ के निर्माण में नालंदा विश्वविद्यालय सहयोग प्रदान करेगा। बैठक में उपस्थित प्रोफेसर वांग बैंगवेई ने कहा कि भारत से प्रेम करने वाले विभिन्न चीनी व्यक्तियों के लिए नालंदा एक पवित्र नाम है, हम यह आशा करते हैं कि नव–स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा भारत तथा चीन समेत एशियाई देशों में पारस्परिक ज्ञानार्जन परम्परा और मजबूत बनेगी।

कुलाधिपति जॉर्ज यो (बाएं से तीसरे) पेकिंग विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ।

एनयू ने बीएचडीएस के सहयोग से राजगीर में हेरिटेज–वॉक का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय ने 28–29 नवम्बर 2015 को राजगीर महोत्सव के दौरान बिहार सरकार के कला, संस्कृति तथा युवा विभाग के अधीन बिहार हेरिटेज डवलपमेंट सोसायटी के सहयोग से हेरिटेज वॉक का आयोजन किया। डॉ. अभिषेक एस. अमर, विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन विभाग, नालंदा विश्वविद्यालय ने इस वॉक की अगुवाई की। इस वॉक का शीर्षक 'राजगीर – प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक' में राजगीर में प्राचीन से आधुनिक काल के बीच ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के स्थलों के संवाद पर बल दिया गया है, जो हिन्दुओं, बौद्ध सम्प्रदायों, जैन तथा मुस्लिम समुदायों के लिए समान रूप से एक पवित्र स्थल है। इस वॉक का मुख्य उद्देश्य राजगीर के लोगों एवं पर्यटकों के बीच राजगीर की बहुस्तरीय सांस्कृतिक तथा धार्मिक इतिहास के बारे में जागरूकता फैलानी है। अक्टूबर में सफल परीक्षण के बाद यह इस प्रकार के सहयोग से आयोजित पहला वॉक–आउट था जहाँ समाचार विज्ञापन एवं ऑनलाइन मीडिया के द्वारा लोगों का आमंत्रित किया गया था।

राजगीर एवं पटना से 35 व्यक्तियों ने दो घंटे की इस वॉक में भाग लिया जो किला मैदान से शुरू होकर अजातशत्रु, स्तूप, वेणुवन, जापानी टेंपल तथा पांडू पोखर से होते हुए वीरायतन पर समाप्त हुई। नालंदा विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य तथा छात्रों के अतिरिक्त श्री विवेक कुमार सिंह, सचिव, कला एवं संस्कृति विभाग, बिहार सरकार तथा मनीष वर्मा, सीएमडी, विद्युत बोर्ड, बिहार सरकार ने दूसरे दिन के वॉक में प्रतिभागिता की। डॉ. विजॉय कुमार चौधरी, निदेशक, बिहार हेरिटेज डवलपमेंट सोसायटी, पटना ने यह भी सूचित किया कि इस प्रकार की वॉक दिसम्बर माह में पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों के लिए नियमित रूप से साप्ताहिक आधार पर आयोजित की जायेगी।

बीएचडीएस के सहयोग से राजगीर महोत्सव के दौरान 28–29 नवम्बर को हेरिटेज वॉक का आयोजन किया गया

हेरिटेज वॉक का आयोजन प्रत्येक माह के पहले रविवार को एवं अन्य दूसरे दिन भी पर्यटकों एवं राजगीर के स्थानीय लोगों के अनुरोध पर नियमित रूप से किया जाता है। वर्ष 2015–16 में आयोजित अन्य मुख्य हेरिटेज वॉक में 10 जनवरी 2016 को आयोजित हेरिटेज वॉक सबसे महत्वपूर्ण वॉक थी। किला मैदान तथा वेणुवन के चारों ओर बांध क्षेत्रों के अन्वेषण के अतिरिक्त ग्रुप ने कुछ मिट्टी से बने बर्तनों तथा ईंट की बनी संरचनाओं को भी देखा।

रॉयल सोसायटी ऑफ थाईलैण्ड के 27 सदस्यीय प्रतिनिधि ने नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर का भ्रमण किया

रॉयल सोसायटी ऑफ थाईलैंड (आरएसटी) से एक उच्च स्तरीय 27 सदस्यीय प्रतिनिधि जिसमें शिक्षाविद, शोधार्थी, चित्रकार तथा अन्य शामिल थे ने 17 दिसम्बर 2016 को नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर के अंतरिम परिसर का भ्रमण किया। आरएसटी के अन्तर्गत तीन अकादमी–नैतिक एवं राजनीति विज्ञान अकादमी, विज्ञान अकादमी तथा कला अकादमी है। इस सोसायटी की स्थापना 1926 में किंग प्रजाधिपॉक द्वारा मूल रूप से रॉयल काउंसिल के रूप में की गई थी। यह सोसायटी थाईलैण्ड की राष्ट्रीय अकादमी है, जो सरकार के शैक्षिक कार्यों का देखभाल करती है। आरएसटी ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के शोधार्थियों को एक मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रोफेसर पाकार्न अब्दुलभान, फेलो एवं प्रेसीडेन्ट, रॉयल सोसायटी ऑफ थाइलैण्ड का स्वागत करते हुए प्रोफेसर बी. मोहन कुमार, कार्यकारी डीन, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन

प्रोफेसर पाकॉर्न अब्दुलभान, फेलो एवं प्रेसीडेन्ट, आरएसटी जो विज्ञान अकादमी के अभियांत्रिकी अनुभाग से सम्बद्ध है, इस प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ शिक्षाविदों जिसमें अभियांत्रिकी, ललित कला, साहित्यिक कला, विधि, दर्शन, मनोविज्ञान, विज्ञान एवं कृषि प्रौद्योगिकी तथा पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी समेत आरएसटी के विभिन्न अनुभागों के सदस्य शामिले थे, का नेतृत्व कर रहे थे। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में डॉ. अब्दुलभान ने कहा कि मैं विश्वविद्यालय द्वारा हम सभी का गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए विश्वविद्यालय का आभारी हूँ। हमें अपने शोध विद्वानों को नालंदा विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों एवं छात्रों के साथ सम्बद्ध रखने में बड़ी प्रसन्नता होगी। आगन्तुक प्रतिनिधियों के साथ पारस्परिक संवाद के दौरान नालंदा के वरिष्ठ प्रोफेसर के अतिरिक्त प्रोफेसर पंकज मोहन, प्रोफेसर बी. मोहन कुमार, डॉ. सोमनाथ भट्टाचार्या, डॉ. अभिषेक अमर तथा वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी–श्री एम. के. चन्द्रामूर्ति, वित्त एवं कार्यवाहक रजिस्ट्रार तथा अन्य लोग उपस्थित थे। प्रोफेसर मैक्स डीग, आवासीय कार्डिफ विश्वविद्यालय के विद्वान ने भी प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया तथा नालंदा विश्वविद्यालय की आगामी बौद्ध अध्ययन एवं तुलनात्मक धर्म विद्यालय की योजना को साझा किया।

यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय तथा राजेन्द्र एग्रीकल्चर यूनवर्सिटी (आरएयू) के छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण किया

यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय तथा राजेन्द्र एग्रीकल्चर यूनवर्सिटी (आरएयू) के स्नातक पूर्व छात्रों का एक समूह 10 जनवरी 2016 को नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ परस्पर मुलाकात की। इलिनोआय के छात्र आरएयू के छात्रों के साथ मिलकर एडीएमआई परियोजना पर कार्य करने के लिए भारत आए थे। एडीएम इंस्टिट्यूट ऑफ प्रिवेंटेशन ऑफ पोस्ट हार्वेस्ट लॉस, यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय तथा आरएयू, बिहार राज्य के लिए इस परियोजना के अन्तर्गत एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। इस परियोजना का विषय 'फसल कटाई के पश्चात् लघु किसान को पहुंचने वाले नुकसान में कटौती करना' था। प्रो. कालिता द्वारा इस दिन इस विषय पर एक विशेष लेख प्रस्तुत किया गया। एडीएमआई परियोजना का उद्देश्य भारत में 'एडीएमआई विलेज' का सृजन करना है। इस परियोजना को बिहार राज्य के लिए पिछले वर्ष अगस्त में कृषि मंत्रालय, भारत सरकार तथा कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यरत अन्य कई भारतीय संस्थानों ने मिलकर लांच किया था। एडीएमआई परियोजना फसल कटाई के पश्चात् होने वाले नुकसान में कमी लाने वाली प्रौद्योगिकियों की एक व्यावहारिक कार्यान्वयन प्रस्तुत करेगी तथा भारत में बिहार के समस्तीपुर, बेगुसराय, भागलपुर, पूर्णिया तथा मोतिहारी में गेहूँ व बाजरा, चावल तथा मसूर की फसल की कटाई के पश्चात् होने वाले नुकसान को पोस्ट हार्वेस्ट लॉस (पीएचएल) रिडक्शन पर फोकस के द्वारा बिहार के इस विशेष चुनौती को पूरा करेगी।

व्याख्यान के पश्चात् छात्र परस्पर एक दूसरे से मिले तथा व्यक्तिगत अभिरूचि एवं अनुसंधान परियोजनाओं पर सूचनाएं साझा की। तत्पश्चात् शाम को सभी अतिथियों ने एनयू के संकाय सदस्यों एवं छात्रों के साथ तथागत डाईनिंग हाल में रात्रि का भोजन ग्रहण किया। यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय तथा आरएयू इंस्टिट्यूट ने नालंदा विश्वविद्यालय के साथ विभिन्न विषयों पर सहयोग स्थापित किया। नये बैच से एक छात्रा–ज्योथिर्मयी कांडुला ने यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय में शोध कार्य करते हुए अपनी ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप अवधि को

नालंदा विश्वविद्यालय में यूनवर्सिटी ऑफ इलिनोआय एंव राजेन्द्र एग्रीकल्चर यूनवर्सिटी के छात्र

पूरा किया था। आरएयू ने पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय के सहयोग से बिहार के समस्तीपुर गांव की एक तीन दिवसीय क्षेत्रीय यात्रा का आयोजन किया। नालंदा विश्वविद्यालय के पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय के वर्ष 2016 के बैच से दो छात्र अरूण गांधी और अंशुमान शेखर ने भी अपने एम.ए. के शोध निबंध हेतु एडीएमआई परियोजना पर कार्य किया।

सिंगापुर से नालंदा विश्वविद्यालय के समर्थक एवं शुभचिंतक राजगीर की तीन दिवसीय यात्रा पर आकर कुलाधिपति यो से मुलाकात की

सिंगापुर तथा हांगकांग से नालंदा विश्वविद्यालय के दानकर्ता, समर्थक तथा शुभचिंतकों का एक समूह 24 जनवरी से 26 जनवरी 2016 के लिए एक तीन दिवसीय यात्रा पर विश्वविद्यालय आए। इस समूह ने 26 जनवरी 2016 को भारत का 67वां गणतंत्र समारोह भी एनयू कम्युनिटी के साथ मनाया। इस समूह ने जार्ज यो से भी मुलाकात की जो 30 जनवरी 2016 को प्रबंधन मंडल की एक बैठक में भाग लेने के लिए विश्वविद्यालय में रुके हुए थे।

राजगीर पहुंचने से पहले इस समूह ने सर्वप्रथम गया स्थित महाबोधि मंदिर का भ्रमण किया। जहां कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल ने उनका स्वागत किया, अगले दिन तथागत आवासीय परिसर में छात्रों से पारस्परिक मुलाकात की। तत्पश्चात् इस समूह ने नालंदा खंडहर, नालंदा संग्रहालय, जुआन जैंग मेमोरियल हॉल तथा अन्य लोकप्रिय स्थलों का भ्रमण किया।

इस समूह में दानकर्ता भी शामिल थे जिन्होंने नालंदा के मुख्य परिसर स्थल पर पुस्तकालय के संरचना, निर्माण एवं सुपुर्दगी के लिए उपहार भेंट कर अपना योगदान प्रदान किया था। उपहार का स्वरूप नकद

दान राशि नहीं है अपितु इसके पहले चरण में नालंदा पुस्तकालय भवन के निर्माण की लागत हेतु निधि प्रदान करना है। यह उपहार नालंदा के लिए सिंगापुर निवासियों की ओर से (न कि सिंगापुर सरकार की ओर से) प्रदान किया गया, यह पहल वर्तमान कुलाधिपति श्री जार्ज यो के द्वारा कुलाधिपति बनने से पूर्व की गई थी।

श्री के.सी. चियु, सिंगापुर में मानव–सौहार्द के एक अग्रणी परामर्शक जो पूर्व में सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा नानयांग टैक्नोलॉजिकल यूनवर्सिटी में दान राशि के प्रबंधक रह चुके हैं, वर्तमान में नालंदा लाइब्रेरी फंड के अवैतनिक सचिव हैं, भी इस समूह के साथ यात्रा कर रहे थे। उपहार पर अपनी टिप्पणी देते हुए श्री के.सी. चियु ने कहा कि जब हमने इस उपहार के लिए निधि एकत्रित करना शुरू किया तो हमने उस समय 10 मिलियन का एक लक्ष्य निर्धारित किया था, तथा उसका लगभग 80 प्रतिशत प्राप्त हुआ। इस यात्रा के पश्चात् जिसका आंशिक उद्देश्य उन सभी को भी प्रेरित करना है जिन्होंने अभी तक विशेष उपहार राशि नहीं प्रदान की है, जिसके लिए उन्होंने वचन दिया था। हम यह आशा करते हैं कि शेष धन राशि भी शीघ्र पहुंच जायेगी। नालंदा जैसी परियोजना को समर्थन प्रदान करने के महत्व पर बात करते हुए कुलाधिपति श्री जार्ज यो ने कहा कि 'ज्ञान केन्द्र के निर्माण में दान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा उन्हें अपने शैक्षिक लक्ष्यों को अनुभव करने की अनुमति देता है। जैसे–जैसे नालंदा परियोजना आगे बढ़ रही है हम यह आशा करते हैं कि अधिकाधिक व्यक्ति इस लक्ष्य से जुड़ेंगे।' समर्थकों को विश्वविद्यालय से जुड़ने के लिए उनका आभार प्रकट करते हुए डॉ. गोपा सभरवाल, कुलपति ने कहा कि हम सिंगापुर के नागरिकों को उनके नालंदा के लक्ष्यों में विश्वास करने तथा इस परियोजना को अपना समर्थन प्रदान करने के लिए वास्तविक रूप से कृतज्ञ हैं। नालंदा पुस्तकालय के दानकर्ताओं ने सिंगापुर आधारित आर्किटेक्चुअल फर्म– आरएसपी ऑकिटेक्ट्स एंड इंजीनियर्स को पुस्तकालय के संरचना (डिजाइन) के लिए चुना है। आरएसपी टीम का नेतृत्व प्रसिद्ध वास्तुकार एवं नक्शासाज श्री लियु थाई केर कर रहे हैं जो सिंगापुर के मास्टर प्लानर रहे हैं तथा उन्हें विभिन्न परियोजनाओं में 50 से अधिक वर्षों का अनुभव है। श्री लियु ने आरएसपी के पांच सदस्यीय टीम के साथ डिजाइन की रूपरेखा पर चर्चा के लिए अगस्त 2015 में राजगीर का भ्रमण किया। आरएसपी, नालंदा विश्वविद्यालय तथा वास्तुशिल्प कन्सल्टैन्ट्स के त्रिपक्षीय अनुबध का एक भाग है, जो विश्वविद्यालय के मास्टर प्लानर्स हैं।

राजगीर के तीन दिवसीय यात्रा पर कुलाधिपति यो के साथ सिंगापुर से नालंदा विश्वविद्यालय के समर्थक एवं शुभचिंतक।

विश्वविद्यालय शीघ्र ही भाषा और साहित्य विद्यालय तथा जन स्वास्थ्य विद्यालय को प्रारंभ करेगा।

नालंदा विश्वविद्यालय के प्रबंधन मंडल, ने 30 जनवरी 2015 को आयोजित अपनी 13वीं बैठक में वर्ष 2017–18 में भाषा और साहित्य विद्यालय को प्रारंभ करने की स्वीकृति प्रदान की है। इस फैसले के बारे सम्बोधित करते हुए जार्ज यो ने कहा ''हमने वर्तमान विद्यालयों के शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस विद्यालय पर विचार किया है। भाषा और साहित्य विद्यालय वर्तमान के ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय तथा आगामी बौद्ध अध्ययन एवं तुलनात्मक धर्म और दर्शन विद्यालय का पूरक होगा।''

मंडल ने यह भी निर्णय लिया कि वर्ष 2018–19 में जन स्वास्थ्य विद्यालय को भी शुरू किया जायेगा। कुलाधिपति यो ने कहा 'जिस क्षेत्र में हम अवस्थित हैं, उसके आस–पड़ोस की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करना विश्वविद्यालय का एक अधिदेश है, तथा जनस्वास्थ्य विद्यालय व्यापक रूप से क्षेत्रवासियों को लाभ पहुंचाएगा। मंडल ने सिंगापुर के नागरिकों का आभार प्रकट किया जिन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में पुस्तकालय के डिजाइन, निर्माण एवं सुपुर्दगी के लिए $10 मिलियन का उपहार प्रदान किया है।

सिंगापुर के नागरिकों का यह उपहार (सिंगापुर के सरकार का नहीं है) कुलाधिपति यो के कुलाधिपति बनने से पूर्व की पहल का प्रतिफल है।

कुलाधिपति यो सिंगापुर तथा हांगकांग से नालंदा विश्वविद्यालय के समर्थकों एवं शुभचितंको के साथ एक सप्ताह पूर्व राजगीर पहुंच गए। इस सप्ताह के दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों, संकाय सदस्यों तथा स्टाफ के साथ समय बिताए तथा 26 जनवरी 2016 को विश्वविद्यालय में आयोजित भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह की अध्यक्षता की।

प्रबंधन मंडल की बैठक के एक दिन पूर्व विश्वविद्यालय के मास्टर प्लान एवं पुस्तकालय योजना से संबंधित एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वास्तुशिल्प परामर्शक जो विश्वविद्यालय के मास्टर प्लानर्स हैं, तथा आरएसपी ऑर्किटेक्ट प्लानर्स एंड इंजीनियर्स जो पुस्तकालय के शिल्पकार हैं ने भी विनिर्माण की योजनाओं के बारे में विस्तृत व्याख्या के लिए प्रस्तुतिकरण प्रदान किया।

पहले चरण के विनिर्माण के अन्तर्गत शैक्षिक एवं प्रशासनिक भवन, संकाय सदस्य, स्टाफ और छात्रों के लिए आवासीय भवन, सुविधा भवन, अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र एवं खेल–कूद सुविधा का निर्माण शामिल है।

नालंदा विश्वविद्यालय ने दिल्ली संवाद VIII में प्रतिभागिता की

एशिया प्रशांत क्षेत्र में नेताओं और व्यापार निवेशकों द्वारा सामना किए जाने वाले मुद्दों एवं गतिशीलता की रूपरेखा तैयार करने के लिए विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने एक वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन–दिल्ली संवाद VIII का आयोजन किया, जहां कुलपति ने नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल दिल्ली संवाद VIII में नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करती हुईं।

इस संवाद का आयोजन 17–19 फरवरी 2016 को किया गया। कुलपति ने 19 फरवरी 2016 को ''आशियान–भारत संबंध के 25वीं वर्षगांठ की ओर अग्रसर'' शीर्षक सत्र में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इस सत्र की अध्यक्षता, राजदूत गोपीनाथ पिल्लई, स्वतंत्र राजदूत, सिंगापुर सरकार तथा अध्यक्ष, प्रबंधन मंडल, इंस्टिट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज ने की। अन्य वक्ताओं में प्रो. नगुयेन थाई येन हुआंग, सीनियर रिसर्च फेलो, वाइस प्रेसीडेंट, डिप्लोमैटिक एकैडमी ऑफ वियतनाम, श्री आर. रवीन्द्रन, अध्यक्ष, एसएईए रिसर्च ग्रुप, सिंगापुर, राजदूत राजीव भाटिया, पूर्व महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली, प्रो. प्राबिर दे, समन्वयक, आशियान–भारत केन्द्र, आरआईएस, नई दिल्ली तथा डॉ. यांग पेउ, वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता एवं स्थायी सचिव, इंटरनेशनल रिलेशन इंस्टिट्यूट ऑफ कम्बोडिया, फनोम पेन्ह (टीबीसी) शामिल थे।

इंडिया टूडे एजुकेशन कॉन्क्लेव में नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व

कुलपति, डॉ. गोपा सभरवाल ने 25 फरवरी 2016 को नई दिल्ली में आयोजित इंडिया टूडे एजुकेशन कॉन्क्लेव में नालंदा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

पूरे दिन के इस सम्मेलन में शिक्षा में अभिनव कार्य प्रणाली पर केन्द्रित किया गया। कुलपति ने ''उत्कृष्टता का नया केन्द्र–अनुसंधान एवं सहयोग पर केन्द्रित'' शीर्षक सत्र पर अपना व्याख्यान दिया।

डॉ. सभरवाल ने बताया कि किस प्रकार अन्तर्विषयी, प्रायोगिक ज्ञान, अनुसंधान एवं क्षेत्र कार्य तथा शोध निबंध जैसे अवयव पर केन्द्रित के द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को श्रेष्ठ बनाया गया है।

उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के कुछ देशों के साथ विशेष सहयोग से विश्वविद्यालय उत्कृष्टता का केन्द्र बन रहा है। पैनेल के अन्य वक्ताओं में प्रो. रूपामंजरी घोष (कुलपति, शिव नादर यूनवर्सिटी), राजेन्द्र पाण्डेय (प्रेसीडेन्ट, एनआईआईटी यूनवर्सिटी) तथा विनीत गुप्ता (सह–संचालक, अशोक यूनवर्सिटी उपस्थित) थे।

विश्वविद्यालय का संगीत बैंड ध्वनि 15 अगस्त, 2015 को अपने पहले प्रदर्शन करते हुए

कम्युनिटी समाचार

विश्वविद्यालय कम्युनिटी में इस वर्ष दो विद्यालयों में 50 नये छात्रों के प्रवेश से संख्या निरन्तर बढ़ रही है। कुछ नये संकाय सदस्यों तथा प्रशासनिक स्टाफ सदस्यों ने भी विश्वविद्यालय में कार्यग्रहण किया है। विश्वविद्यालय में पहली बार 'फ्रेशर्स नाइट' का आयोजन किया गया तथा छात्र क्लब और सोसायटी का आकार भी विकसित होना आरम्भ होने लगा। इस वर्ष नालंदा परिवार ने पिछले वर्ष की तुलना में मंकर संक्रांति तथा बसंत पंचमी समेत कुछ और नये उत्सवों का आयोजन किया।

2017 की कक्षा में प्रवेश प्राप्त छात्रों का स्वागत – नालंदा विश्वविद्यालय में छात्र उन्मुखीकरण कार्यक्रम।

नालंदा विश्वविद्यालय (एनयू) ने 3–7 अगस्त 2015 के एक सप्ताह लम्बी अवधि के दौरान आयोजित छात्र उन्मुखीकरण कार्यक्रम में 2017 की कक्षा के छात्रों का स्वागत किया। छात्रों को उनके संबंधित संकाय सदस्यों, वहां रहने वाले व्यक्तियों तथा विश्वविद्यालय से परिचय करवाया गया। इस प्रकार यह नये वर्ष में प्रवेश करने वाले छात्रों तथा विश्वविद्यालय के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने का पहला कदम होता है।

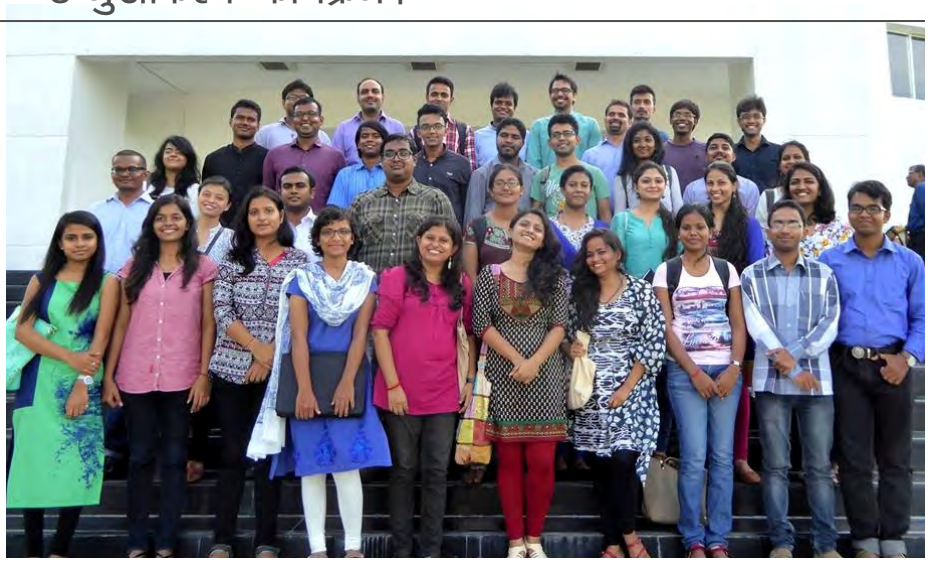

उन्मुखी कार्यक्रम के पहले दिन 2017 की कक्षा में छात्रों का एक स्मरणीय चित्र।

igyk fnu

बसंत ऋतु 2015 के पहले दिन सभी वर्तमान छात्र, संकाय सदस्य, विश्वविद्यालय के सभी कार्मिकों ने एक साथ मिलकर 2017 बैच के छात्रों का गर्मजोशी से स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरूआत कुलपति एवं डीन, शैक्षिक योजना के सम्बोधन से हुई, तत्पश्चात् एनयू के प्रबंधन मंडल के सदस्यों के संदेश की एक वीडियो दिखाई गई।

nwl jk fnu

दूसरे दिन छात्र उन्मुखीकरण साप्तहिक कार्यक्रम की शुरूआत नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम परिसर के भ्रमण से हुई। एनयू के प्रशासनिक स्टाफ ने नये बैच के छात्रों का मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात् विश्वविद्यालय की टीम के साथ छात्रों की पारस्परिक चर्चा आयोजित की गई। छात्रों को एनयू छात्र पुस्तिका में अपने–अपने विचार लिखने के लिए भी कहा गया। इसके बाद छात्रों को विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर स्थल की ओर ले जाया गया जहां इस वर्ष के अन्त में निर्माण कार्य शुरू किया जाना है। आज का अंतिम गन्तव्य स्थल नालंदा खण्डहर था। प्राचीन नालंदा मठ के एएसआई स्थल तथा संग्रहालय स्थल के हेरीटेज वॉक का नेतृत्व दो सदस्यों – डॉ. अभिषेक अमर तथा डॉ. श्रामन मुखर्जी, ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के द्वारा आयोजित किया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य नये छात्रों को प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार के पीछे की सोच के लिए बेहतर समझ प्रदान करना था।

rhl jk fnu

उन्मुखीकरण कार्यक्रम के तीसरे दिन विद्यालय अभिमुखता की व्याख्या की गई। नये छात्रों एवं उनके वरिष्ठ छात्रों के बीच परस्पर संवाद स्थापित करने के लिए अनेक गतिविधियां आयोजित की गईं। तत्पश्चात् नालंदा के पाठ्यक्रमों की चर्चा गई। शाम को माई नोमाड सोल (पाक्खी नू छडनू नई) नामक फिल्म की स्क्रीनिंग की गई। इस फिल्म का निर्देशन प्रसिद्ध निदेशक श्री संजय बर्नेला के द्वारा किया गया था।

श्री बर्नेला इस अवसर पर नये बैच के छात्रों को सम्बोधित करने एवं लघु फिल्म संबंधी उनके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपस्थित थे।

pkFkk fnu

चौथे दिन की शुरूआत श्री संजय बर्नेला द्वारा सह–संपादित दूसरी फिल्म की स्क्रीनिंग के साथ हुई। इस दूसरी फिल्म का शीर्षक पास्टोरल पॉलिटिक्स (गड्डी हेर्डर्स ऑफ हिमांचल प्रदेश) था।

शाम को आयोजित कार्यक्रम संबंधित विद्यालय के अभिमुखता कार्यक्रम के पूर्व से जारी कार्यक्रम के एक भाग के रूप में था। शैक्षिक लेखन तथा संबंधित विद्यालयों की आवश्यकताओं के बारे में एक परिचय भी

विश्वविद्यालय में कार्यक्रम के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया।

ikpok fnu

नालंदा विश्वविद्यालय में उन्मुखीकरण कार्यक्रम के पांचवे दिन की शुरुआत फूटस्टेप्स ऑफ निकिटिन (Footsteps of Nikitin) की स्क्रीनिंग, विदेश मंत्रालय के प्रोडक्शन के अधीन सार्वजनिक कूटनीति प्रभाग के कार्यों के साथ शुरू हुई। प्रो. हरिशंकर वासुदेवन जो इस 61 मिनट की डाक्युमेंटरी के पटकथा लेखक हैं, कई मायनो में नालंदा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं तथा इस अवसर पर उपस्थित होकर फिल्म पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए। शाम के शो में ओडिशी नृत्य की प्रसिद्ध नर्तकी श्रीमती आरुषि मुदगल ने अपना नृत्य प्रस्तुत किया, उन्होंने अपने बेहतर प्रदर्शन से श्रोताओं को सम्मोहित किया। तत्पश्चात् एनयू में छात्र आवासीय हॉल में महाभोज का आयोजन किया गया। इसी के साथ नालंदा विश्वविद्यालय में साप्ताहिक उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

साप्ताहिक उन्मुखी कार्यक्रम के दौरान नालंदा खण्डहर के पास अग्रणी बैच के छात्रों के साथ वर्ष 2017 की कक्षा के छात्र।

विश्वविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

नालंदा विश्वविद्यालय ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के पहले वर्ष के दो छात्रों द्वारा दो राष्ट्रीय पर्व–गणतंत्र दिवस तथा स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण की परम्परा को स्थापित की है। उसी के अनुरूप 15 अगस्त 2015 को 69वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पर अपर्णा झा तथा रोहित झा ने अंतरिम परिसर में भारतीय तिरंगे को फहराया।

इस वर्ष डॉ. गोपा सभरवाल, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय ने यह घोषणा भी की, चूंकि विश्वविद्यालय की अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिटी दिन प्रति दिन बढ़ रही है, विश्वविद्यालय सभी छात्रों के देशों का राष्ट्रीय दिवस मनायेगा।

15 अगस्त 2015 को अंतरिम परिसर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस का आयोजन।

विश्वविद्यालय की ध्वनि म्युजिकल बैंड की 15 अगस्त 2015 को अपने पहले प्रदर्शन के पश्चात् का चित्र

नालंदा विश्वविद्यालय में पहली फ्रेशर्स नाईट का आयोजन

29 अगस्त 2015 को एनयू में पहले फ्रेशर्स नाइट के सफलतापूर्वक प्रारम्भ होने के प्रश्चात् एनयू कम्युनिटी

नालंदा विश्वविद्यालय के पूर्व बैच के छात्रों ने 2017 की कक्षा के नये बैच के छात्रों के लिए एनयू में फ्रेशर्स नाइट का आयोजन किया। यह समारोह जिसे आराब्धी नाम दिया गया, का आयोजन 29 अगस्त 2015 को हुआ। इस अवसर पर विविध प्रकार के रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान शास्त्रीय नृत्य से लेकर फ्यूजन, थीम से लेकर फन क्लैड, मूक अभिनय से लेकर कविता पाठ, म्यूजिकल मेडले से लेकर शांति–गीत, टैगोर की गीतांजलि से लेकर जापान के पॉप सॉंग और अनेकानेक प्रस्तुतियां प्रस्तुत की गईं।

आराब्धी 2015 के दौरान छात्र अपनी प्रस्तुति देते हुए।

नालंदा विश्वविद्यालय ने अपने स्थापना दिवस के स्मरणोत्सव में दो–दिवसीय समारोह का आयोजन किया

नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के स्मरणोत्सव में 24–25 नवम्बर को एक दो दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया। 25 नवम्बर 2010 को नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम (2010) लागू हुआ था। विश्वविद्यालय इस दिन को स्थापना दिवस के रूप में मनाता है।

पिछले वर्ष जब इसने अपने पहले शैक्षिक सत्र को शुरू किया था, तो विश्वविद्यालय इस दिन के समारोह को राजगीर में मनाया था। इस वर्ष विश्वविद्यालय ने भारत में प्रतिष्ठित फ्यूजन रॉक शैली के रूप में

25 नवंबर, 2015 को नालंदा विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर ओशन बैंड के सदस्य अपने प्रदर्शन के बाद छात्रों के साथ

24 नवम्बर 2015 को स्थापना दिवस समारोह 2015 के पश्चात् का एक स्मरणीय चित्र।

प्रसिद्ध इंडियन ओशन बैंड को 25 नवम्बर 2015 को लाइव प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया। विश्वविद्यालय ने बिहार के विभिन्न संस्थानों को इंडियन ओशन द्वारा प्रस्तुत रॉक शो को देखने के लिए आमंत्रित किया। आईआईटी पटना, पटना साइंस कॉलेज तथा पटना महिला महाविद्यालय से छात्र, छात्राएं, राजगीर में इस शो को देखने आए। इस रॉक बैंड की अपने आरम्भ के 26 वर्षों में बिहार में यह पहली प्रस्तुति है। विश्वविद्यालय कम्युनिटी ने स्थापना दिवस की पूर्व संध्या 24 नवम्बर को सांस्कृतिक प्रदर्शन का आयोजन किया, जहां पर छात्र, स्टाफ तथा संकाय सदस्यों ने भी अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की। इस वर्ष की थीम ''प्रयासों के द्वारा समानता'' थी।

अतिथियों में राजगीर प्रशासन तथा राजगीर से अन्य प्रतिनिधियों के अतिरिक्त नवोदय विद्यालय तथा सैनिक स्कूल के छात्र शामिल थे। इस अवसर पर डॉ. गोपा सभरवाल ने कहा कि यद्यपि हम एक कम्युनिटी के रूप में विभिन्न अवसरों पर मिलते हैं, इस अवसर पर मैं अपने संकाय सदस्यों, छात्रों तथा स्टाफ को नालंदा के निर्माण में उनके सहयोग प्रदान करने तथा एक स्वप्न को यथार्थ में परिवर्तित करने के लिए अपना आभार प्रकट करती हूँ।

नालंदा विश्वविद्यालय स्थापना दिवस 2015 के अवसर पर इंडियन ओशन बैंड द्वारा लाइव प्रस्तुति।

विश्वविद्यालय कम्युनिटी द्वारा पारम्परिक उत्सवों का आयोजन

विश्वविद्यालय कम्युनिटी ने वर्ष 2015–16 में विभिन्न पारम्परिक उत्सवों : – दिवाली, दशहरा, ईद, क्रिशमश, नया वर्ष, मकर–संक्रांति तथा बसंत पंचमी का आयोजन किया। दिवाली पर छात्रों ने आवासीय परिसर को दीपक से सजाए तथा दशहरे पर एक नाटक का मंचन किया।

ईद का जश्न एक विशेष प्रस्तुति के साथ हुआ और इसी प्रकार क्रिशमश तथा नये वर्ष को धूम–धाम से मनाया गया। मकर संक्रांति–फसल उत्सव जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मनाया जाता है, का आयोजन, नृत्य, संगीत गेम्स तथा होलिका दहन के साथ किया गया।

बसंत पंचमी–बसंत ऋतु के आगमन को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया, तथा छात्रों ने सरस्वती देवी, जिन्हें हिन्दू मान्यता के अनुसार ज्ञान, बुद्धिमता तथा संगीत की देवी माना जाता है, की प्रार्थना के लिए विशेष प्रबंध किए।

विश्वविद्यालय कम्युनिटी सभी प्रमुख उत्सवों को एक साथ मिलकर मनाती है तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन में छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सभी कम्युनिटी सदस्यों–छात्र, संकाय सदस्य, तथा स्टाफ को समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है, तथा विश्वविद्यालय भोजनालय द्वारा इन अवसरों पर विशेष भोजन तैयार किया जाता है।

छात्र क्लब एवं सोसायटी की गतिविधियां

9 अक्टूबर, 2015 को विश्वविद्यालय में खेल सप्ताह के उद्घाटन के दौरान छात्र और संकाय

नालंदा विश्वविद्यालय में अगस्त 2014 में अपने पहले बैच के छात्रों के प्रवेश के पश्चात् ही रचनात्मक दृष्टिकोण से सम्बद्ध कम्युनिटी से निकट संबंध स्थापित करने के लिए अनेक क्लब एवं सोसायटी का गठन किया गया।

अपनी अभिरूचि के अनुरूप छात्र इनमें से किसी भी क्लब एवं सोसायटी के साथ सम्बद्ध हो सकते हैं। इन समूहों के साथ सम्बद्ध रहने से उन्हें अपने संवाद, संगठन तथा सामाजिक कौशल को विकसित करने का एक अवसर प्राप्त होता है, जो वास्तविक जगत की परिस्थितियों के लिए मूल्यवान साबित होता है। इन क्लबों का संचालन छात्रों के द्वारा किया जाता है। विश्वविद्यालय इन्हें केवल वित्तीय समर्थन एवं सुविधाएं प्रदान करता है। इन क्लबों के कई कार्यक्रमों में संकाय सदस्यों एवं स्टाफ को भी प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया जाता है।

यहां वर्तमान क्लब तथा सोसायटी पर प्रकाश डाला जा रहा है:–

[kydn Dyc %& खेलकूद क्लब अनेक प्रकार के मनोरंजन एवं प्रतिस्पर्धात्मक खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन करता है। ऐसे सभी कार्यक्रमों में संकाय सदस्य, छात्र एवं स्टाफ सदस्य बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

tkx:drk lklk;Vh

यह सोसायटी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के आयोजन के कार्य से सम्बद्ध है, जिससे अनेक सामाजिक तथा पर्यावरणीय मामलों पर जागरूकता फैलाने में सहायता प्राप्त होती है।

lkfgfR;d lklk;Vh

इस सोसायटी के छात्र सदस्य सार्थक संवाद एवं रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के कार्य से सम्बद्ध है।

i;kZoj.k Dyc

यह क्लब पर्यावरणीय चेतना तथा हरित गतिविधियों को बढ़ावा देने के कार्य से सम्बद्ध है।

lkLÑfrd ,oa dyk lklk;Vh

सांस्कृतिक एवं कला सोसायटी एनयू परिसर में सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं उत्सवों का आयोजन करती है। नृत्य, संगीत (ध्वनि) नाटक एवं फोटोग्राफी क्लब इस सोसायटी के एक भाग हैं।

dsfj;j fjlksl lsy

कैरियर रिसोर्स सेल का संचालन स्टाफ एवं संकाय सदस्यों के समर्थन से छात्रों के एक समूह द्वारा किया जाता है। यह विभिन्न संगठनों एवं कम्पनियों के बीच सम्पर्क स्थापित करने के कार्य से सम्बद्ध है जो शोध एवं रोजगार के लिए छात्रों के चयन हेतु इच्छुक हैं। यह उन कम्पनियों के प्रतिनिधियों को छात्रों के चयन में सहयोग करता है तथा छात्रों को उनके अवसरों की खोज में उनकी सहायता करता है।

सामाजिक कल्ब विशेषज्ञों के साथ पारस्परिक संवाद तथा कार्यक्रमों का आयोजन करता है जहां विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं तथा मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है तथा उसके सृजनात्मक समाधान पर चर्चा की जाती है, और उसे कार्यान्वित किया जाता है।

खेल सप्ताह एवं क्रिकेट प्रतियोगिता

खेल सप्ताह का आयोजन 9–16 अक्टूबर 2015 को किया गया। इस सप्ताह के दौरान बैडमिंटन तथा वॉलीबाल समेत कई खेल–कार्यक्रम आयोजित किए गए। जनवरी महीने के दो सप्ताहांत में एक दो–दिवसीय क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। छात्रों की टीम नालंदा स्पार्टा ने प्रशासनिक स्टाफ सदस्यों की टीम नालंदा वारियर्स के विपरीत खेला। पहले दिन (9 जनवरी) को मैच के विजेता वारियर्स ने 8 विकेटों से जीत दर्ज की तथा दूसरे दिन (16 जनवरी) को नालंदा स्पार्टा ने 36 रनों से विजयी होकर अपने प्रतिद्वन्दी को कठिन शिकस्त दी। दोनों ही मैच का आयोजन नवोदय विद्यालय क्रिकेट ग्राउंड, राजगीर में किया गया। इस प्रकार के मित्रतापूर्व क्रिकेट मैच सम्पूर्ण कम्युनिटी को एकत्रित करते हैं तथा नालंदा विश्वविद्यालय में संबंधों को मजबूत बनाते हैं।

नालंदा वारियर्स तथा नालंदा स्पार्टा के क्रिकेट मैच के पश्चात् का चित्र।

खेल सप्ताह के दौरान बैडमिंटन मैच खेलते हुए

भारतीय गणतंत्र दिवस का आयोजन क्ले तथा अमन द्वारा ध्वजारोहण

कुलपति श्री यो ने भारत के गणतंत्र दिवस पर विश्वविद्यालय समुदाय को संबोधित करते हुए

नालंदा विश्वविद्यालय ने भारत के गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान 26 जनवरी 2016 को अपने छात्रों को भारतीय तिरंगे के ध्वजारोहण का पुनः एक अवसर प्रदान किया। इसके लिए चिट ड्रा के द्वारा दो छात्रों का चयन किया गया। नाउ क्ले पाउ जो मूल रूप से म्यांमार से हैं तथा अमन वर्मा को इस बार यह सम्मान प्राप्त हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् राष्ट्रगान गाया गया। इस अवसर पर कुलाधिपति जार्ज यो भी उपस्थित थे। उन्होंने तथा कुलपति गोपा सभरवाल ने विश्वविद्यालय कम्युनिटी को सम्बोधित किया। इस अवसर पर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए। तत्पश्चात् सभी के लिए स्नैक्स, मिष्ठान तथा चाय, कॉफी का प्रबंध किया गया।

अंतरिम परिसर में भारतीय गणतंत्र दिवस का आयोजन

एनयू कैरियर रिसोर्स सेल से पारस्परिक वार्तालाप

नालंदा विश्वविद्यालय कैरियर रिसोर्स सेल को इस वर्ष स्थापित किया गया। यह छात्रों के एक समूह के द्वारा एवं संकाय सदस्यों के सहयोग से चलाया जाता है, जिसके अंतर्गत विभिन्न व्यावसायिक हस्तियों के साथ छात्रों को उनके पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न प्रकार के स्थानीय परियोजनाओं के बारे जानकारी प्रदान करने के लिए पारस्परिक वार्तालाप का प्रबंध किया जाता है। इन पारस्परिक वार्तालापों से विभिन्न संस्थानों के साथ संबंध स्थापित करने में सहायता प्राप्त होती है, जो छात्रों को ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप परियोजनाओं के लिए नियुक्त करने की इच्छुक हो सकती हैं।

;uhlQ (UNICEF) fcgkj l ikjLifjd lokn%& श्री बांकू बिहारी सरकार, बिहार शाखा, यूनीसेफ इंडिया (यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन्स फंड) ने अपनी टीम के सदस्यों :– श्री सैयद मंसूर उमर कादिरी तथा श्रीमती पारूल शर्मा के साथ 15 फरवरी 2016 को छात्रों के साथ पारस्परिक संवाद किया।

यूनीसेफ–बिहार की टीम विश्वविद्यालय में छात्रों से पारस्परिक संवाद स्थापित करते हुए।

उन्होंने बिहार में 1982 से यूनीसेफ के उद्यम इतिहास को साझा किया तथा कम्युनिटी आधारित डिजास्टर रिस्क रिडक्शन (CBDRR) जो बिहार में 2004 से चल रहा है, के अधीन विभिन्न मॉडलों पर चर्चा की। चर्चा किए गए विषयों के अन्तर्गत एक मल्टी हैजार्ड वल्नरबिलिटी मेपिंग (MHVM) को संस्थागत बनाने तथा सीबीडीआरआर के द्वारा कम्युनिटी में लचीलेपन के निर्माण तथा अन्य विषय शामिल थे। इंटीग्रेटेड चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कीम (आईसीपीएस) के क्रियान्वयन संबंधी अद्यतन सूचना तथा शिक्षा के अधिकार कानून (आरटीई) के कार्यान्वयन के लिए बिहार सरकार को यूनीसेफ के योगदान एवं साझेदारी पर भी चर्चा की गई।

jk"Vh; xkeh.k vkthfodk fe'ku ij ikjLifjd lokn% श्री देबराज बेहेरा, राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक, आजीविका, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) ने 14 फरवरी 2016 को छात्रों से विभिन्न इंटर्नशिप तथा नियुक्ति के अवसरों पर पारस्परिक संवाद किया।

श्री देबराज बेहेरा, राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक, आजीविका, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन छात्रों के साथ पारस्परिक संवाद करते हुए।

श्री बेहेरा का संधारणीय कृषि प्रणाली, जलवायु अनुकूलित कृषि तथा उत्पादकता संवर्धन कार्यक्रम (धान, गेहूँ, दाल तिलहन एवं सब्जियों की फसल संवर्धन प्रणाली) को बड़े स्तर पर डिजाइन एवं क्रियान्वयन में एक पूर्णरूपेण कैरियर है। उन्होंने समुदाय प्रबंधन विस्तार प्रणाली, कृषि नवाचार तथा लघु धारक कृषि के विपणन के लिए भी कार्य किया है। इसके अतिरिक्त उन्हें महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना (एमकेएसपी) तथा विकास क्षेत्र के व्यावसायीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए जाना जाता है।

नालंदा के छात्र को दलाईलामा छात्रवृत्ति 2016–17 के लिए चुना गया

अविनाश मोहन्ती, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विद्यालय के 2017 की कक्षा के छात्र को मार्च 2016 में दलाईलामा छात्रवृत्ति के लिए चुना गया। दलाईलामा छात्रवृत्ति एक विशेष वैश्विक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य नये पीढ़ी के उभरते हुए अधिनायकों की खोज करना एवं उन्हें हमारे वर्तमान समय की कुछ स्थायी वैश्विक चुनौती को प्रभावी ढंग से सम्बोधित करने के लिए उनका उत्साहवर्धन करना है।

जिस परियोजना के लिए अविनाश मोहन्ती को चुना गया है उसका उद्देश्य लोगों में राजगीर पर्यटन उद्योग के बारे में जागरूकता फैलानी है तथा इस शहर के पर्यावरण को सुधारने पर बल देना है। इसके अन्तर्गत तांगा समुदाय जो वित्तीय रूप से स्थानीय पर्यटन पर निर्भर रहता है के लिए एक एकीकृत समुदाय प्रबंधन तैयार करना शामिल है, जिसमें कार्यान्वयन के पांच माड्यूल हैं, जैसे– तांगा समुदाय को शसक्त बनाना, तांगे को और पर्याप्त ऊर्जा कुशल बनाने के लिए तकनीकी साधन प्रदान करना, तकनीकी (फाइबर) के उपयोग द्वारा घोड़ो के लिए पर्यावरण के अनुकूल अपशिष्ट संग्रहण मॉड्यूल तैयार करना, पशु कल्याण पर ध्यान देना, जिससे घोड़ों की पूरी तरीके से देख–भाल किया जा सके। इस परियोजना को डॉ. पुष्प

दलाईलामा छात्रवृत्ति के लिए चुने गए, स्कूल ऑफ पारिस्थितिकी और पर्यावरण के छात्र अबिनाश मोहंती

कुमार लक्ष्मणन, असोसिएट प्रोफेसर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर द्वारा परामर्श प्रदान किया गया था।

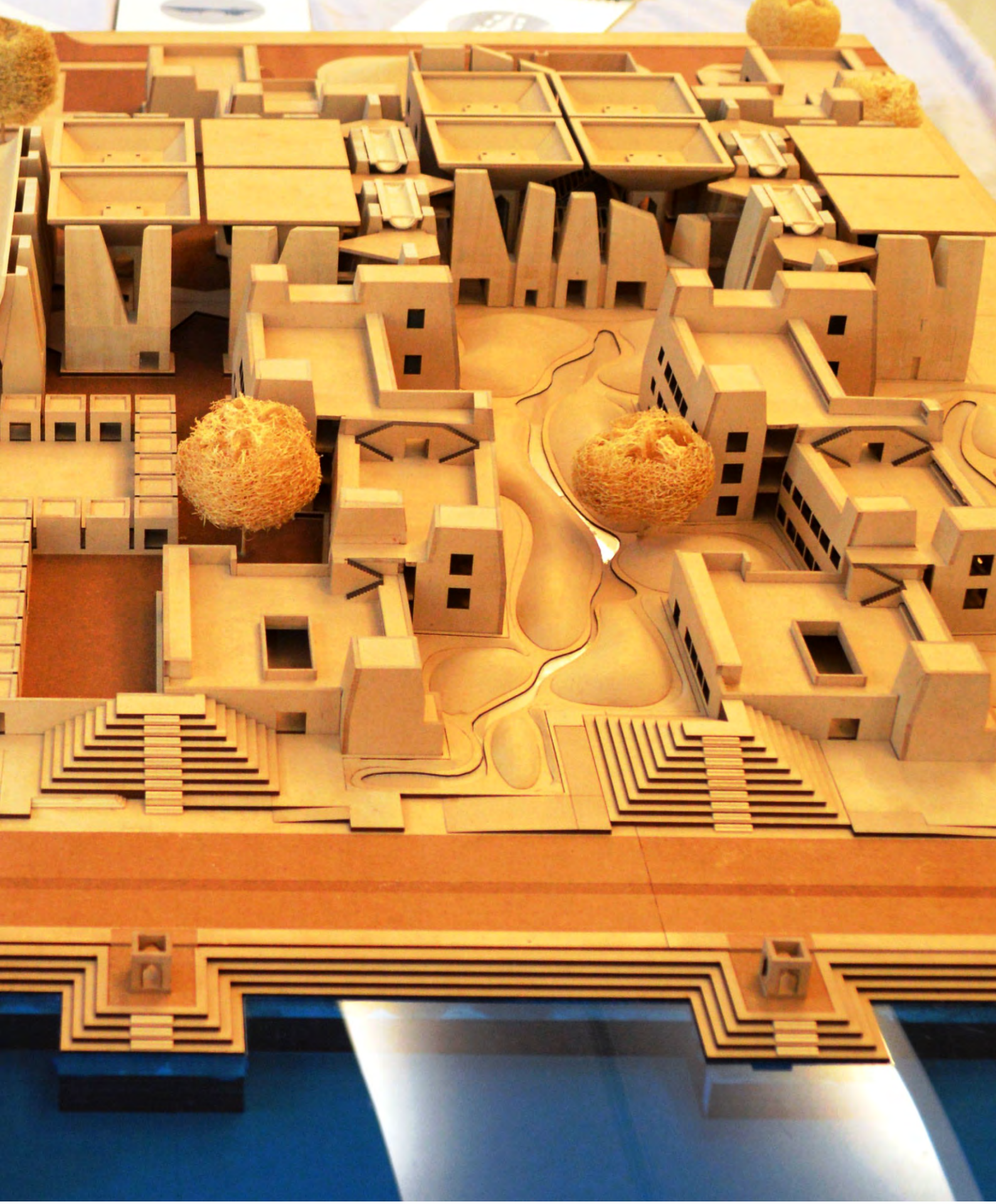

भविष्य में तैयार होने वाला प्रस्तावित परिसर का मॉडल

परिसर एवं निर्माण–कार्य

विश्वविद्यालय की कम्युनिटी के इस वर्ष पुनः बढ़ने के साथ विश्वविद्यालय ने अंतरिम परिसर में एक भवन का निर्माण किया तथा राजगीर में कुछ अन्य भवनों को अर्जित किया। मिकॉन (MECON) को परियोजना प्रबंधन परामर्शक के रूप में कार्य पर लिए जाने के साथ स्थायी परिसर का कार्य पुनः आगे बढ़ा है। स्थायी परिसर के निर्माण की निविदा प्रक्रिया जिसे फरवरी 2015 में शुरू किया गया था, को संशोधित किया जाना है, को अब तीन छोटे–छोटे पैकेज में विभाजित किया जायेगा।

अंतरिम परिसर में अतिरिक्त स्थान का सृजन एवं मरम्मत कार्य

अंतरिम परिसर में प्री–फैब्रीकेटेड कार्यालय भवन (पोर्टा केबिन) का निर्माण किया गया। इन केबिनों का उपयोग प्रशासनिक कार्यालय के रूप में किया जायेगा। एक स्टॉर्म वाटर ड्रेनेज सिस्टम का भी निर्माण किया गया।

विश्वविद्यालय ने मुख्य सचिव, बिहार सरकार से असुरक्षित अवसंरचना को गिराने के उपरांत 8 अतिरिक्त हाऊसिंग युनिट के निर्माण, ब्लॉक–एफ (6 युनिट) के मरम्मत कार्य तथा विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित की गई डिजाइन एवं योजनाओं के अनुसार भूतल के नक्शे कदम पर ब्लॉक–डी (2 युनिट) पर एक और मंजिल के निर्माण कार्य के लिए अनुरोध किया। मुख्य सचिव ने बिहार स्टेट एजुकेशन इन्फ्रास्टक्चर डवलपमेन्ट कार्पोरेशन (बीएसईआईडीसी) को कार्य सौंपा तथा बीएसईआईडीसी को योजना एवं डिजाइन का कार्य भी सौंपा।

चूंकि विश्वविद्यालय के अंतरिम परिसर में माजूदा स्थल सुविधाएं काफी रिक्त थीं तथा आवास एवं कार्यालय स्थल की मांगे बढ़ रहीं थी, विश्वविद्यालय ने राजगीर शहर में कुछ भवनों को लीज पर भी लिया। इसने नवनिर्मित चार मंजिला भवन जिसमें पूर्णरूपेण सुसज्जित 14 कमरों के साथ भूतल पर एक स्वागत कक्ष तथा एलीवेटर, सभी वातानुकूलित कमरे तथा 100 प्रतिशत पावर बैक–अप की सुविधा है, को लीज पर लिया है। जिसे विश्वविद्यालय ने कार्यालय सह अतिथि भवन का नाम दिया है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने संकाय सदस्यों के लिए भी कुछ मकानों को किराये पर लिया है जिन्हें अंतरिम परिसर के भीतर समायोजित नहीं किया जा सका है।

नव–निर्मित पोर्टा केबिन

स्थायी परिसर के विकास पर अद्यतन सूचना

नालंदा के प्रस्तावित परिसर को बिहार सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को प्रदान किए 455 एकड़ पर बनाए जाने की योजना है। यह भूमि राजगीर पहाड़ी क्षेत्रों के निचले पहाड़ी हिस्से पर अवस्थित है, जो पटना–राजगीर राज्यमार्ग के सामानांतर स्थित है तथा यह पूरी तरह से राजगीर शहर से जुड़ा हुआ है।

विश्वविद्यालय के मास्टर प्लान का अभिकल्पन वास्तुशिल्प कन्सल्टैन्ट (वीएससी) के द्वारा किया गया है जो 2013 में आयोजित वास्तुकला अभिकल्पन प्रतिस्पर्धा के विजेता रह चुके हैं तथा विश्वविद्यालय ने उनके साथ वर्ष 2014 में एक अनुबंध हस्ताक्षर किया है।

प्रस्तावित परिसर के मास्टर प्लान में गैर–आवासीय एवं आवासीय भवनों का अभिकल्पन किया गया है। गैर–आवासीय भवनों के अन्तर्गत शैक्षिक खण्ड, पुस्तकालय, प्रशासनिक खण्ड तथा प्रेक्षागृह को शामिल किया गया है। आवासीय भवनों के अन्तर्गत संकाय सदस्यों के लिए मकान, छात्रों एवं छात्राओं के लिए छात्रावास तथा मेस एवं डाईनिंग को शामिल किया गया है।

सभी भवनों को पूरे परिसर में फैले वाटर नेटवर्क के पास बनाये जाने की योजना है। एक लोटस पॉन्ड जिसे कमल सागर कहा जाता है को शैक्षिक तथा आवासीय खण्ड के समीप बनाया जाना प्रस्तावित है।

ifjlj dk Hkh uV thjk cuk, tkus dh ;kstuk g] ftldk vFk g fd ifjlj e Åtk] ikuh vkj vU; çk–frd lalk/kuk dh ekx d lc/k e vc vkRefuHkj gkxkA

fedku (MECON) fyfeVM dh ifj;kstuk ic/ku ijke'kd d :i e mifLFkfr

परिसर के विकास को कई चरणों में बनाए जाने की योजना है तथा परिसर के एकीकृत विकास के लिए पहले चरण का निर्माण

कार्य भी विभिन्न पैकजों के अन्तर्गत किए जाने की योजना बनाई गई है।

पहले चरण के निर्माण में मास्टर प्लान तथा भवन के सफलतापूर्वक निष्पादन के लिए विश्वविद्यालय ने यह निर्णय लिया कि इसमें एक प्रोजेक्ट मैनेजमेन्ट कन्सल्टैन्ट (पीएमसी) को सम्बद्ध किया जाना आवश्यक है।

खुली निविदा के अनुसरण तथा उपयुक्त प्राधिकारी से अनुमोदन के पश्चात् विश्वविद्यालय ने मैसर्स मिकॉन लिमिटेड, रांची को पहले चरण के निर्माण के लिए पीएमसी के रूप में सम्बद्ध किया।

मैसर्स–मिकॉन इंडिया लिमिटेड (आईएसओ 9001:2008) इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है, जिसका मुख्यालय रांची, झारखंड में है। यह एक मात्र प्रसिद्ध बहुविषयक अभिकल्पन, इंजीनियरिंग कन्सल्टैन्सी तथा संविदा का एक संगठन है।

igyk pj.k dk fuek.k dk rhu NkVs& NkVs idt e foHkkftr fd;k x;kA

विश्वविद्यालय परिसर के निर्माण के लिए निविदा प्रक्रिया को फरवरी 2015 में उस समय शुरू किया गया जब यह निर्णय लिया गया कि सभी अभिकल्पन की विशेषताओं के एक नमूने को प्राप्त करने के उद्देश्य से पहले सम्पूर्ण निर्माण कार्य के छोटे से भाग पर कार्य प्रारम्भ किया जायेगा। सभी संरचना विशेषताओं का एक नमूना अथवा मॉडल प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि प्रस्तावित परिसर की एक खास विशेषता है।

तदनुरूप 17 फरवरी 2015 दो बिड प्रणाली के द्वारा खुली निविदा की घोषणा की गई। जिसके अन्तर्गत आउटरीच बिल्डिंग के निर्माण : दो फैकल्टी हाउसिंग युनिट जिसमें आवश्यक अवसंरचना विकास कार्य (सभी सिविल, संरचनात्मक, फिनिशिंग कार्य, सभी वायरिंग, पाइप सर्विस तथा बुनियादी ढांचा सुविधा एवं अन्य कार्य), वर्षा जल संग्रहण तथा परिसर उपयोग के वितरण के लिए जल स्थल एवं झील, तथा आंतरिक सड़क, उद्यानपथ एवं परिदृश्य क्षेत्र तथा कृषि क्षेत्र के विकास कार्य को सम्मिलित किया गया था। इस निविदा की घोषणा की गई, जिसके अन्तर्गत अनुमानित लागत रु. 60.50 करोड़ थी। खुली निविदा के द्वारा केवल एक बिड प्राप्त हुई तथा बिड के मूल्यांकन के पश्चात् यह पाया गया कि बोलीकर्ता द्वारा उद्धत राशि अनुमति सीमा से अधिक है, तथापि उद्धत मूल्य को उपयुक्त स्तर तक लाने के लिए एक मोल–भाव चर्चा आयोजित की गई। लेकिन 30 अप्रैल 2015 को मंत्रालय के संदर्भ (वाइड) डी.ओ. सं. : एस /321/15/2013 में विश्वविद्यालय को इस निविदा को निरस्त करने तथा विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर के निर्माण के पहले चरण के लिए संयुक्त निविदा के प्रयोग करने का सुझाव प्रदान किया। 6 जुलाई 2015 के सुझाव का अनुपालन करते हुए विश्वविद्यालय पहले चरण की संयुक्त निविदा (दो लिफाफा प्रणाली), ई–निविदा के माध्यम से नालंदा विश्वविद्यालय के पूरे परिसर के निर्माण जिसके अन्तर्गत–शैक्षिक तथा प्रशासनिक भवन, संकाय सदस्य, स्टाफ तथा छात्रों के लिए आवासीय भवन, सुविधा भवन, कैम्पस इन, अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र, आवश्यक बुनियादी ढांचे के विकास कार्य समेत सभी संरचनाओं के निर्माण कार्य (सभी सिविल, संरचनात्मक, फिनिशिंग कार्य, सभी वायरिंग, पाइप सर्विस तथा सभी बुनियादी ढाचा सुविधा एवं अन्य कार्य) वर्षा जल संग्रहण तथा परिसर उपयोग के वितरण के लिए जल स्थल एवं झील तथा आंतरिक सड़क, उद्यान पथ एवं परिदृश्य क्षेत्र तथा कृषि क्षेत्र के विकास के लिए रु. 614.00 करोड़ की अनुमानित लागत की निविदा आमंत्रित की गई।

निविदा प्रतिक्रिया में कुल पांच एजेसियों में से केवल तीन एजेंसी निविदा मूल्यांकन हेतु गठित समिति द्वारा आर्थिक बिड को खोलने के लिए तकनीकी रूप से उपयुक्त पाईं गईं।

निविदा खुलने के पश्चात् यह पाया गया कि सबसे निचले बोलीकर्ता के द्वारा प्रचलित नियमों में निर्धारित अनुमानित सीमा से अधिक की राशि उदृत की गई है। इसलिए तकनीकी समिति के सलाह पर विश्वविद्यालय ने सबसे कम बोलीकर्ता के साथ मूल्य को यथोचित स्तर तक लाने के लिए एक मोल–भाव चर्चा आयोजित की। हालाँकि विश्वविद्यालय की भवन एवं कार्य समिति ने मार्च 2016 में अपनी बैठक में पहले चरण के संयुक्त निविदा की निविदा प्रक्रिया को रद्द करने का निर्णय लिया। इसने यह सुनिश्चित किया कि निविदा को दो छोटे–छोटे पैकेज में विभाजित किया जायेगा। प्रबंधन मंडल की सहमति के पश्चात् विश्वविद्यालय ने पहले चरण की संयुक्त निविदा को रद्द किया तथा पहले चरण की संयुक्त निविदा को तीन छोटे–छोटे पैकेजों यथा सड़क पैकेज (निविदा पैकेज 1ए), गैर–आवासीय पैकेज (निविदा पैकेज 1बी) तथा आवासीय पैकेज (निविदा पैकेज–1 सी) में विभाजित कर नई निविदा को आमंत्रित करने की योजना बनाई।

भविष्य में तैयार होने वाला प्रस्तावित परिसर

वित्त एवं निधि

विश्वविद्यालय अपनी दूरदर्शिता एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए यह सुनिश्चित करता है कि संस्थागत निधि का इष्टतम उपयोग किया जाए।

निधि का उपयोग करते समय अधिनियम में उल्लिखित संभी प्रावधानों, संविधियों तथा वित्तीय नियमों पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

नालंदा विश्वविद्यालय पूर्णरूपेण विदेश मंत्रालय (एमईए) से निधिबद्ध है। विश्वविद्यालय समय–समय पर उपयोगिता विवरण को प्रस्तुत करने के आधार पर एमईए से अनुदान प्राप्त करता है।

foÙk o"kZ 2015&16 dk nkjku izkIr fuf/k ,oa mlds mi;ksx lac/kh fooj.k uhps izn'kZr fd;k x;k gSA

विवरण	राशि (रु. लाख में)
प्रारम्भिक शेष	539.68
बढ़ने के पश्चात् वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान राशि	3167.00
बढ़ने, के पश्चात् अंतरिक रसीद	161.38
dqy vkenuh ¼,½	**3868.06**
घटने पर : राजस्व व्यय	1614.39
घटने पर : पूंजीगत व्यय	1769.37
कुल व्यय (बी)	3383.76
tek 'ks"k ¼,&ch½	**484.30**

विश्वविद्यालय ने स्विटजरलैण्ड से राजेन्द्रा तथा उर्सूला फाउंडेशन से विदेशी सहयोग के रूप में रु 6,36,97,850.00 (एक मिलियन यूएसडी के बराबर) की राशि भी प्राप्त की।

उपर्युक्त निधि के अतिरिक्त विश्वविद्यालय ने पूर्व में विदेशी अनुदान/ चंदे प्राप्त किए, सभी विदेशी फंड का सारांश नीचे दिया जा रहा है : (राशि रु लाख में)

विवरण निधि	01.04.2015 को विदेशी अंशदान/दान की शेष राशि	वित्त वर्ष 15–16 के दौरान प्राप्त धन	ब्याज अर्जित/एक्रड	फंड का उपयोग/निधि से व्यय	31.03.2016 को निधि की शेष राशि
चीन से	675.93	-	59.25	-	735.18
थाईलैण्ड से	69.02	-	5.92	0.03	74.91
लाओस से	32.16	-	2.74	-	34.90
इंडोनेशिया से	20.56	-	1.76	3.36	18.96
आस्ट्रेलिया स	586.30	-	51.39	42.32	595.37
डॉ. जोशी से प्राप्त निधि	-	636.98	34.20	30.41	640.77
dqy	**1383.97**	**636.98**	**155.26**	**76.12**	**2100.09**

- इंडोनिया की निधि का उपयोग 2014–16 बैच के छात्रों को निशुल्कता प्रदान करते हुए उनके ट्युशन शुल्क को माफ करने के रूप में किया गया।

- आस्ट्रेलिया निधि का उपयोग पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन विद्यालय में चेयर पोजिशन के फाइनेन्स के लिए किया गया।

- डॉ. जोशी निधि का उपयोग ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय के चेयर पोजिशन के फंड के लिए किया गया।

विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015–2016 के लिए अपना वार्षिक लेखा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा स्वीकृत (भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक–सी एंड एजी द्वारा भी स्वीकृत) लेखा प्रारूप के अनुरूप तैयार कर लिया है। इस लेखे को वित्तीय समिति तथा तत्पश्चात् शासकीय मंडल के समक्ष आवश्यक अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया। लेखे का विधिवत अनुमोदन प्राप्त करने के पश्चात् इसे ऑडिट हेतु सी एंड एजी के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

सी एंड एजी ने 08/11/2016 से 24/11/2016 एवं 05/12/2016 से 07/12/2016 तक सर्टिफिकेशन ऑडिट किया। वे निश्चित समय के भीतर पृथक ऑडिट रिपोर्ट (एसएआर) विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करेंगे। विश्वविद्यालय द्वारा एसएआर की प्राप्ति के पश्चात् इसे वित्तीय समिति एवं शासकीय मंडल के समक्ष उनके अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जायेगा।

तत्पश्चात् इसे विदेश मंत्रालय को संसद के दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रेषित किया जायेगा तथा इसकी एक प्रति विश्वविद्यालय के विजिटर (महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकार) को प्रदान की जायेगी।

नालंदा
युनिवर्सिटी

ukyn fo'ofo|ky; ifjlj
fजला–राजगीर, नालंदा
पिन–803116 बिहार, भारत
टेली. :. 91–6112–255330
फैक्स :. 91–6112–255766

fnYyh fLFkr dk;kZy;
nूसरा तल, सामाजिक विकास परिषद
53, लोधी स्टेट, नई दिल्ली–110003
टेली. :. 91–11–24622330
फैक्स :. 91–11–24618351

वcलkbV % www.nalandauniv.edu.in